श्रेयसी

तृतीयो भागः
अष्टमवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

सम्पादक
कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण ISBN 81-7450-262-9

जनवरी 2004 माघ 1925

PD 250T ML

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस	सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	निकट: धनकल बस स्टॉप, पनिहटी	मालीगांव
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	कोलकाता 700 114	गुवाहाटी 781 021

प्रकाशन सहयोग

संपादन : एम. लाल

उत्पादन : विकास ब. मेश्राम

आवरण

बालकृष्ण

रु. 25.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा हिंदुस्तान ऑफसेट प्रिंटर्स, 6959/15, बाबरपुर रोड, शिवाजी पार्क, मोहन मार्केट, शाहदरा, दिल्ली - 110 032 द्वारा मुद्रित।

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिणपरिषदः सामाजिक-विज्ञान-मानविकी-शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे अष्टमवर्गीयच्छात्राणां कृते रोचकशैल्या भाषातत्त्वमयान् नैतिकमूल्ययुक्तान् च पाठान् समायोज्य भूमिका-टिप्पणी-प्रश्नाभ्यास-योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते **श्रेयसी** (तृतीयो भागः) नाम पाठ्यपुस्तकम्। अत्र छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽस्माकं लक्ष्यम्। छात्राः संस्कृते निहितं जीवनोपयोगिज्ञानं संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयुः, तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेत्, एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

नई दिल्ली
सितंबर 2003

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

आमुख

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आधारशिला है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान का मूल स्रोत होने के कारण यह भारतवर्ष का गौरव एवं प्राण है। प्राचीन भारत के मनीषियों के ज्ञान एवं अनुभव वेद, उपनिषद्, पुराण तथा अन्यान्य कृतियों के माध्यम से संस्कृत में ही सुरक्षित हैं। संस्कृत की महत्ता इसी बात से सिद्ध होती है कि यह प्राचीन काल से ही अनेक भाषाओं के साहित्य को निर्बाध रूप से समृद्ध करती आ रही है। भारतीय संस्कृति की अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृतज्ञान की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था की गयी है।

विद्यालयस्तर पर संस्कृत-शिक्षण को रुचिकर रूप में **सुज्ञापनात्मक उपागम** (Communicative Approach) के आधार पर प्रस्तुत करने के लिए स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के प्रणयन की योजना के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर नवीन पुस्तक शृङ्खला **श्रेयसी** का निर्माण किया गया है। यह शृङ्खला अपने नाम के अनुसार कल्याणपरक तत्त्वों से युक्त है। ये पुस्तकें छात्र-छात्राओं को संस्कृत भाषा के भाषिक तत्त्वों के प्रयोग में अपेक्षित कुशलता प्रदान करने के साथ ही साथ उनमें संस्कृत साहित्य के प्रति अपेक्षित अभिवृत्ति भी पैदा करेंगी- ऐसा विश्वास है।

श्रेयसी तृतीयो भागः इस शृङ्खला का अन्तिम भाग है। यह पुस्तक अत्यन्त रोचक शैली में लिखी गई है। इसमें नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण पद्यों का यथास्थान संयोजन है। छात्रों में स्वस्थ अभिवृत्ति उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त अन्तराल में ज्ञानवर्धक तथा मनोहारी कथाओं का समायोजन किया गया है। गद्य, पद्य, नाटक, कथा, संवाद एवं निबन्ध के रूप में पाठों को सरल से कठिन के क्रम में समायोजित

करते हुए इस पुस्तक में कुल 20 पाठ रखे गए हैं। छात्रों को सुविधा के लिए पाठ में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ पाठ के साथ ही दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ के साथ योग्यता-विस्तार शीर्षक के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गई है जो छात्रों की पाठगत विशिष्ट जिज्ञासाओं का समाधान देने के साथ ही साथ उन्हें ऐसा झरोखा उपलब्ध कराती है जहाँ से वे संस्कृत-वाङ्मय की ओर प्रसन्नतापूर्वक उन्मुख हो सकते हैं। छात्र अधिक से अधिक संस्कृत भाषा में व्यवहार कर सकें एतदर्थ मौखिक तथा लिखित दोनो प्रकार के प्रश्नाभ्यासों से युक्त अभ्यासचारिका दी गई है। चित्राभ्यास इस पुस्तक की अनोखी विशेषता है।

इस पुस्तक द्वारा छात्रों को संस्कृत की शिक्षा संस्कृत माध्यम से देने का प्रयत्न किया गया है। इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक--छात्र अन्तःक्रिया संस्कृतमाध्यम से हो फिर भी पाठ--परिचय तथा कठिन शब्दों के अर्थ हिन्दी में देकर संस्कृत शिक्षण को सुगम एवं व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है--

- प्रश्नोत्तर माध्यम से प्रश्नों के उत्तर देना तथा प्रदत्त कथनों के आधार पर प्रश्न निर्माण करना।
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना) के प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता विकसित करना।
- रोचक कथाओं को पढ़कर उन्हें घटनाक्रमेण संयोजित करना।
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित ज्ञानवर्धक अभ्यासचारिका।
- चित्रों द्वारा पाठ्यांश को प्रभावी बनाना।

अध्यापकों से निवेदन

यह निर्विवादित सत्य है कि पाठ्यक्रम तथा पुस्तक के अत्यन्त उपयोगी होने पर भी शिक्षक की महती भूमिका होती है क्योंकि अध्यापन की सफलता के लिए एक ओर जहाँ उत्तम पुस्तकों की आवश्यकता होती है वहीं पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरणिक

बिन्दुओं तथा भाषिक तत्वों के अभ्यास हेतु उत्कृष्ट अध्यापन शैली की अपेक्षा होती है जो एकमात्र अध्यापक के पास ही होती है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि–

- आठवीं कक्षा के स्तर पर अपेक्षित संस्कृत शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर श्रेयसी तृतीयो भागः का अध्यापन करें।
- छात्रों को यथासंभव संस्कृतमाध्यम से पढ़ाने का प्रयास करें तथापि छात्रों की सुगमता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रत्यक्ष, व्याकरण तथा अनुवादादि विधियों की समन्वित विधि का प्रयोग करें तथा छात्रों के संस्कृत अध्ययन को प्रयत्नपूर्वक रोचक बनाएँ।
- छात्रों से सद्व्यवहार एवं नीति से सम्बंधित सुभाषित-संग्रह (प्रोजेक्ट माध्यम से) अवश्य कराएँ।
- संस्कृत भाषा का ऐसा अभ्यास कराएँ जिससे छात्र चित्र देखकर वाक्य अथवा वाक्यों की रचना कर सकें।
- छात्रों को व्याकरण के अपेक्षित नियम अवश्य समझाएँ।
- नाट्यांश को भावाभिव्यक्ति के सहित पढ़ें तथा पढ़वाएँ।
- कथा-परक एवं निबन्धात्मक पाठों का सारांश बताकर छात्रों से लिखित एवं मौखिक अभ्यास कराएँ।
- संस्कृत अध्ययन के अनुरूप वातावरण निर्मित करने के लिए संस्कृत में प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग कर सकते हैं।
- प्रत्येक बच्चे को संस्कृत में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- लेखन की शुद्धता के लिए श्रुतलेख एवं अनुलेख इसी प्रकार भाषण की शुद्धता के लिए अनुपठन एवं छात्र-समूहों के मध्य विविध शैक्षिक एवं क्रीडापरक क्रिया-कलाप कराएँ।

अध्यापकों से आशा की जाती है कि वे इस पुस्तक के माध्यम से छात्रों में भाषा के अपेक्षित कौशल को विकसित कर संस्कृत की सेवा में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे।

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

योगेश्वर दत्त शर्मा
पूर्व प्रोफेसर, संस्कृत,
72 एफ, कमला नगर दिल्ली

राजेश्वर मिश्र
रीडर, संस्कृत विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

सन्तोष कोहली
उपप्रधानाचार्या, (अवकाश प्राप्त)
सर्वोदय विद्यालय कैलाश एन्क्लेव
रोहिणी, दिल्ली

सुरेशचन्द्र शर्मा
प्रधानाचार्य
रा.व.मा. बाल विद्यालय, नरेला
दिल्ली

सुगन्ध पांडेय
टी.जी.टी., संस्कृत
केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर
जिला-उधमसिंह नगर (उत्तरांचल)

पुरुषोत्तम मिश्र
टी.जी.टी., संस्कृत
राजकीय उच्चतर माध्यमिक
बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी दिल्ली

लता अरोरा
टी.जी.टी., संस्कृत
केंद्रीय विद्यालय, वायुसेना केन्द्र
अर्जनगढ़, नई दिल्ली

आभा झा
टी.जी.टी., संस्कृत
सर्वोदय, उ. मा. विद्यालय·
जे-ब्लाक, साकेत, नई दिल्ली

निर्मल मिश्र
टी.जी.टी., संस्कृत,
केंद्रीय विद्यालय, न्यू कैंट
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

रेखा झा
टी.जी.टी., संस्कृत,
दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल
सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

राजेन्द्र पांडेय
एक्जीक्यूटिव ऑफिसर
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय शिक्षा संस्थान
कैलाश कॉलोनी
नई दिल्ली

उर्मिल खुंगर
सिलेक्शन ग्रेड प्रवक्ता, (अवकास प्राप्त)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

कमलाकान्त मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत

राम प्रकाश शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

विषय सूची

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

वन्दना



वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे, पार्वतीपरमेश्वरौ॥

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय॥

शब्द और अर्थ के समुचित ज्ञान के लिए शब्द और अर्थ की भाँति जुड़े हुए संसार के माता-पिता स्वरूप पार्वती और शिव की मैं वन्दना करता हूँ।

हे ईश्वर! मुझे कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाएँ। अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाएँ। मृत्यु से अमरता की ओर ले जाएँ।

प्रथमः पाठः

सुविचार्य विधातव्यम्

[प्रस्तुत पाठ सोमदेव कृत 'कथासरित्सागर' में संकेतित एवं 'चतुर्व्यूहम्' में प्राप्त 'गोदोहनम्' नामक नाटक के आधार पर विकसित किया गया है। इसमें गोपालक माधव की कथा का वर्णन है जो मासान्त होने वाले यज्ञ के लिए 50 किलो दूध प्राप्त करने की लालसा में अपनी गाय से दूध निकालना बन्द कर देता है। इस तरह मासान्त में जब वह गाय से दूध निकालने का प्रयत्न करता है तब उसे दूध की एक भी बूँद नहीं मिलती बल्कि गाय के चरण-प्रहारों से वह रक्तरंजित हो जाता है।]

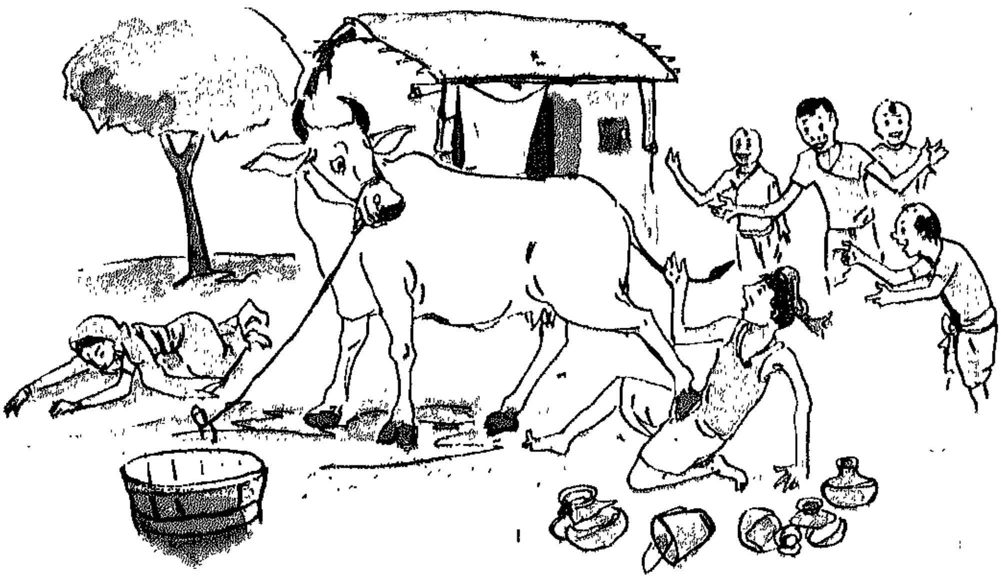
पुरा, सपदि, एकदा, सर्वदा

आसीत् पुरा माधवो नाम कश्चित् गोपालकः। तस्य गृहे नन्दिनी नामैका गौः आसीत्। तस्याः दुग्धं विक्रीय सः सुखेन जीवनं यापयति स्म। एकदा तस्य भागिनेयः तत्रागत्य सूचितवान् – मातुल! "प्रतिवेशिनः श्रेष्ठिनः गृहे मासानन्तरम् एकः यज्ञः संपत्स्यते। तस्मिन् उत्सवे पञ्चाशत् किलोमितस्य क्षीरस्य आवश्यकता भविष्यति।" इदमाकर्ण्य माधवः अचिन्तयत् – "पञ्चाशत्किलोमितं पयः; अस्तु दास्यामि। एतावन्मात्रं पयः विक्रीय बहुधनं प्राप्स्ये, येन एकस्य भवनस्य निर्माणं करिष्यामि।

अथ प्रसन्नः माधवः स्वधेनुम् अहर्निशं सेवते। सः तस्याः रज्जुं धृत्वा तस्यै तृप्तिपर्यन्तं प्रभूतं घासादिकं ददाति, जलं पाययति, विषाणयोः तैलं करोति। प्रातः सायं च तां तिलकं करोति। यदा-कदा गुडादिकमपि भोजयति। स सर्वदा चिन्तयामास **"एकवारं ग्रहीष्यामि पयोऽस्या प्राज्यमुत्सवे।"**

इत्थं सेवानिरतस्य तस्य एकः मासः व्यतीतः। अस्मिन्नन्तरे तस्य भार्या मालती पितृगृहात् प्रत्यावर्तत। माधवः ताम् तत्सर्वं विस्तरेण अकथयत्। तौ सत्वरं कुम्भकारस्य गृहात् घटदशकं

क्रीतवन्तौ। तदैव प्रतिवेशी दुग्धाय तम् आकारयत्। माधवस्तु सपदि पञ्चोपचारैः गाम् अपूजयत्। पात्रहस्तः दोहनाय गोः समीपम् अगच्छत्। मासैकपर्यन्तं दुग्धस्य अदोहनात् दुग्धहीना सा माधवहस्ते पात्रं दृष्ट्वैव अकूर्दत्। माधवः पौनः पुन्येन प्रार्थयति-"नन्दिनि! कथं मां व्याकुलयसि? पञ्चाशत् किलोमितं क्षीरं सत्वरं यच्छ"।



पौनःपुन्येन दोग्धुं प्रयतमानं सा माधवं पृष्ठपादाभ्यां ताडयित्वा रक्तरञ्जितमकरोत्। तं तादृशावस्थायां वीक्ष्य मालती मूर्च्छिता जाता। बहुभिः उपचारैः तस्याः मूर्च्छाम् दूरीकृत्य माधवः ताम् अकथयत् मासान्तेऽहं धनी भविष्यामि इति चिन्तयित्वैव मासपर्यन्तं मया धेनुरेव न दुग्धा। अस्मात् कारणादियं दुग्धहीनाऽभवत्। देवि! भविष्यचिन्तायां तु मया स्वकीयं वर्तमानमपि विनाशितम्। एभिः रक्तविन्दुभिः मम चक्षुरुन्मीलितं यत् लघ्वपि कार्यं अविचार्य न कर्तव्यम्। उक्तं हि-

सुविचार्य विधातव्यं कार्यं कल्याणकांक्षिणा।
यः करोत्यविचार्यैतत् स विषीदति मानवः।।

शब्दार्थाः

गोपालकः	ग्वाला
विक्रीय	बेचकर
भागिनेयः	भानजा (बहन का पुत्र)
आगत्य	आकर
मातुलः	मामा
प्रतिवेशिनः	पड़ोसी के
संपत्स्यते	सम्पन्न होगा
पंचाशत किलोमितस्य	पचास किलो का
क्षीरस्य	दूध का/के
आकर्ण्य	सुनकर
पयः	दूध को
रज्जुं	रस्सी को
धृत्वा	पकड़कर
घासादिकम्	घास आदि को
पाययति	पिलाता है
अहर्निशम्	रात-दिन
विषाणयोः	दोनों सींगों में
गुणादिकम	गुड़ आदि
प्राज्यम	प्रचुर मात्रा में
दुदोह	दुहा
प्रत्यावर्तत	लौटा/लौटी
घटदशकम	दस घड़े
आकारयत	बुलाया
सपदि	तुरंत
पचोपचारैः	पूजा की पाँच सामग्री (गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य)
पात्रहस्तः	बर्तन हाथ में लिए
सत्वरम्	जल्दी
यच्छ	दो
वीक्ष्य	देखकर

उपगता - प्राप्त किया
कल्याणकांक्षिणा - कल्याण का इच्छुक
विषीदति - दुःखी होता है।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत-**
   (क) प्रतिवेशिनः गृहे किं सम्पत्स्यते?
   (ख) माधवस्य भार्यायाः किम् नाम?
   (ग) माधवः काम् न दुदोह?
   (घ) तौ कस्य गृहात् घटदशकं क्रीतवन्तौ?
   (ङ) माधवः गां कैः पूजयति?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत --**
   (क) भागिनेयः माधवं किम् सूचितवान्?
   (ख) माधवः स्वधेनोः रज्जुं धृत्वा किम् अकरोत्?
   (ग) माधवः भार्यायाः मूर्च्छां कथं दूरीकृतवान्?
   (घ) प्रस्तुतकथया का शिक्षा लभ्यते?
3. **अधोलिखितानि वाक्यानि अनुसृत्य कोष्ठके निर्दिष्टानि पदानि प्रयुज्य एकम् अन्यं वाक्यं रचयत --**
   (क) आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा।
   .... (पुरा)
   (ख) फलानि विक्रीय धनं प्राप्स्ये।
   .... (विक्रीय)
   (ग) पञ्चोपचारैः गाम् अपूजयत्।
   .... (पञ्चोपचारैः)
   (घ) सा पितृगृहात् प्रत्यावर्तत।
   .... (पितृगृहात्)

(ङ) सः सर्वदा चिन्तयति स्म
.... (सर्वदा)

(च) तस्मिन् उत्सवे क्षीरस्य आवश्यकता भविष्यति
.... (तस्मिन्)

(छ) माधवः धेनुम् अहर्निशं सेवते
.... (अहर्निशम्)

4. **सन्धिम्/विच्छेदं वा कुरुत –**

यथा –	विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः
(क)	....	+	....	=	मासानन्तरम्
(ख)	गुड	+	आदिकम्	=	गुडादिकम्
(ग)	....	+	....	=	तादृशावस्थायाम्

5. **अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण योजयत-**

(क) रक्तबिन्दुभिः माधवस्य चक्षुः उन्मीलितम्।
(ख) माधवः धेनुम् अहर्निशं सेवते।
(ग) धेनुस्तु मासैकपर्यन्तं दुग्धस्य अदोहनात् दुग्धहीनासीत्।
(घ) गोपालकदम्पती कुम्भकारस्य गृहात् घटदशकं क्रीतवन्तौ।
(ङ) मालती स्वपतिं तादृशावस्थायां वीक्ष्य मूर्च्छिता जाता।
(च) माधवस्तु सपदि पंचोपचारैः गां पूजयति।
(छ) धेनुः पृष्ठपादाभ्यां ताडयित्वा माधवं रक्तरञ्जितम् अकरोत्।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

जो कार्य समय पर हो जाता है वही कार्य फलदायक होता है। आज के करणीय कार्य को करने के बदले भविष्य में एक साथ करने पर अधिकाधिक फल मिलेगा ऐसा सोचने वाला मनुष्य अद्यतनीय मिलने वाले फल को खोकर भविष्य में मिलने वाले फल से भी वञ्चित रहता है। यथा –

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि॥
कालेन बिन्दुमात्रेण जलदानेन यत्सुखम्।
न तथा सिन्धुदानेन गतेकालेऽस्ति संभवम्॥

भाषा-विस्तार

संस्कृत में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रूप सभी लिङ्गों, सभी वचनों एवं सभी विभक्तियों में समान होते हैं। उन्हें अव्यय कहते हैं –

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अर्थात् अव्यय शब्दों के रूप कभी परिवर्तित नहीं होते हैं। यथा –

सहसा = अचानक 1. सहसा तत्र सैनिकाः आगताः।

2. सहसा वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

3. सहसा कक्षायाम् सर्वाः बालिकाः आगच्छन्ति।

यहाँ 'सैनिकाः' पुल्लिङ्ग, 'पत्राणि' नपुंसकलिङ्ग, 'बालिकाः' स्त्रीलिङ्ग है परन्तु 'सहसा' का प्रयोग सबके साथ एक जैसा ही हुआ है।

कुछ प्रमुख अव्यय –

पुरा -	(प्राचीन काल में) -	आसीत् पुरा दिलीपो नाम राजा।
नूनम् -	(निश्चय ही) -	हरिः नूनं तव कार्यं करिष्यति।
अद्य -	(आज) -	अद्य अहं विद्यालयं न गमिष्यामि।
ह्यः -	(बीता हुआ कल) -	ह्यः सुरेशः ग्रामाद् आगतः।
श्वः -	(आने वाला कल) -	अहं श्वः नगरं गमिष्यामि।

द्वितीयः पाठः

शिष्टाचारः

[प्रस्तुत पाठ 'मनुस्मृति' के कतिपय श्लोकों का संकलन है जो सदाचार की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यहाँ माता-पिता तथा गुरुजनों को आदर और सेवा से प्रसन्न करने वाले अभिवादनशील मनुष्य को मिलने वाले लाभ की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में समान रहना, अन्तरात्मा को आनन्दित करने वाले कार्य करना तथा इसके विपरीत कार्यों को त्यागना, सम्यक् विचारोपरान्त तथा सत्यमार्ग का अनुसरण करते हुए कार्य करना आदि शिष्टाचारों का उल्लेख भी किया गया है।]

विधिलिङ्

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ॥1॥

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥2॥

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते ॥3॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥4॥

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत् ॥5॥

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत् ॥6॥

शब्दार्थाः

शिष्टाचारः	-	शिष्ट+आचारः - सभ्यजनों का आचरण
अभिवादनशीलस्य	-	प्रणाम करने के स्वभाव वाले के
वृद्धोपसेविनः	-	वृद्ध+उपसेविनः - बड़ों की सेवा करने वाले के
क्लेशम्	-	कष्ट
निष्कृतिः	-	निस्तार
कुर्वतः	-	करते हुए का
परितोषः	-	सन्तोष
अन्तरात्मनः	-	अन्तरात्मा की (हृदय की)
कुर्वीत	-	करना चाहिए
न्यसेत्	-	रखना चाहिए, रखे
पूतम्	-	पवित्र
नृणाम्	-	मनुष्यों का
वर्षशतैः	-	सौ वर्षों में
समाप्यते	-	समाप्त होता है
समासेन	-	संक्षेप में
विद्यात्	-	जानना चाहिए
सत्यपूताम्	-	सत्य से पवित्र (सच)

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) नृणां संभवे कौ क्लेशं सहेते?
   (ख) कीदृशं जलं पिबेत्?
   (ग) शिष्टाचारः पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
   (घ) कीदृशीं वाचं वदेत्?

लिखित:

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) पाठेऽस्मिन् सुखदुःखयो किं लक्षणम् उक्तम्?
   (ख) वर्षशतैः अपि कस्य निष्कृतिः कर्तुं न शक्या?
   (ग) "त्रिषु तुष्टेषु तपः समाप्यते" – वाक्येऽस्मिन् त्रयः के सन्ति?
   (घ) अस्माभिः कीदृशं कर्म कुर्यात्?

3. **स्थूलपदान्यवलम्ब्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) **वृद्धोपसेविनः** आयुर्विद्यायशोबलं च वर्धन्ते।
   (ख) सर्वदा **आचार्यस्य** प्रियं कुर्यात्।
   (ग) त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते।
   (घ) **मातापितरौ** क्लेशं सहेते।

4. **संस्कृतभाषायां वाक्यप्रयोगं कुरुत –**
   (क) विद्या (ख) तपः (ग) समाचरेत् (घ) परितोषः (ङ) नित्यम्

5. **पाठात् चित्वा तं श्लोकं लिखत यस्मिन् मातापित्रोः प्रति कृतज्ञता प्रकटिताऽस्ति।**

6. **मञ्जूषातः चित्वा उचिताव्ययेन वाक्यपूर्तिं कुरुत –**

   | अपि, एव, नित्यं, यादृशं |

   (क) तयोः .... प्रियं कुर्यात्।
   (ख) .... कर्म करिष्यसि। तादृशं फलं प्राप्स्यसि।
   (ग) वर्षशतैः .... निष्कृतिः न कर्तुं शक्या।
   (घ) तेषु .... त्रिषु तुष्टेषु तपः समाप्यते।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

संस्कृत साहित्य में जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी कर्तव्य-निर्देश दिए गए हैं जो यत्र-तत्र सुभाषितों और नीतिश्लोकों के रूप में प्राप्त होते हैं। जरूरत है उन्हें ढूँढने वाले मनुष्य की। जीवनमार्ग पर चलते हुए जब किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति आती है तो संस्कृत सूक्तियाँ हमें मार्गबोध कराती हैं। नीतिशतक, विदुरनीति, चाणक्यनीतिदर्पण आदि ग्रन्थ ऐसे ही श्लोकों के अमर भण्डागार हैं।

1. कुछ समानान्तर श्लोकः

कर्मणा मनसा वाचा चक्षुषाऽपि चतुर्विधम्।
प्रसादयति लोकं यस्तं लोको नु प्रसीदति॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥

यस्मिन् देशे न सम्मानो न प्रीतिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमः कश्चित् न तत्र दिवसं वसेत्॥

2. संधि की आवृत्ति

शिष्टाचारः	=	शिष्ट	+	आचारः
वृद्धोपसेविनः	=	वृद्धः	+	उपसेविनः
आयुर्विद्या	=	आयुः	+	विद्या
यशोबलम्	=	यशः	+	बलम्
वर्षशतैरपि	=	वर्षशतैः	+	अपि
तयोर्नित्यं	=	तयोः	+	नित्यम्
कुर्यादाचार्यस्य	=	कुर्यात्	+	आचार्यस्य
तेष्वेव	=	तेषु	+	एव
सर्वमात्मवशम्	=	सर्वम्	+	आत्मवशम्
कुर्वतोऽस्य	=	कुर्वतः	+	अस्य
परितोषोऽन्तरात्मनः	=	परितोषः	+	अन्तरात्मनः
वदेद्वाचम्	=	वदेत्	+	वाचम्

3. **विधिलिङ्ग के विविध प्रयोग** - [किसी भी काम को] करना चाहिए, इस अर्थ में विधिलिङ्ग का प्रयोग होता है। पाठ में आए कुछ शब्दों के प्रयोग अधो लिखित हैं –

स्यात् – (अस् धातु)
पिबेत् – (पा धातु)
वर्जयेत् – (वर्ज् धातु)
वदेत् – (वद् धातु)

समाचरेत् - (सम्+आ उपसर्ग+चर् धातु)
न्यसेत् - नि उपसर्ग+अस् धातु
विद्यात् - विद् धातु
कुर्वीत - कृ धातु (आत्मनेपद)
कुर्यात् - कृ धातु (परस्मैपद)

4. पूतम् - षष्ठ श्लोक में पूतम् अनेक अर्थों में प्रयुक्त है। वैसे पूतम् का अर्थ : पवित्र।

दृष्टिपूतम् - अच्छी तरह देखभाल कर।
वस्त्रपूतम् - वस्त्र से छना हुआ।
सत्यपूतम् - सत्ययुक्त।
मन:पूतम् - मन से पवित्र अर्थात् जिस काम को मन सही कहे, अन्तरात्मा की आवाज।

तृतीयः पाठः

नापेक्षते वयः विद्या

[प्रस्तुत पाठ्यांश विद्या के महत्त्व को ध्यान में रखकर विकसित किया गया संवादपरक पाठ है। मनुष्य को जीवन भर विद्याग्रहण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। उम्र के जिस किसी मोड़ पर अवसर मिले, विद्याध्ययन अवश्य करना चाहिए। हमारे देश में निरक्षरता की महती समस्या है। अतः छात्र-छात्राओं का कर्तव्य बनता है कि वे अपने समय का सदुपयोग आस-पास के निरक्षरों को साक्षर बनाने में करें, जिससे निरक्षरता के अभिशाप को दूर किया जा सके।]

संख्यावाचिशब्दाः, विशेषण-विशेष्यशब्दाः

[ऋचा मेधा च द्वे सख्यौ स्तः। एकदा ऋचा मेधायाः गृहम् आगच्छत्। कुत्रचित् गन्तुं सज्जां मेधां दृष्ट्वा ऋचा पृच्छति।]

ऋचा : सखि! अद्य रविवासरे कुत्र गन्तुम् उद्यता असि?



मेधा : प्रतिरविवासरम् अहं होराद्वयम् अशिक्षिताः अशिक्षितान् च पुरुषान स्त्रियः पाठयामि।

ऋचा : किम् अनेन?

मेधा : सखि, त्वं जानासि एव यत् विद्याहीनः जनः चक्षुष्मान् सन्नपि अन्ध इव श्रोत्रवानपि बधिरः इव श्वसन्नपि मृत इव भवति। अस्माभिः तथा प्रयतितव्यम् यथा ते यथार्थं जीवेयुः।

ऋचा : एतत् तु शोभनं कार्यम्। तत्र त्वं किं किं पाठयसि?

मेधा : साक्षरतायाः लाभान् उक्त्वा अक्षरज्ञानं प्रति तासां रुचेः वर्धनार्थं प्रयासः क्रियते। ततः चित्राणि दर्शयित्वा अक्षरज्ञानं कार्यते।

ऋचा : व्यतीते वयसि विद्यां पठित्वा ताः किं करिष्यन्ति?

मेधा : ताः वृत्तिं प्राप्स्यन्ति, अन्यायस्य प्रतिकारं कर्तुं शक्ष्यन्ति, अपि च स्वशिशूनां शिक्षाक्षेत्रेऽपि सचेष्टाः भविष्यन्ति।

उक्तमपि –

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
यद्यपि स्यान्नफलदा सुलभा साऽन्यकर्मणि॥

ऋचा : शोभनम्। त्वम् यस्यां वसत्यां पाठयसि, तत्र कति स्त्रियः शिक्षार्थं आगच्छन्ति?

मेधा : तस्मिन् ग्रामे नवतिः स्त्रियः सन्ति, तासु पञ्चाशीति संख्यकाः स्त्रियः पठनार्थम् आगच्छन्ति। शेषाः तु वार्धक्येन आगन्तुम् असमर्थाः।

ऋचा : किं त्वमेकाकी एव ताः पाठयसि?

मेधा : नहि ऋचे! वयं चतस्रः छात्राः चतुर्षु समूहेषु ताः पाठयामः। समये-समये अस्माकं सञ्चालिकाऽपि आगत्य निरीक्षणं करोति।

ऋचा : तव कार्यम् अतीव शोभनम्, अधुना अहमपि अनुभवामि यत् वयं यत् कालं व्यर्थमेव यापयामः, तस्य सदुपयोगः अशिक्षितानां शिक्षणे कर्तव्यः।

मेधा : अथ किम्? यदि वयं सर्वाः छात्राः मिलित्वा एतत् करिष्यामः तर्हि अस्यां वसत्याम् न काऽपि नारी निरक्षरा स्थास्यति। एवमेव बालकाः अपि यदि ग्रामवासिनः शिक्षयेयुः तर्हि एकोऽपि जनः निरक्षरः न भविष्यति। एवं क्रमेण अचिरादेव अस्माकं देशे सर्वे जनाः साक्षराः भविष्यन्ति।

ऋचा : अवश्यम्। अहं अपि त्वया सह अस्मिन् कर्मणि आत्मानं योजयितुम् इच्छामि।

मेधा : तर्हि कथं बिलम्बः? शुभस्य शीघ्रम्। आगच्छ! चलावः। उभे गच्छतः।

[गायन्त्यौ गच्छतः-]

नापेक्षते वयःविद्या काननं भवनं तथा।
न ज्ञातिं नैव शक्तिञ्च स्वरूपं द्रविणं पुनः॥

शब्दार्थाः

उद्यता	–	तैयार
दृष्ट्वा	–	देखकर
होराद्वयम्	–	दो घण्टे तक
चक्षुष्मान्	–	नेत्रयुक्त
सन्नपि	–	होते हुए भी
श्रोत्रवानपि	–	कान के होने पर भी
श्वसन्नपि	–	सांस लेते हुए भी
दर्शयित्वा	–	दिखा कर
कार्यते	–	करवाया जाता है
प्रतिकारम्	–	बदला
वयः	–	उम्र
फलदा	–	फल देने वाली
वसत्याम्	–	बस्ती में
वार्धक्येन	–	वृद्धावस्था के कारण
उभे	–	दोनों
अपेक्षते	–	अपेक्षा करती है
योजयितुम् इच्छामि	–	जोड़ना चाहती हूँ

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) कः चक्षुष्मान् सन्नपि अन्धः?
   (ख) गतेऽपि वयसि कैः विद्या ग्राह्या?
   (ग) ग्रामे कति स्त्रियः आसन्?
   (घ) कति छात्राः समूहेषु स्त्रियः पाठयन्ति स्म?
   (ङ) विद्या किं न अपेक्षते?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) मेधा प्रति रविवासरं किं करोति स्म?
   (ख) व्यतीते वयसि विद्यां प्राप्य स्त्रियः किं किं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति?
   (ग) यत् कालं वयं व्यर्थमेव यापयामः तस्य सदुपयोगः कथं कर्तव्यः?
   (घ) सर्वेऽपि ग्रामवासिनः कथं शिक्षिताः भवेयुः?
3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) साक्षराः महिलाः **स्वशिशूनां** शिक्षाक्षेत्रे सचेष्टाः भविष्यन्ति।
   (ख) एकदा ऋचा **मेधायाः गृहम्** आगच्छत्।
   (ग) चित्राणि दर्शयित्वा **अक्षरज्ञानं** कार्यते।
   (घ) सञ्चालिका **समये-समये** आगत्य निरीक्षणं करोति।
   (ङ) गतेऽपि वयसि **विद्या** ग्राह्या।
4. **(अ) पाठात् चित्वा अधोलिखितपदानां समानार्थकपदानि लिखत –**

यथा – नेत्रवान् → चक्षुष्मान्
   (क) प्रयत्नं करणीयम् → ....
   (ख) लप्स्यन्ते → ....
   (ग) चेष्टायुक्ताः → ....
   (घ) महिलाः → ....
   (ङ) समाप्तं कृत्वा → ....
   (च) क्षिप्रम् → ....

(ब) अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि [पाठात् चित्वा] लिखत –

यथा – शिक्षिताः → अशिक्षिताः

(क) निरक्षरता → ....

(ख) न्यायस्य → ....

(ग) दुर्लभा → ....

(घ) दुरुपयोगः → ....

(ङ) गत्वा → ....

(च) अशोभनम् → ....

5. **विशेषणैः सह विशेष्याणि योजयत –**

सज्जाम्	वयसि
विद्याहीनः	कार्यम्
गतेऽपि	मेधाम्
शोभनम्	जनः

6. **संख्यावाचिशब्दैः रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत –**

(क) तस्मिन् ग्रामे .... स्त्रियः सन्ति।

(ख) संप्रतिः दश च .... भवति।

(ग) वयं .... छात्राः चतुर्षु समूहेषु ताः पाठयामः

(घ) षड्गुणं पञ्च .... भवति।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

हमारे देश में निरक्षरता एक महती समस्या है। इससे निबटने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। अनेकानेक योजनाओं का कार्यान्वयन भी किया जा रहा है। यदि तथापि पूर्ण लाभ नहीं हो रहा है। देश का जन-जन इस क्षेत्र में जागरूक हो जाए, छोटे-छोटे बच्चे भी आसपास के लोगों को साक्षर बनाने के लिए प्रयत्नशील हो जाएँ तो कोई संदेह नहीं कि देश से अशिक्षा रूपी अभिशाप को दूर न किया जा सके।

(1)

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परं दैवतम्।
विद्या राजसु पूज्यते, नहि धनं, विद्याविहीनः पशुः॥

(2)

अनेकसंशयच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।

(3)

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते।
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

(4)

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा।।

भाषा-विस्तार

पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गों में एक से चार तक संख्यावाची शब्दों के रूप अलग-अलग होते हैं।

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

पञ्च से लेकर आगे सभी संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं; जैसे-पञ्च, षट्, सप्त आदि।

चतुर्थः पाठः

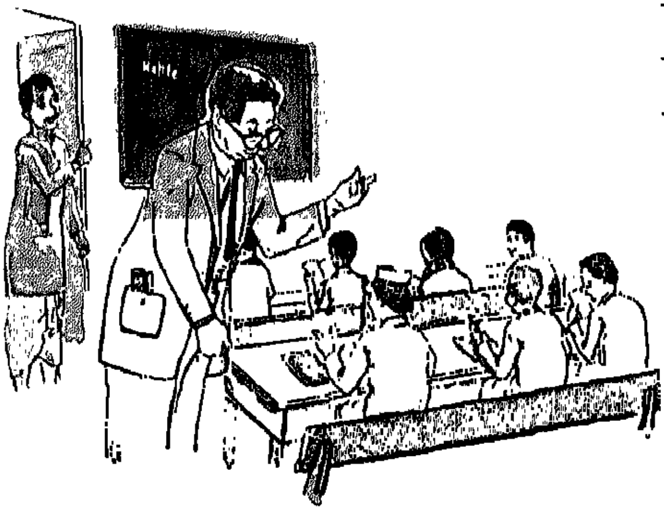
गान्धिनः सत्यनिष्ठा

[प्रस्तुत पाठ महात्मा गाँधी के विद्यार्थी जीवन की मर्मस्पर्शी घटना का संस्कृत रूपांतर है जिसमें उनकी सत्यनिष्ठा को व्यञ्जित किया गया है। यह अंश सत्यनिष्ठा की प्रेरणा प्राप्त करने तथा दैनिक जीवन में प्रयोग कर चारित्रिक विकास करने में अत्यन्त उपयोगी है।]

(तुमुन्, तसिल्)

एकदा मोहनदासः मित्रैः सह एकं नाटकं द्रष्टुमगच्छत्। तस्मिन् राज्ञः हरिश्चन्द्रस्य कर्मनिष्ठा गहनतमा सत्यभक्तिश्च प्रदर्शिते आस्ताम्। असौ निजपत्न्याः अपि श्मशानकरं गृहीत्वा सत्यमपालयत्। नाटकं दृष्ट्वा मोहनदासस्य चेतसि महत् परिवर्तनं सञ्जातम्। असौ चिरम् अरोदीत, मनसि सङ्कल्पञ्च अकरोत् यत् सत्यरक्षायां स हरिश्चन्द्र इव आचरिष्यति।

एकदा गाइल्सनामा विद्यालयनिरीक्षकः विद्यालयमागतः। तत्र एकस्यां कक्षायां बालानां वर्णविन्यासज्ञानं परीक्षितुमारभत। मोहनदासं विहाय सर्वे बालाः शुद्धं वर्णविन्यासम् अकुर्वन्।



सः केट्ल (Kettle) इत्यस्य शब्दस्य वर्णविन्यासं कर्तुं नाशक्नोत्।

आत्मनः संदिग्धां प्रतिष्ठां चिन्तयमानः तस्य शिक्षकः आतङ्कितः अभवत्। सः शिक्षकः निकटस्थश्यामपट्टतः शुद्धां वर्तनीम् अनुकर्तुं सङ्केतेन मोहनदासं प्रेरयत्।

यद्यपि निरीक्षकस्य ध्यानम् अन्यत्र आसीत् तथापि मोहनः सम्मुखमवलोकयन् अपि शिक्षकस्य अनुकरणं नाकरोत्। सहपाठिनाम् उपहासभूमिः भविष्यामि, शिक्षकस्य कोपभाजनताञ्च गमिष्यामि इत्यपि सः नाचिन्तयत्। सः जानाति स्म यत् वञ्चनातः सत्यस्य गोपनं कदापि भवितुं नार्हति।

कक्षाया अनन्तरं मोहनस्य शिक्षकः तस्मै अकुप्यत्, सहपाठिनश्च तस्योपहासम् अकुर्वन्। यदायं गृहं परावर्तत तदात्मानं क्षतम् अवसन्नञ्च अन्वभवत्। परं गभीरे अन्तरात्मनि स्वसङ्कल्पं स्मारं स्मारं नवां द्युतिं नवं सामर्थ्यञ्च अधिगतवान्।

अतएवोक्तम् –

सत्यान्नास्ति परं तपः॥

शब्दार्थाः

कर्मनिष्ठा	–	कार्य के प्रति लगाव
गहनतमा	–	गहरी
प्रदर्शिता	–	दिखाई गई
श्मशानकरम्	–	मरघट का शुल्क
चेतसि	–	हृदय में
आरभत	–	शुरु किया
विहाय	–	छोड़कर
वर्णविन्यासम्	–	अक्षर लेख
आतङ्कितः	–	भयभीत
प्रेरयत्	–	प्रेरित किया
अवलोकयन्	–	देखता हुआ
अनुकरणम्	–	नकल
कोपभाजनताम्	–	गुस्से का पात्र
वञ्चनातः	–	धोखे से
गोपनम्	–	छिपाव

तस्योपहासम्	–	तस्य+उपहासम् = उसका मज़ाक
परावर्तत	–	लौटा
क्षतम्	–	घायल
अवसन्नम्	–	सुन्न, शिथिल
अन्तरात्मनि	–	हृदय की गहराई में
स्मारं स्मारम्	–	बार-बार स्मरण करके
नवाम्	–	नई
द्युतिम्	–	प्रकाश
सामर्थ्यञ्च	–	सामर्थ्यम्+च – और क्षमता
अधिगतवान्	–	प्राप्त किया

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) कः मित्रैः सह नाटकं द्रष्टुमगच्छत्?
   (ख) विद्यालयनिरीक्षकस्य किं नाम आसीत्?
   (ग) मोहनदासः कस्य शब्दस्य उच्चारणं कर्तुं नाशकत्?
   (घ) निरीक्षकस्य ध्यानं कुत्र आसीत्?
   (ङ) कस्मात् परं तपः नास्ति?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) नाटके हरिश्चन्द्रस्य कौ गुणौ प्रदर्शितौ?
   (ख) मोहनदासः नाटकं दृष्ट्वा किं सङ्कल्पम् अकरोत्?
   (ग) शिक्षकः किं चिन्त्यमानः आतङ्कितः अभवत्?
   (घ) शिक्षकः मोहनदासं किं कर्तुं सङ्केतेन प्रेरयत्?
   (ङ) गृहमागत्य मोहनदासः आत्मानं कथम् अन्वभवत्?
   (च) मोहनदासः स्वसङ्कल्पं स्मारं स्मारं किम् अधिगतवान्?

3. **मञ्जूषातः चित्वा उचितैः अव्ययपदैः अनुच्छेदं पूरयत –**

| परं, यतः यत्, यद्यपि, तथापि इव, तत्र |

हरिश्चन्द्रनाटकं दृष्ट्वा मोहनदासः तस्य .... आचरणं कर्तुं सङ्कल्पं कृतवान्। .... कक्षायां शिक्षकः .... श्यामपट्टे सङ्केतेन शुद्धवर्तनीलेखनस्य सङ्केतं कृतवान्। .... सः अनुकरणम् नाकरोत्। .... सः जानाति स्म .... सत्यात् .... तपः नास्ति।

4. **सन्धिं/सन्धिच्छेदं वा कुरुत –**

न + अस्ति = ...

विद्यालयः = ... + ...

इति + अस्य = ...

नाकरोत् = ... + ...

तदा + आत्मानम् = ...

5. **(अ) उदाहरणमनुसृत्य निर्देशानुसारं वचनपरिवर्तनं कुरुत –**

यथा – सः नाटकं द्रष्टुम् अगच्छत्। (बहुवचने)
ते नाटकं द्रष्टुम् अगच्छन्।

(क) बालकः विद्यालयं गच्छति (बहुवचने)

(ख) शिक्षकः आतङ्कितः अभवत् (बहुवचने)

(ग) छात्राः अनुकरणं कुर्वन्ति। (एकवचने)

(घ) सहपाठिनः तस्य उपहासम् अकुर्वन्। (एकवचने)

(ङ) सः सङ्कल्पं अकरोत्। (द्विवचने)

(ब) उदाहरणमनुसृत्य निर्दिष्टानि पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत् –

यथा – मोहनदासः मित्रैः सह अगच्छत्।
रमेशः मित्रैः सह गृहम् अगच्छत्। (मित्रैः)

(क) मोहनदासं विहाय सर्वे बालाः कार्यं अकुर्वन्।
.... (विहाय)

(ख) वञ्चनातः सत्यस्य गोपनं न करणीयम्।
.... (वञ्चनातः)

(ग) शिक्षकः तस्मै अकुप्यत्।
.... (अकुप्यत्)

(घ) सहपाठिनाम् उपहासभूमिः भविष्यामि।,

.... (उपहासभूमिः)

(ङ) अहं हरिश्चन्द्र इव आचरिष्यामि।

.... (आचरिष्यति)

अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण पुनः लिखत –

(क) मोहनदासं विहाय सर्वे बालाः शुद्धं वर्णविन्यासं अकुर्वन्।

(ख) मोहनदासस्य चेतसि महत् परिवर्तनं सञ्जातम्।

(ग) नाटके राज्ञः हरिश्चन्द्रस्य कर्मनिष्ठा सत्यनिष्ठा च प्रदर्शिते आस्ताम्।

(घ) एकदा गाइल्स-नामा विद्यालयनिरीक्षकः विद्यालयमागतः।

(ङ) सत्यान्नास्ति परं तपः।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

1. **न हि सत्यात् परो धर्मः**
2. **सत्यान्नास्ति परं तपः**
3. **अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।**
   अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते।।
4. **सत्येन सूर्यस्तपति सत्येनाग्निः प्रदीप्यते।**
   सत्येन मरुतो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

भाषा-विस्तार

तसिल् (तस्) प्रत्ययः

1. इसका प्रयोग पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में होता है।
2. इसका तः शेष रह जाता है।

यथा –

1. कुतः = कस्मात् (कहाँ से)
2. दिल्लीतः = दिल्लीनगरात् (दिल्ली नगर से)
3. ग्रामतः = ग्रामात् (गाँव से)
4. श्यामपट्टतः = श्यामपट्टात् (श्यामपट्ट से)

पञ्चमः पाठः

[illegible]

[प्रस्तुत पाठ नारायण पण्डित द्वारा रचित हितोपदेश [कथा-ग्रन्थ] के 'सुहृद्भेद' नामक खण्ड से संपादित कर लिया गया है। यहाँ किसी श्वान के कार्य में हस्तक्षेप कर, उसके कार्य को स्वयमेव करने वाले गर्दभ के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि जिस व्यक्ति का जो कार्यक्षेत्र है, उसे उसी सीमा में कार्य करना चाहिए। यदि वह किसी दूसरे के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप करता है या दूसरे की उपेक्षा कर उस कार्य को स्वयं करता है तो परिणाम दुःखद होता है।]

अव्यय, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, विभक्तिप्रयोगः

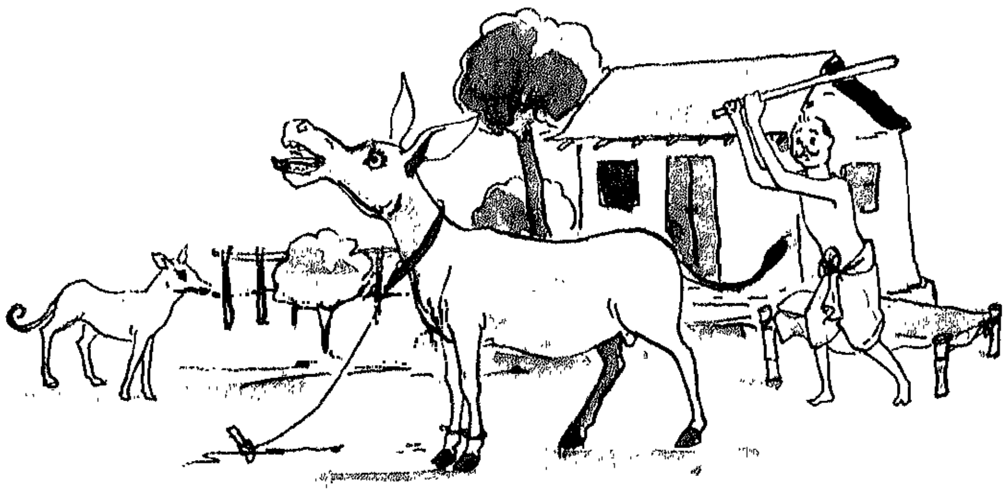
आसीत् पुरा वाराणस्यां कर्पूरपटको नाम रजकः। तस्य गृहे एकः गर्दभः एकः कुक्कुरश्च अवसताम्। गर्दभः भारं वहति स्म, कुक्कुरश्च चौरेभ्यः गृहरक्षां करोति स्म। एकदा रात्रौ एकः चौरः द्रव्याणि हर्तुं तस्य गृहं प्रविष्टः। गर्दभः श्वानमकथयत् – "सखे! भवतः तावदयं व्यापारः तत्किमिति त्वमुच्चैः शब्दं कृत्वा स्वामिनं न जागरयसि?"

कुक्कुरोऽवदत् – "भद्र! मम नियोगस्य चर्चा त्वया न कर्तव्या। किं न जानासि यत् अहम् अहर्निशं तस्य गृहरक्षां करोमि। अयं च चिरान्निवृत्तः ममोपयोगं न जानाति। तेन अधुना सः आहारदानेऽपि मन्दादरः।" गर्दभः अकथयत् –

श्रृणु रे बर्बर! **याचते कार्यकाले यः स किंभृत्यः स किंसुहृत्।**
कुक्कुरो उवाच – **"भृत्यान्संभाषयेद् यस्तु कार्यकाले स किंप्रभुः॥**

कुक्कुरस्य भाषणं श्रुत्वा गर्दभः कोपेन तम् अकथयत् – "अरे दुष्टमते! त्वं पापीयान् असि यत् विपत्तौ स्वामिकार्यस्य उपेक्षां करोषि। भवतु तावत्, यथा स्वामी जागरिष्यति तन्मया कर्तव्यम्, इत्युक्त्वा स उच्चैः चीत्कारशब्दं कृतवान्। ततः तेन चीत्कारेण प्रबुद्धो स

रजकः निद्राभङ्गकोपात् उत्थाय लगुडेन गर्दभं ताडयामास।



अतएव कथ्यते –

> पराधिकारचर्चां यः कुर्यात्स्वामिहितेच्छया।
> स विषीदति चीत्काराद्गर्दभस्ताडितो यथा॥

[illegible]

रजकः	–	धोबी
गर्दभः	–	गधा
हर्तुम्	–	चुराने के लिए/हरण करने के लिए
श्वानम्	–	कुत्ते को
व्यापारः	–	काम
नियोगः	–	कार्य
अहर्निशं	–	दिनरात
निवृत्तः	–	सन्तुष्ट
चिरात्	–	देर से

आहारः - भोजन
मन्दादरः - जिसका आदर कम हो गया हो।
बर्बर - निर्दय
याचते - माँगता है
सुहृत् - दोस्त, मित्र
कोपेन - गुस्से से
दुष्टमते - दुष्टबुद्धि
प्रबुद्धः - जगा हुआ।
लगुडेन - लाठी से
ताडयामास - मारा
विषीदति - दु:खी होता है
किंप्रभुः - कुत्सित स्वामी

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –
   (क) कस्मिन् नगरे कर्पूरपटको नाम रजकः वसति स्म?
   (ख) रजकस्य गृहे कः भारं वहति स्म?
   (ग) कः चौरेभ्यः गृहरक्षां करोति स्म?
   (घ) चौरः कुत्र प्रविष्टः?
   (ङ) रजकः कस्य चीत्कारेण प्रबुद्धः?

लिखितः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –
   (क) राजकस्य गृहे कौ अवसताम्?
   (ख) रात्रौ गर्दभः श्वानम् किम् अकथयत्?
   (ग) किंप्रभुः कः कथितः?
   (घ) रजकः गर्दभं किमर्थं ताडयामास?
   (ङ) कः विषीदति?

५. **उदाहरणमनुसृत्य लकारपरिवर्तनं कुरुत –**

यथा –

वर्तमान कालः	**भूतकालः**
अहं तस्य गृहरक्षां करोमि	अहं तस्य गृहरक्षाम् अकरवम्।
(क) कुक्कुरः रजकस्य गृहे वसति	....
(ख) गर्दभः श्वानम् कथयति	....
(ग) रजकः गर्दभं ताडयति	....
(घ) सः ममोपयोगं न जानाति	....

६. **मञ्जूषातः उचितपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –**

च, पुरा, यथा, एकदा, उच्चैः, अधुना

(क) आसीत् .... वाराणस्यां कर्पूरपटको नाम रजकः।
(ख) तस्य गृहे एकः कुक्कुरः एकः गर्दभः .... अवसताम्।
(ग) त्वम् .... शब्दं कृत्वा कथं न स्वामिनं जागरयसि।
(घ) तेन .... सः आहारदानेऽपि मन्दादरः।
(ङ) .... स्वामी जागरिष्यति, तन्मया कर्तव्यम्।
(च) .... एकः चौरः गृहं प्रविष्टः।

७. **उदाहरणमनुसृत्य स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**

यथा – **कुक्कुरः** गृहरक्षां करोति।
कः गृहरक्षां करोति?

(क) चौरः द्रव्याणि हर्तुम् **रजकस्य** गृहे प्रविष्टः।
(ख) **अयं** ममोपयोगं न जानाति।
(ग) कुक्कुरस्य **भाषणं** श्रुत्वा गर्दभः कोपमुपागतः।
(घ) सः लगुडेन **गर्दभं** ताडयामास।
(ङ) **पराधिकारचर्चा** न कर्तव्या।

८. **अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत् –**

(क) रजकः ....
(ख) प्रविष्टः ....
(ग) नियोगस्य ....
(घ) कोपेन ....
(ङ) कार्यकाले ....
(च) चौरेभ्यः ....

भाव-विस्तार

ग्रन्थ परिचय – राजा सुदर्शन के पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के उद्देश्य से नारायण पण्डित द्वारा **हितोपदेश** नामक कथा-ग्रन्थ की रचना की गयी है। हितोपदेश की 43 कथाओं में से 25 पंचतंत्र से ली गयी हैं। हितोपदेश के चार परिच्छेद हैं – मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह और सन्धि। पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया यह ग्रन्थ केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रसिद्ध है। नारायण पण्डित राजा धवलचन्द्र के आश्रित कवि थे। इनका समय 14वीं शताब्दी है।

1. **पृष्ठतः सेवयेदर्कं जठरेणहुताशनम्।**
   स्वामिनं सर्वभावेन परलोकममायया।।
2. **यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सः तु जीवन्ति।**
   काकोऽपि किं न कुरुते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम्।।

भाषा-विस्तार

क. क्त्वा (त्वा) तथा ल्यप् (य्) प्रत्यय

जब एक ही कर्ता कोई कार्य समाप्त करके दूसरा कार्य करता है, तो पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जाकर, खाकर, पीकर आदि अर्थों में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए संस्कृत में धातु से क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाया जाता है।

धातु	क्त्वा प्रत्यय से बने शब्द	अर्थ
पठ्	पठित्वा	पढ़कर
पा	पीत्वा	पीकर
हस्	हसित्वा	हँसकर
गम्	गत्वा	जाकर

ख. ल्यप् (य्)

पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के अर्थ में यदि धातु से पूर्व कोई उपसर्ग हो तो वहाँ **क्त्वा** के स्थान पर **ल्यप्** प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उपसर्ग + धातु	ल्यप् प्रत्यय-योग से बने शब्द	अर्थ
आ + नी	आनीय	लाकर
अनु + भू	अनुभूय	अनुभव करके
आ + गम्	आगत्य	आकर
प्र + नम्	प्रणम्य	प्रणाम करके

ग. तुमुन प्रत्ययः

तुमुन् का "तुम्" शेष रह जाता है। इस प्रत्यय का प्रयोग "के लिए" अर्थ की निमित्तार्थक क्रिया के लिए होता है।

धातु	तुमन प्रत्यय के योग से बने शब्द	अर्थ
गम्	गन्तुम्	जाने के लिए
पठ्	पठितुम्	पढ़ने के लिए
दा	दातुम्	देने के लिए
श्रु	श्रोतुम्	सुनने के लिए

षष्ठः पाठः

नीतिश्लोकाः

[प्रस्तुत पाठ में नीतिविषयक श्लोकों का संकलन है। इन में दुर्जन-परित्याग, दुष्टों एवं सज्जनों की मित्रता की पहचान बताई गयी है। इसके अतिरिक्त यहाँ श्रेष्ठजनों का स्वभाव लाभ, हानि, दुःख, निपुणता, सम्पत्ति तथा सुख विषयक जीवनोपयोगी ज्ञान की चर्चा भी की गयी है। इन्हें हृदयंगम कर मानव अपने को व्यावहारिक दृष्टि से कुशल बना सकता है।]

विशेषण-विशेष्य शब्दाः

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥1॥

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥2॥

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥3॥

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥4॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥5॥

को लाभो गुणिसङ्गमः किमसुखं प्राज्ञेतरैः सङ्गतिः
का हानिः समयच्युतिः निपुणता का धर्मतत्त्वे रतिः।
कः शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा काऽनुव्रता किं धनं
विद्या किं सुखमप्रवासगमनं राज्यं किमाज्ञाफलम् ॥6॥

[illegible]

परिहर्तव्यः	–	त्याग देना चाहिए
अलङ्कृतः	–	सुशोभित
भूषितः	–	सजा हुआ
असौ (अदस् प्र.वि.एकव.)	–	यह
गुर्वी	–	बड़ी (विशाल)
क्षयिणी	–	नष्ट होती हुई
लघ्वी	–	छोटी
पूर्वार्द्ध	–	पहले वाला आधा भाग
परार्द्ध	–	बाद वाला आधा भाग
खलः	–	दुष्ट
शीलं	–	चरित्र की शालीनता
भुवि	–	पृथ्वी पर
मर्त्यलोके	–	मरणशील संसार में
विघ्नविहता	–	बाधाओं से पीड़ित
प्रतिहन्यमाना	–	सताये जाते हुए
विरमन्ति	–	रुक जाते हैं
नीतिनिपुणाः	–	न्याय (व्यवहार) में कुशल

निन्दन्तु	– निन्दा करें
स्तुवन्तु	– प्रशंसा करें
लक्ष्मी	– धन (धन की देवी)
समाविशतु	– (सम+आ+विश्, लोट् लकार) आवें
यथेष्टम्	– इच्छा अनुसार
युगान्तरे	– युग बीतने पर
न्यायात्पथः	– न्याय के रास्ते से
प्रविचलन्ति	– विचलित होते हैं (हटते हैं)
पदम्	– कदम
गुणिसङ्गमः	– गुणवानों का साथ
प्राज्ञेतरैः	– मूर्खों से (विद्वानों से अलग लोगों से)
समयच्युतिः	– समय की हानि
निपुणता	– योग्यता, दक्षता
धर्मतत्त्वे	– धर्म के कार्य में
रतिः	– प्रेम
विजितेन्द्रियः	– इन्द्रियों को जीतने वाला
अनुव्रता	– आज्ञाकारिणी
अप्रवासगमनम्	– घर से दूर न जाना
आज्ञाफलम्	– आज्ञा का पालन होना

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) कः परिहर्त्तव्यः?
   (ख) कार्यं प्रारभ्य के न परित्यजन्ति?
   (ग) खलस्य मैत्री आरम्भे कीदृशी भवति?
   (घ) धीराः कस्मात् पथः न प्रविचलन्ति?

लिखितः

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) सज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?

(ख) मनुष्यस्य आकृतिं धारयन्नपि के पशुवत् जीवन्ति?

(ग) नीचः किमर्थं कार्यारम्भं न करोति?

(घ) किं सुखम् उक्तम्?

सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

पूर्व	+	अर्द्ध	=	....
.....	+	....	=	परार्द्धः
च	+	उत्तमः	=	....
....	+	....	=	यथेष्टम्
अद्य	+	एव	=	....

अधोलिखितेषु वाक्येषु [उदाहरणमनुसृत्य] लकारपरिवर्तनं कुरुत –

	लोट् लकारः	लट् लकारः
	नीतिनिपुणाः निन्दन्तु	नीतिनिपुणाः निन्दन्ति
(क)	बालकः पठतु	बालकः ....।
(ख)	तपस्वी स्तुतिं करोतु	तपस्वी स्तुतिं ....।
(ग)	सः विद्यालयं गच्छतु	सः विद्यालयं ....।
(घ)	बालकौ फलानि खादताम्	बालकौ फलानि ....।
(ङ)	कृषकाः हलं कर्षन्तु	कृषकाः हलं ....।

(अ) श्लोकांशान् यथायोग्यं योजयत –

(क)	(ख)
(क) दुर्जनः परिहर्तव्यः	छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।
(ख) दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना	न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।
(ग) ते मर्त्यलोके भुविभारभूता	विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्।
(घ) अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा	मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

(ब) मञ्जूषायां दत्तैः सर्वनामशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

असौ, का, येषा, किम्, ते

(क) .... न विद्या न तपो न दानम्।

(ख) .... मर्त्यलोके भुवि भारभूता।

(ग) मणिना भूषितः सर्पः किम् .... न भयङ्करः।

(घ) निपुणता .... धर्मतत्त्वे अप्रवासगमनम्।

(ङ) .... सुखम् अप्रवासगमनम्।

6. **विशेषणैः सह विशेष्याणि यथायोग्यं योजयत –**

(i) भूषितः	(i) प्रियतमा
(ii) विघ्नविहताः	(ii) दुर्जनः
(iii) अनुव्रता	(iii) जनाः
(iv) अलङ्कृतः	(iv) शूरः
(v) भारभूताः	(v) मध्याः
(vi) विजितेन्द्रियः	(vi) सर्पः

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

नीति श्लोक जीवनोपयोगी व्यावहारिक उपदेश देते हैं। इसीलिए ये जीवन-पथ के पाथेय माने जाते हैं।

सम्बद्ध श्लोक-

1. **खलानां कण्टकानां च द्विविधैव प्रतिक्रिया।**
   उपानन्मुखभङ्गो वा दूरतो वा विसर्जनम्।।
2. **आरभन्ते अल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।**
   महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः।।
3. **यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।**
   चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता।।

भाषा-विस्तार

क्त प्रत्यय – भूतकालिक क्रिया के अर्थ में धातु से **क्त** प्रत्यय का योग किया जाता है।

क्त प्रत्यय के उदाहरण –

हन्	+	क्त	=	हतः
गम्	+	क्त	=	गतः
कृ	+	क्त	=	कृतः
हस्	+	क्त	=	हसितः

रामेण रावणः हतः। (पुल्लिङ्ग)

मया पुस्तकं पठितम्। (नपुंसकलिङ्ग)

गुरुणा कक्षा भूषिता। (स्त्रीलिङ्ग)

यहाँ कर्म के आधार पर ही क्रिया का लिङ्ग वचन निर्धारित किया गया है। प्रथम वाक्य में रावण कर्म पुल्लिङ्ग में होने के कारण 'हतः' क्रिया पुल्लिङ्ग में है। द्वितीय वाक्य में 'पुस्तकं' पद नपुंसकलिङ्ग है अतः पठ्+क्त नपुंसकलिङ्ग में पठितम् बना तथा इसी प्रकार कक्षा पद स्त्रीलिङ्ग होने के कारण भूष्+क्त स्त्रीलिङ्ग में भूषिता बना।

प्रस्तुत पाठ में **क्त** प्रत्यय का प्रयोग विशेषण पदों के रूप में हुआ है -

विशेषणपदानि	**विशेष्यपदानि**
1. भूषितः	सर्पः
2. विघ्नविहताः	मध्याः
3. भारभूताः	जनाः
4. अलङ्कृतः	दुर्जनः

किम् (क्या) सर्वनाम शब्द पुल्लिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.वि.	कः	कौ	के
द्वि.वि.	कम्	कौ	कान्

किम् (क्या) सर्वनाम शब्द स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.वि.	का	के	काः
द्वि.वि.	काम्	के	काः

किम् (क्या) सर्वनाम शब्द नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.वि.	किम्	के	कानि
द्वि.वि.	किम्	के	कानि

प्रस्तुत पाठ में **'किम्'** शब्द का प्रयोग तीनों लिङ्गों में हुआ है यथा -

कः लाभः	(लाभ क्या है?)	पुल्लिङ्ग
का हानिः	(हानि क्या है?)	स्त्रीलिङ्ग
किं सुखम्	(सुख क्या है?)	नपुंसकलिङ्ग

सप्तमः पाठः

[illegible]

[प्रस्तुत पाठ महाकवि भासरचित 'अभिषेक' नाटक के तृतीय अङ्क से यथापेक्षित संपादित कर लिया गया है। अशोक वाटिका के विध्वंस के पश्चात् हनुमान को रावण के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। हनुमान रावण को श्रीराम का संदेश सुनाते हैं जिससे क्रोधित होकर रावण हनुमान की पूँछ में आग लगाने का आदेश देता है। विभीषण रावण को समझाते हैं, वह राम को उनकी जानकी सौंप दे परन्तु अहंकारी रावण उसे नहीं मानता।]

(उपसर्ग)

[ततः प्रविशति राक्षसैर्गृहीतो हनूमान्]

सर्वे - आ, इत इतः।

हनूमान् - **नैवाहं धर्षितस्तेन राक्षसेण दुरात्मना।**
स्वयं ग्रहणमापन्नो राक्षसेशं दिदृक्षया।।
(*उपगम्य*)
भो राजन्! अपि कुशली भवान्?

रावणः - भो वानर! कस्त्वम्? कथम् अस्माकमन्तःपुरं प्रविष्टः।

हनूमान् - भोः! श्रूयताम् –
अञ्जनायां समुत्पन्नो मारुतस्यौरसः सुतः।
प्रेषितो राघवेणाहं हनूमान् नाम वानरः।।

विभीषणः - हनुमन्! किमाह तत्रभवान् राघवः।

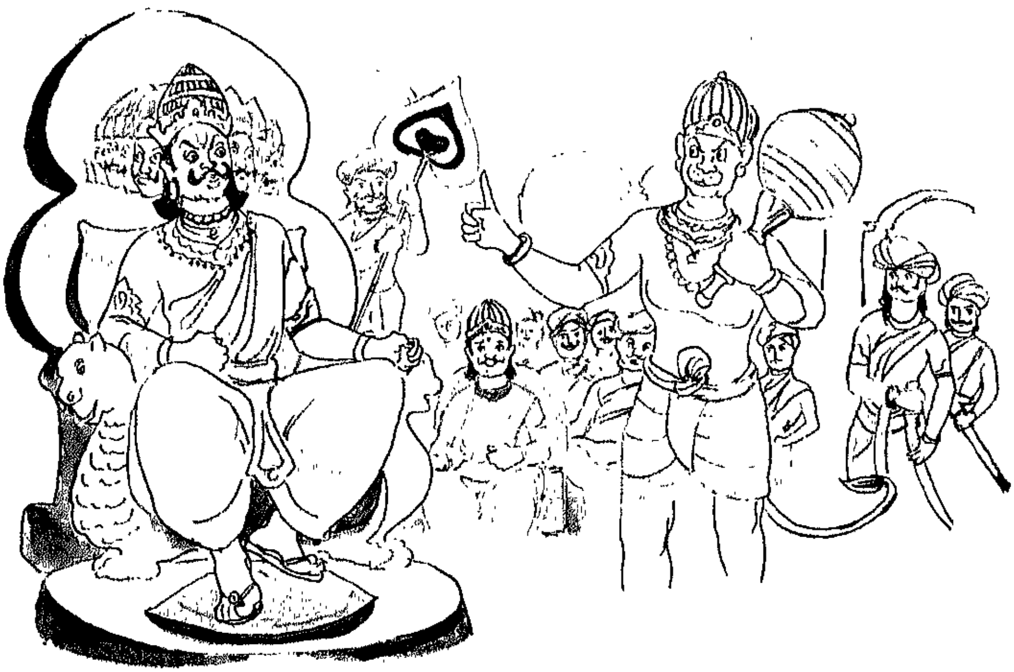
हनूमान् - भोः! श्रूयतां रामशासनम्।

रावणः - कथं कथं रामशासनमित्याह। आः हन्यतामयं वानरः।

विभीषणः - प्रसीदतु प्रसीदतु महाराजः। अवध्याः खलु दूताः। अथवा रामस्य वचनं श्रुत्वा पश्चाद् यथेष्टं कर्तुमर्हति महाराजः।

रावणः - भो वानर! किमाह स मानुषः?

हनूमान् - भो राक्षसराज! श्रूयताम्, राघवेण सङ्कल्पितम् – कामं त्वं शङ्करस्य शरणं गच्छ, दुर्गतं रसातलं वा प्रविश। अहं तीक्ष्णैः सायकैः त्वाम् अवश्यमेव हनिष्यामि।



रावणः - हः हः हः! रे वानरः! मया दिव्यास्त्रैः अनेके देवाः राक्षसाश्च पराजिताः। कुबेरस्य पुष्पकयानमपि अपहृतम्। सः मानुषः रामः मां कथं पराजेष्यते?

हनूमान् - एवंविधेन भवता किमर्थं छलेन तस्य दारापहरणं कृतम्?

विभीषणः - सम्यगाह हनूमान्।

अपास्य मायया रामं त्वया राक्षसपुङ्गव।
भिक्षुवेषं समास्थाय छलेनापहृता हि सा॥

रावणः - विभीषण! विपक्षपक्षमवलम्बसे?

विभीषणः - हे राजन्! विद्यमानस्य राक्षसकुलस्य रक्षायै रामाय सीतां समर्पय।

रावणः - विभीषण!

कथं लम्बसटः सिंहो मृगेण विनिपात्यते।
गजो वा सुमहान् मत्तः शृगालेन निहन्यते॥

हनूमान् - भो रावण! विपद्यमानभाग्येन भवता किं युक्तं राघवमेवं वक्तुम्?

रावणः - कथं कथं नामाभिधत्ते। हन्यतामयं वानरः। अथवा दूतवधः खलु निन्दितः। शङ्कुकर्ण! लाङ्गूलमादीप्य विसृज्यतामयं वानरः।

शङ्कुकर्णः - यदाज्ञापयति महाराजः। इतः इतः।

रावणः - (*हनुमन्तं प्रति*) एहि तावत्।

हनूमान् - अयमस्मि।

रावणः - अभिधीयतां मद्वचनात् सः मानुषः हे राम! मया तव भार्या अपहृता, अनादरश्च कृतः।

यदि तेऽस्ति धनुःश्लाघा, दीयतां मे रणो महान्॥

शब्दार्थाः

एहि - आओ
धर्षितः - पराजित, जबरदस्ती पकड़ा गया, डांटा गया
दुरात्मना - दुष्ट से
आपन्नः - युक्त
राक्षसेशम् - रावण को
दिदृक्षया - देखने की इच्छा
हनूमान् - पवन का पुत्र (इस शब्द में 'हनू' एवं 'हनु' दोनों रूप प्रयुक्त हैं)
अन्तःपुरम् - रनिवास
औरसः - सगा
राघवेण - श्रीरामचन्द्र से
शासनम् - आज्ञा
हन्यताम् - मार दीजिए
अवध्याः - वध न करने योग्य

यथेष्टम्	– इच्छा अनुसार
उपेहि	– समीप जाओ
दुर्गतम्	– अत्यन्त सुरक्षित स्थान को
रसातलम्	– पाताल लोक को
सायकैः	– बाणों से
दिव्यास्त्रैः	– अलौकिक शस्त्रों से
अपहृतम्	– चुरा लिया गया
दारापहरणम्	– स्त्री को चुराना
सम्यक्	– ठीक
आह	– कहा
अपास्य	– दूर हटा कर
राक्षसपुङ्गव	– श्रेष्ठ राक्षस
समास्थाय	– आश्रय लेकर
छलेन	– धोखे से
विपक्षपक्षम्	– शत्रु के पक्ष को
विपद्यमानम्	– विपत्ति में पड़े हुए को (मारे जाते हुए को)
लम्बसटः	– ग्रीवा के लम्बे बालों वाला
विनिपात्यते	– गिराया जाता है
लाङ्गूलम्	– पूंछ
आदीप्य	– आग लगा कर [जलाकर]
विसृज्यताम्	– छोड़ दें
ऐहि	– आओ
श्लाघा	– गर्व
दीयतां	– दीजिए

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**

(क) कैः गृहीतः हनूमान् रावणसभां प्रविशति?

(ख) अञ्जना कस्य माता आसीत्?
(ग) मत्तः गजः केन विहन्यते?
(घ) विभीषणः स्वभ्रातरं राक्षसकुलस्य रक्षायै कस्मै सीतां समर्पयितुं कथयति?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
(क) हनुमतः मातापितरौ कौ आस्ताम्?
(ख) राघवेण किं सङ्कल्पितम् आसीत्?
(ग) मृगेण कः न विनिपात्यते?
(घ) अन्ते रावणस्य रामं प्रति कः सन्देशः आसीत्?

3. **अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति?**

	कः	कम् प्रति
(क) भो राजन्! अपि कुशली भवान्?		
(ख) प्रसीदतु महाराजः। अवध्याः खलु दूताः।	....	....
(ग) मया दिव्यास्त्रैः अनेके देवाः राक्षसाश्च पराजिताः।	....	....
(घ) भिक्षुवेषं समास्थाय त्वया सा छलेन अपहृता।	....	....
(ङ) विपक्षपक्षम् अवलम्बसे।	....	....

4. **यथायोग्यं पूरयत –**

(क)	यथा	+	....	=	यथेष्टम्
(ख)	सर्व	+	अपराधेषु	=	....
(ग)	....	+	एव	=	अस्यैव
(घ)	इति	+	आह	=	....
(ङ)	....	+	उक्तः	=	मयोक्तः
(च)	राघवेण	+	अहम्	=	....
(छ)	....	+	....	=	अस्म्यहम्
(ज)	मारुतस्य	+	औरसः	=	....
(झ)	नै	+	....	=	नायकः
(ञ)	भो	+	ऊकः	=	....

5. **अधोलिखितान् उपसर्ग-धातु-प्रत्ययान् संयोज्य पदरचनां कुरुत –**

उपसर्गः	+	धातुः	+	प्रत्ययः	=	पदानि
(क) परा	+	जि	+	लृट्लकार, प्र.पु., एकवचनम्	=	....
(ख) उप	+	विश्	+	लोट्, म.पु., एकवचनम्	=	....

(ग) अप + हृ + क्त + टाप् = ...
(घ) प्र + सद् + लोट्, प्र.पु., एकवचनम् = ...
(ङ) अव + गम् + लट्, म.पु., एकवचनम् = ...
(च) अभि + धा (कर्म.वा.): लोट्, म.पु., एकवचनम् = ...

6. **मञ्जूषातः उचितानि पदानि विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत –**

| अध्ययनम्, सह, किम्, अलम्, अभितः |

(क) कलहेन ....।
(ख) मया .... एव विद्यालयं गच्छ।
(ग) .... श्रुतेन यदि तदनुसारं न आचरसि।
(घ) गृहम् .... वृक्षाः सन्ति।
(ङ) तुभ्यम् संस्कृतस्य .... अतीव रोचते।

योग्यता विस्तार

भाव-विस्तार

कवि परिचयः महाकवि भास संस्कृत साहित्य के अमर नाटककार हैं। मानवीय भावनाओं का जितना सुन्दर चित्रण भास के नाटकों में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इनके द्वारा रचित तेरह नाटक हैं- स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, उरुभंगम्, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्रम्, दूतघटोत्कचम्, कर्णभारम्, मध्यमव्यायोगः, प्रतिमानाटकम्, अभिषेकनाटकम्, अविमारकम्, चारुदत्तम्, बालचरितम्।

भाषा-विस्तार

उपसर्ग (प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि और उप) स्वयं अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करते हैं परन्तु जब धातु के साथ इनका योग होता है तो धातु के अर्थ को बिल्कुल बदल देते हैं।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्।।

उपसर्ग	धातु	शब्द	अर्थ
प्र	हृ	प्रहार	वार करना
आ	"	आहार	भोजन
सम्	"	संहार	मारना

वि	"	विहार	घूमना
परि	"	परिहार	दूर करना

परन्तु कहीं-कहीं पर उपसर्ग के साथ धातुओं के मिलने पर भी धातु का अर्थ नहीं बदलता है।

यथा-

उपसर्ग	**धातु**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**अर्थ**
....	आप्	क्त	आप्त	पाया
प्र	आप्	क्त	प्राप्त	पाया
....	वस्	तिप्	वसति	रहता है
नि	वस्	तिप्	निवसति	रहता है

अष्टमः पाठः

जगद्गुरुः शङ्कराचार्यः

प्रस्तुत पाठ आदिगुरु शङ्कराचार्य के विषय में लिखा गया एक लघु निबन्ध है। भारतीय संस्कृति के प्रचारकों में जगद्गुरु शङ्कराचार्य का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। ये अपनी माता का बहुत आदर करते थे। अद्वैतवेदान्त के विद्वान् एवं प्रचारक होते हुए भी ये अपनी माता द्वारा जीवन के अन्तिम क्षण में, याद करते ही उनके पास उपस्थित हो गए थे।

(अव्यय, विभक्ति प्रयोगः)

आदिगुरोः शङ्कराचार्यस्य जन्म केरलप्रान्ते कालडीनामके ग्रामे अभवत्। अस्य पितुः नाम शिवगुरुः आसीत्। अस्य जन्मनः प्रागेव सः दिवंगतः। माता आर्याम्बा एवास्य पालनमकरोत्। जन्मनैव प्रतिभासम्पन्नतया स कुलोचिताः विद्याः शीघ्रमेव अधीतवान्। मनसा, वचसा कर्मणा च विरक्तः शङ्करः मातरं संन्यासस्यानुमतिम् अयाचत्। पुत्रस्नेहपरवशा सा शङ्करस्य इमां प्रार्थनां न स्वीकृतवती।



एकदा शङ्करः नद्यां स्नातुं गतः। तत्र नक्रेण गृहीतः स उच्चैः आक्रोशत्। आक्रोशं श्रुत्वा माता नदीतीरं गता पुत्रं च नक्रेण गृहीतम् अपश्यत्। शङ्करः अवदत् – "अम्ब! यदि संन्यासं ग्रहीतुं मामनुमंस्यसे तर्हि अहं नक्रात् मुक्तो भविष्यामि।" अनिच्छन्त्यपि

माता –"वत्स! यथा तुभ्यं रोचते तथा कुरु" इति कष्टेनाकथयत्। एतच्छ्रुत्वा शङ्करः नक्रात् मुक्तः अभवत्। नद्याः बहिर्निर्गत्य मातुः चरणयोः प्रणामं कृत्वा सः अवदत्, "मातः! यद्यपि गच्छाम्यहं संन्यासाय तथापि यदैव त्वं मां स्मरिष्यसि तदैव उपस्थितो भविष्यामि।" एवं प्रतिज्ञाय गृहात् निरगच्छत्।

अथ परिव्राजकैः सह देशाद्देशं पर्यटन् शङ्करः काश्यां गोविन्दपादाचार्येभ्यः वेदान्तविद्यामधीतवान्। अनन्तरं मुख्यानाम् उपनिषदाम्, ब्रह्मसूत्राणां श्रीमद्भगवद्गीतायाश्च भाष्याणि अरचयत्। अनेन विरचितानि बहूनि स्तोत्रकाव्यान्यपि सन्ति येषु भजगोविन्दस्तोत्रम् अतीव लोकप्रियमस्ति।

एवं मन्यते यत् मरणासन्ना माता यदैवास्य स्मरणं अकरोत् तदैवायं तत्समीपं आगच्छत्। दिवं गतायां मातरि संन्यस्तोऽपि सः पुत्रोचितं सर्वं कृत्यं सम्पादितवान्। ततः सर्वतः परिभ्रमन् स जनेभ्यः अद्वैतवेदान्तसिद्धान्तस्य ज्ञानमुपदिष्टवान्। अस्मिन्नेव प्रचारक्रमे स द्वारिकायां, बदर्यां, जगन्नाथपुर्यां, शृङ्गेर्यां च चतुरः मठान् समस्थापयत्। अन्ते च द्वात्रिंशे एव वयसि स ब्रह्मभावम् उपगतः।

शब्दार्थाः

प्रागेव	–	पहले ही
जन्मनैव	–	जन्म से ही
कुलोचिताः	–	कुल में प्रचलित
अधीतवान्	–	पढ़ लिया
विरक्तः	–	वैराग्य प्राप्त
अयाचत्	–	याचना की/मांगा
पुत्रस्नेहपरवशा	–	पुत्र के स्नेह में आसक्त
स्नातुम्	–	स्नान के लिए
नक्रेण	–	मगरमच्छ/घड़ियाल के द्वारा
आक्रोशत्	–	चिल्लाया
आक्रोशम्	–	चिल्लाहट
अनुमंस्यसे	–	अनुमति दे दोगी
निर्गत्य	–	निकलकर

प्रतिज्ञाय	–	प्रतिज्ञा करके
निरगच्छत्	–	निकल गया
परिव्राजकैः	–	संन्यासियों के साथ
देशाद्देशम्	–	एक देश से दूसरे देश को
पर्यटन्	–	घूमता हुआ
भाष्याणि	–	टीका-टिप्पणी से युक्त व्याख्या
अरचयत्	–	रचना की
विरचितानि	–	लिखे गये
मरणासन्ना	–	मृत्यु के समीप पहुँची
यदैव	–	जैसे ही
तदैव	–	उसी समय
सम्पादितवान्	–	पूरा किया
परिभ्रमन्	–	घूमता हुआ
दिक्षु	–	दिशाओं में
समस्थापयत्	–	स्थापना की
वयसि	–	आयु में
ब्रह्मभावम् उपगतः	–	स्वर्गवासी हो गए/ब्रह्म में लीन हो गए

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) शङ्कराचार्यस्य मातुः किं नाम?
   (ख) शङ्करस्य गुरुः कः आसीत्?
   (ग) नद्यां शङ्करः केन गृहीतः?
   (घ) शङ्करः कति मठान् समस्थापयत्?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) शङ्कराचार्यस्य जन्म कुत्राभवत्?

(ख) नक्रेण गृहीतः शङ्करः मातरं किमकथयत्?

(ग) संन्यासाय गृहात् निर्गतः शङ्करः मात्रे किं प्रतिज्ञातम्?

(घ) शङ्करः केषां ग्रन्थानां भाष्याणि अरचयत्?

(ङ) केषु स्थानेषु शङ्करः मठान् समस्थापयत्?

3. **उदाहरणमनुसृत्य यथाक्रमम् पदपरिचयं लिखत –**

यथा –जन्मनः –	जन्मन्	+	पंचमी/षष्ठी	+	एकवचन
नद्याम्	....	+	....	+	....
नक्रात्	....	+	....	+	....
परिव्राजकैः	....	+	....	+	....
उपनिषदाम्	....	+	....	+	....
तुभ्यम्	....	+	....	+	....

4. **उदाहरणमनुसृत्य यथापेक्षितं पूरयत –**

यथा – प्रति	+	एकम्	=	प्रत्येकम्
यदि	+	....	=	यद्येवम्
....	+	अहम्	=	गच्छाम्यहम्
अनिच्छन्ती	+	अपि	=	....
काव्यानि	+	....	=	काव्यान्यपि
....	+	....	=	तदैव

5. **(अ) पाठमाधृत्य समानार्थकपदानि योजयत –**

(क) मृत्युपार्श्वे प्राप्य	जनन्याम्
(ख) मातरि	सन्यासिभिः
(ग) परिव्राजकैः	अधीतवान्
(घ) ततः	मरणासन्ना
(ङ) पठितवान्	अनन्तरम्

(ब) विलोमपदानि योजयत –

(क) गत्वा	शीघ्रम्
(ख) मन्दम्	प्रविश्य
(ग) निर्गत्य	अनुपस्थितः
(घ) उपस्थितः	आगत्य

6. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकलिखितपदेषु चतुर्थीविभक्तिप्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्त्तिं कुरुत–**

यथा – यथा तुभ्यम् रोचते तथा कुरु। (युष्मद्)

त्वम् कृषकाय बीजं ददासि। (कृषक)

(क) अहम् .... पुस्तकं ददामि। (छात्र)

(ख) पिता .... क्रीडनकम् ददाति। (पुत्र)

(ग) .... मोदकं रोचते। (अस्मद्)

(घ) किम् .... गल्पं एव रोचते? (युष्मद्)

(ङ) .... कलहः न रोचते। (तद्-पुं.)

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

केरलवासी शङ्कराचार्य का जन्म 788 ई. में तथा मृत्यु 820 ई. में हुई। केवल आठ वर्ष की आयु में ही इन्होंने संन्यास आश्रम स्वीकार कर वेदान्त का प्रचार किया। अपने संक्षिप्त जीवन में इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। 11 उपनिषदों पर भाष्य लिखकर अद्वैतवाद का प्रवर्तन किया। अद्वैतवाद का विकास करने के लिए ब्रह्मसूत्र पर इनके द्वारा लिखा गया भाष्य विशेष उल्लेखनीय है।

शङ्कराचार्य ने अनेक स्तोत्र काव्यों की भी रचना की है। जिनमें 'भजगोविन्दम्' तथा 'सौन्दर्यलहरी' अति प्रसिद्ध है। 'भजगोविन्दम्' के गेय कतिपय पद्य इस प्रकार हैं –

भज गोविन्दम्, भजगोविन्दम् गोविन्दं भज मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥
दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चत्याशावायुः॥1॥ भज गोविन्दम् ....
अग्रे चाग्निः पृष्ठे भानुः रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापासः॥2॥ भज गोविन्दम् ....

शङ्कराचार्य ने वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार हेतु सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर चारों दिशाओं में निम्नलिखित चार मठों की स्थापना की।

दिशा	स्थान	मठ
पूर्व	जगन्नाथपुरी	गोवर्धनमठ
पश्चिम	द्वारिका	शारदामठ
उत्तर	बद्रीनाथ	ज्योतिर्मठ
दक्षिण	रामेश्वर	शृङ्गेरीमठ

भाषा-विस्तार

क. रुच् धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

यथा – 1. मह्यम्, संस्कृताध्ययनम् अतीव रोचते।

2. तुभ्यम् कानि फलानि रोचन्ते।

3. देवदत्ताय मोदकानि रोचन्ते।

ख. 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है।

यथा – 1. मित्राणि मित्रैः सह क्रीडन्ति।

2. पुत्रः पित्रा सह आपणं गच्छति।

3. सुशीला राधया सह विद्यालयं याति।

ग. अव्ययपदों का युग्म में प्रयोग

यथा – 1. यद्यपि अहं सन्यासाय गच्छामि तथापि त्वाम् अहं सदैव स्मरिष्यामि।

2. यथा राजा तथा प्रजा।

3. यावत् गिरयः सरितश्च भूतले स्थास्यन्ति, तावत् रामायणी-कथा लोके प्रचरिष्यति।

4. यदि त्वं परिश्रमं करिष्यसि, तर्हि सफलः भविष्यसि।

नवमः पाठः

लोभः नाशस्य कारणम्

[प्रस्तुत पाठ विष्णुशर्मा द्वारा रचित पञ्चतंत्र नामक कथाग्रन्थ से संपादित कर लिया गया है। इसमें अत्यन्त लोभी राजा चन्द्र की कथा का वर्णन है जो रत्नमालाओं को पाने की लालसा में अपने परिवार एवं परिजनों को खो बैठता है। इस प्रकार इस कहानी द्वारा स्पष्ट किया गया है कि लालच विनाश का मूल कारण होती है।]

राजन् शब्द रूप (हलन्त पुंल्लिग), क्त, क्तवतु
धातु - विश्, लट् लृट्

कस्मिंश्चिद् नगरे चन्द्रनामकः राजा आसीत्। तस्य भवनपरिसरे अनेके अश्वाः, वानराः, मेषाः च वसन्ति स्म। एकदा दैवदुर्विपाकात् तस्य अनेके अश्वाः भृशं दग्धाः। राजवैद्येन कथितम् "हयानां दाहोपशमनार्थं वानराणां मेदांसि अपेक्ष्यन्ते" **वैद्यवचनानि पालयन् राजा अश्वोपचाराय आदिशत्। एवं अश्वोपचाराय बहवो वानराः घातिताः।**

अथ पूर्वमेव त्यक्तराजभवनः वानरयूथपतिः इमं वृत्तान्तम् अशृणोत्। सः अचिन्तयत्– 'कथमेनं राजानं दण्डयामि येन इदम् अकार्यं कृतम्। एवं चिन्तयन् सः वने स्थितस्य एकस्य सरोवरस्य वैचित्र्यं ज्ञातवान्। यः कोऽपि तस्मिन् सरोवरे प्रविशति सः नाशमेति। सः तत्र अगच्छत्। दूरस्थः च सन् कमलनालेन सरोवरजलं पातुमारभत्।



तत्क्षणमेव रत्नमालाभूषितः एकः राक्षसः जलमध्याद् निष्क्रम्य

अवदत् – भो वानर! अत्र सलिले यः प्रवेशं करोति स मे भक्ष्यः, परं त्वम् अतीव चतुरोऽसि, यः जलम् अनेन विधिना पिबसि। अतः तुष्टोऽहं, प्रार्थयस्व मनोवाञ्छितम्। वानरो आह केनचित् दुष्टेन भूपतिना सह मे अत्यन्तं वैरम्। यदि त्वम् एनां रत्नमालां मह्यं प्रयच्छसि, तर्हि तं राजानं प्रलोभ्य अत्र सरसि प्रवेक्षयामि। प्रसन्नः राक्षसः तस्मै रत्नमालाम् अयच्छत्।

अथ राक्षसदत्तां मालां धारयित्वा सः नगरं प्रविष्टः। तत्र केनचित् जनेन धृतः सः राज्ञः समक्षम् आनीतः। राज्ञा पृष्टः सः अभाषत् – महाराजः! वने रत्नमालासनाथं एकं सरः अस्ति। तत्र सूर्योदये यः प्रविशति, स रत्नमालाभूषितः निःसरति। लोभाकृष्टः राजा उवाच– यद्येवं तर्ह्यहं सपरिवारः तत्र गमिष्यामि, येन प्रभूताः रत्नमालाः लप्स्ये।

अथ सपरिवारः राजा वानरेण सह वनं गतवान्। तत्र वानरोक्तविधिना राज्ञः सर्वे जनाः जले प्रवेशिताः। सद्य एव ते रत्नमालाभूषितेन राक्षसेण भक्षिताः। विस्मितः नृपः वानरम् अपश्यत्। वृक्षम् आरुह्य सः राजानम् उवाच – भो दुष्ट नरपते! प्रसन्नो भव। नष्टाः ते जनाः। पूर्वं त्वं अश्वलोभात् पालितवानराणां वधं कारितवान्, अधुना लोभवशीभूतः स्वजनानां मृत्योः कारणम् अपि अभूः। धिक् त्वां लोभाभिभूतात्मानम्।

शब्दार्थाः

मेषाः	–	भेड़ (बहुत)
दैवदुर्विपाकात्	–	दुर्भाग्य से
भृशम्	–	अधिक
दग्धाः	–	जल गये
आहूतः	–	बुलाया गया
हयानाम्	–	घोड़ो के
दाहोपशमनार्थम्	–	दाह+उपशमन+अर्थम्-जलन रोकने हेतु
मेदांसि	–	चर्बी
घातिताः	–	मार दिए गए
वानरयूथपतिः	–	बन्दरों के दल का नेता
वृत्तान्तम्	–	समाचार को

अशृणोत्	–	सुना
निष्क्रम्य	–	निकल कर
सलिले	–	जल में
भक्ष्यः	–	भोजन है
प्रलोभ्य	–	लुभा कर
अर्धोदिते	–	आधे उगे हुए
प्रभूताः	–	अत्यधिक मात्रा में
लप्स्ये	–	प्राप्त करूँगा
क्षिप्रम्	–	शीघ्र
तर्हि	–	तो
आरुह्य	–	चढ़कर
प्रवेक्षयामि	–	प्रवेश कराऊँगा
भक्षिताः	–	खा लिए गए

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) हयानां दाहोपशमनार्थम् केषां मेदांसि आवश्यकम् आसीत्?
   (ख) वानरयूथपतिः कस्याः सहायतया जलम् पातुमारभत्?
   (ग) कया भूषितः राक्षसः जलमध्यात् निष्क्रम्य अवदत्?
   (घ) राजा वानरेण सह कुत्र गतवान्?
   (ङ) लोभवशीभूतः राजा केषां मृत्योः कारणम् अभवत्?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) वानरयूथपतिः वने किम् अचिन्तयत्?
   (ख) रत्नमालाभूषितः वानरः कस्य समक्षम् आनीतः?
   (ग) वानरः सरसः किम् वैशिष्ट्यम् उक्तवान्?
   (घ) वानरोक्तविधिना राज्ञा के जले प्रवेशिताः?
   (ङ) पाठेऽस्मिन् लोभः कस्य कारणम् उक्तम्?

3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) दैवदुर्विपाकात् **अनेके अश्वाः** भृशं दग्धाः।
   (ख) **हयानां** दाहोपशमनार्थं वानराणां मेदांसि आवश्यकम्?
   (ग) **दुष्टेन** भूपतिना सह मे अत्यन्तं वैरम्।
   (घ) **दुष्टं राजानं** प्रलोभ्य तं सरसि प्रवेक्षयामि।
   (ङ) **राजा** वानरेण सह वनं गतवान्।

4. **सन्धिविच्छेदं कुरुत –**
   (क) तदाहम् = ...
   (ख) लोभाभिभूतः = ...
   (ग) अर्धोदिते = ...
   (घ) वानरोक्तविधिना = ...
   (ङ) तर्ह्यहम् = ...

5. **(अ) भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –**
   (क) अश्वाः, वानराः, दग्धाः, मेषाः
   (ख) भृशम्, अश्वम्, राजानम्, वृक्षम्
   (ग) ज्ञातवान्, चिन्तितवान्, धनवान्, कारितवान्
   (घ) उपगतः, आहूतः, अतः, भूषितः

   (ब) विशेषणैः सह विशेष्याणि योजयत् –

बद्धाः	सूर्यस्य
रत्नमालाभूषितः	राजा
रत्नमालासनाथम्	अश्वाः
दुष्टेन	राक्षसः
अर्धोदिते	भूपतिना
उदये	सरः

6. **घटनाक्रमं संयोज्य लिखत –**
   (क) राक्षसदत्तां मालां धारयित्वा वानरः नगरं प्रविष्टः।
   (ख) वानरयूथपतिः इमं वृत्तान्तम् अशृणोत्।
   (ग) कमलनालसहायतया जलं पिबन्तं वानरं राक्षसः मनोवाञ्छितं प्रार्थनाय अकथयत्।
   (घ) अश्वशालायां दैवदुर्विपाकात् अनेके अश्वाः दग्धाः।
   (ङ) लोभाविष्टः राजा सपरिवारः वानरेण सह वनं गतवान्।
   (च) अश्वानां दाहोपशमनार्थं वानराणां मेदांसि अपेक्ष्यन्ते।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

ग्रन्थपरिचय – राजा अमरशक्ति के मूर्ख पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के उद्देश्य से विष्णु शर्मा द्वारा पञ्चतन्त्र की रचना की गयी है। इसमें पाँच खण्ड है – मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक। पञ्चतन्त्र में कुल 70 कथाएँ तथा 900 श्लोक हैं। इस ग्रंथ का भारत में ही नहीं विदेशों में भी बहुत प्रचार है। पाठ में संकलित कथा का उद्देश्य लालच के दुष्परिणाम से छात्रों को अवगत कराना है।

सम्बद्ध श्लोक

1. **अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।**
   अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके॥
2. **लोभात्क्रोधः प्रभवति लोभात्कामः प्रजायते।**
   लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य कारणम्॥
3. **लोभाविष्टो नरो वित्तं वीक्षते, न स चापदम्।**
   दुग्धं पश्यति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम्॥
4. **मातरं पितरं पुत्रं भ्रातरं वा सुहृत्तमम्।**
   लोभाविष्टो नरो हन्ति स्वामिनं वा सहोदरम्॥

भाषा-विस्तार

क्त-क्तवतु-प्रत्यय

(क) क्त प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक क्रिया के अर्थ में [कर्मवाच्य में] होता है।
(ख) इसमें 'त' शेष रह जाता है।
(ग) इसका कर्ता-तृतीया में, कर्म-प्रथमा में, तथा क्रिया-कर्म के अनुसार होती है
(घ) क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिंगों में इस प्रकार चलते हैं –

पुं.	नपुं.	स्त्रीलि.
हतः	हतम्	हता
दैवः	फलम्	लता

यथा –

1. रामेण रावणः हतः। (हन्+क्त)
2. पुत्रेण पिता सेवितः। (सेव्+क्त)
3. राधया वस्त्राणि क्षालितानि। (क्षाल्+क्त)
4. मया प्रातः भगवद्गीता पठिता। (पठ्+क्त)

क्तवतु प्रत्यय

(क) क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक क्रिया के अर्थ में [कर्तृवाच्य] में होता है।

(ख) इसका 'तवत्' शेष रह जाता है।

(ग) इसके कर्ता में प्रथमा, तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया-कर्ता के अनुसार चलती है।

(घ) तीनों लिंगों में इसके रूप निम्न प्रकार से चलते हैं

पुल्लिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
पठितवान्	पठितवत्	पठितवती
भवान्	मरुत्	नदी

यथा –

1. राम: व्याकरणं पठितवान् (पठ्+क्तवतु)
2. वृक्षात् फलं पतितवत्। (पत्+क्तवतु)
3. माला ग्रामं गतवती (गम्+क्तवतु)

राजन् शब्द रूप अजन्त पुल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. वि.	राजा	राजानौ	राजान:
द्वि. वि.	राजानम्	"	राज्ञ:
तृ. वि.	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
च. वि.	राज्ञे	"	राजभ्य:
पं. वि.	राज्ञ:	"	"
ष. वि.	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
स. वि.	राज्ञि/राजनि	"	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

दशमः पाठः

सुभाषितानि

[सुभाषित (अच्छे वचन/विचार) मनुष्य को जीवन में पथ-प्रदर्शक का कार्य करते हैं। प्रस्तुत पाठ संस्कृत वाङ्मय के कतिपय उपयोगी सुभाषितों का संकलन है। यहाँ अच्छे-बुरे कार्य तथा सज्जन-दुर्जन व्यक्ति के लक्षण बताए गये हैं। सुपुत्र (अच्छी सन्तान) के गुणों तथा कार्य को यथासमय करने से होने वाले लाभ से सम्बद्ध सुभाषितों द्वारा छात्रों में सद्वृत्ति तथा व्यावहारिक कुशलता विकसित होगी – ऐसा विश्वास है।]

स्वर-संधि, विभक्ति प्रयोगः

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥1॥
महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥2॥
दुर्जनः प्रियवादी च नैतद् विश्वासकारणम्।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् ॥3॥
मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्। ॥4॥
यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते ॥5॥
दिवसेनैव तत् कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत्।
पूर्वे वयसि तत् कुर्याद्येन वृद्धः सुखी भवेत्॥6॥

[illegible]

सुभाषितम्	–	अच्छे वचन
वासितम्	–	सुगन्धित
महाजनस्य	–	महान व्यक्ति का
संसर्गः	–	सम्पर्क (साथ)
पद्मपत्रम्	–	कमल का पत्ता
तोयं	–	जल
धत्ते	–	धारण करता है
मुक्ताफलश्रियम्	–	मोती की शोभा को
जिह्वाग्रे	–	जीभ के अगले भाग में
हलाहलम्	–	विष
दुरात्मनाम्	–	दुष्टों का (बुरे लोगों का)
पुंसाम्	–	मनुष्यों का
आमोदः	–	सुगन्ध
शपथेन	–	कसम से (शपथ लेकर)
विभाव्यते	–	प्रकट होता है
पूर्वे वयसि	–	छोटी उम्र में

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) कुलं केन वासितम्?
   (ख) कस्य संसर्गः उन्नतिकारकः?
   (ग) पद्मपत्रे स्थितं जलं किं धत्ते?
   (घ) कस्तूरिकामोदः केन न विभाव्यते?
   (ङ) केषां मनसि वचसि कर्मणि च एकरूपता भवति?

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) तोयं मुक्ताफलश्रियं कथं प्राप्नोति?

(ख) वनं कथं वासितं भवति?

(ग) के स्वयम् एव विकसन्ति?

(घ) प्रियवादिनः दुर्जनस्य जिह्वाग्रे हृदये च किं किं भवति?

अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यरचनां कुरुत –

(क) गुणी ....

(ख) हन्ति ....

(ग) रात्रौ ....

(घ) दिवसेन ....

(ङ) वयसि ....

(च) महाजनस्य ....

'क' स्तम्भे दत्तैः विशेषणैः सह 'ख' स्तम्भे दत्तानि विशेष्याणि यथायोग्यं योजयत –

क	ख
सुखी	तोयम्
वासितम्	सुवृक्षेण
प्रियवादी	वयसि
पूर्वे	दुर्जनः
पुष्पितेन	वनम्
पद्मपत्रस्थितम्	वृद्धः

अधोदत्तायाः मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा निर्दिष्टस्तम्भेषु लिखत –

सुवृक्षेण, संसर्गः, मनसि, पुंसाम्, दुरात्मनाम्, महाजनस्य, प्रियवादी, सुपुत्रेण, तोयम्, मधु, कर्मणि, वचसि, दिवसेन, रात्रौ, वयसि, सुखी, येन, महात्मनाम्, एकेन

'क' (प्रथमा)	'ख' (तृतीया)	'ग' (षष्ठी)	'घ' (सप्तमी)
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

सुभाषित का अर्थ है सुन्दर वचन। प्रस्तुत पाठ में 6 श्लोकों में सुन्दर वचनों का संकलन किया गया है। नीचे दी गई पाठान्तर्गत श्लोकों की समानान्तर सूक्तियों/पद्यों का अध्ययन करें।

(क) वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च॥

(ख) एकेनाऽपि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी॥

(ग) सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत संगतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्॥

(घ) दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्॥

(ङ) नारिकेलसमाकाराः दृश्यन्तेऽपि हि सज्जनाः।
अन्ये बदरिकाकाराः बहिरेव मनोहराः॥

भाषा-विस्तार

क. स्वरसन्धि की आवृत्ति

निम्नलिखित स्वर सन्धियों के उदाहरणों को ध्यान से देखें-

(i) **यण् सन्धि** – इ, उ ऋ तथा लृ स्वरों के बाद अच् वर्ण के होने पर इ उ ऋ तथा लृ को क्रमशः य्, व्, र् और ल् हो जाता है।

यथा –

विकसन्त्येव	=	विकसन्ति	+	एव
मनस्यन्यत्	=	मनसि	+	अन्यत्
वचस्यन्यत्	=	वचसि	+	अन्यत्
कर्मण्येकम्	=	कर्मणि	+	एकम्
मनस्येकम्	=	मनसि	+	एकम्
यद्यपि	=	यदि	+	अपि
प्रत्येकम्	=	प्रति	+	एकम्

(ii) **दीर्घ सन्धि**- ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, तथा ऋ वर्ण हों तो दोनों मिलकर दीर्घ (अ + अ = आ) हो जाते हैं। **यथा** –

कस्तूरिकामोदः	=	कस्तूरिका	+	आमोदः
एकेनापि	=	एकेन	+	अपि
वाचनालयः	=	वाचन	+	आलयः

(iii) **गुणसन्धि**- ह्रस्व या दीर्घ अ के पश्चात् इ, उ तथा ऋ वर्ण हो तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। **यथा** –

नोन्नतिकारकः	=	न	+	उन्नतिकारकः
परोपकारः	=	पर	+	उपकारः
नरेन्द्रः	=	नर	+	इन्द्रः

(iv) **वृद्धिसन्धि**- ह्रस्व या दीर्घ अ के पश्चात् ए, ऐ अथवा ओ, औ हो तो दोनों मिलकर क्रमशः ऐ और औ हो जाते हैं। **यथा** –

दिवसेनैव	=	दिवसेन	+	एव
नैतत्	=	न	+	एतत्
परमौषधिः	=	परम	+	औषधिः

ख. पाठान्तर्गत - तृतीया -विभक्त्यन्तपद

1. एकेन 2. सुवृक्षेण 3. पुष्पितेन 4. सुगन्धिना 5. दिवसेन 6. सुपुत्रेण 7. शपथेन

ग. षष्ठ्यन्त पद

1. महाजनस्य 2. कस्य 3. पुंसाम्

घ. सप्तम्यन्त पद

1. जिह्वाग्रे 2. हृदये 3. मनसि 4. वचसि 5. कर्मणि 6. रात्रौ 7. पूर्वे 8. वयसि

एकादशः पाठः

प्रकृतेः विलापः

[प्रस्तुत पाठ्यांश एक पर्यावरण सुधार को लक्ष्य कर लिखा गया संवादपरक पाठ है। इसमें नदी और वृक्ष के परस्पर वार्तालाप द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि नदियाँ रासायनिक तत्त्वों से किस सीमा तक प्रदूषित हो रही हैं तथा निरन्तर काटे जाने से वृक्षों का कैसा विनाश हो रहा है? पाठ का प्रारम्भ गर्मी से व्याकुल दो मित्रों के वार्तालाप से होता है। नदी में स्नान करते समय उन्हें प्रकृति (नदी और वृक्ष) की वेदना सुनाई देती है।]

सर्वनाम – यत्, भवान्, अस्मद्, युष्मद्

(ग्रीष्मर्तौ विद्युदभावे प्रचण्डोष्मणा पीडितः प्रत्यूषः गृहात् निष्क्रम्य)

प्रत्यूषः : ऊष्मणः पीडितोऽस्मि। एकतः प्रचण्डातपकालः अन्यतश्च विद्युदभावः। शरीरात् न केवलं स्वेदबिन्दवः अपितु स्वेदधाराः प्रस्रवन्ति। अये, प्रणवः अपि इत एव आयाति।

प्रणवः : (आगत्य) वयस्य! घर्मोष्मणा व्याकुलोऽहम्।

प्रत्यूषः : अहमपि तथैव। आगच्छ, नदीतीरं गच्छावः।

(उभौ नदीतीरं गच्छतः। मार्गे एकं सरः दृष्ट्वा)



प्रणवः : प्रत्यूष! पश्य अस्मिन् सरसि एकतः विकसितानि अन्यतश्च निमीलितानि कमलानि। एतत् कथं सम्भवति?

प्रत्यूषः : मित्र! कमलपुष्पाणि द्विविधानि भवन्ति। यानि सूर्योदयकाले विकसन्ति सूर्यास्ते च निमीलन्ति तानि पद्मानि। यानि च विकासार्थं चन्द्रोदयमपेक्षन्ते तानि कुमुदानि इति।

(वार्तालापं कुर्वन्तौ तौ नदीतीरं प्राप्तौ नदीजले च निमज्जतः)

प्रणवः : हा हा हा! आनन्दप्रदोऽयं जलविहारः।

प्रत्यूषः : आम्, वयस्य! सत्यमुक्तं भवता। शीतलेऽस्मिन् जले मन्देन समीरेण च मनः प्रसीदति।

प्रणवः : कीदृशं शोभनं दृश्यम्। मत्स्याः सरसि क्रीडन्ति। मण्डूकाः इतस्ततः प्लवन्ते। तटे समाहिताः कूर्माः जनानां सम्मर्दात् भीताः सरः प्रविशन्ति। *(सहसा श्रूयते विषादमयः रोदनध्वनिः)* हा धिक्! हा धिक्! कीदृशं मम जीवनं जातम्।

प्रत्यूषः : *(इतस्ततः निरूप्य)* – नद्याः स्वरः इव प्रतीयते। *(अन्यतः अपि ध्वनिः श्रूयते)* ममापि च जीवनम् अत्यन्तं कष्टप्रदं जातम्।

प्रणवः : *(साश्चर्यं विलोकयन्)* वृक्षस्य स्वरः इव श्रूयते। *(द्वावेव ध्यानेन परस्परमवलोकयतः)*

नदी : का तव समस्या? मम तीरे आनन्देन उच्चस्थः गगनेन सह वार्तां करोषि। मां पश्य, जनाः रासायनिकैः अवकरैः मम जलं दूषयन्ति। कच्छपाः, मकराः, मत्स्यादयः सर्वे जलचराः संत्रस्ताः सन्ति।

वृक्षः : आम्, तव कथनं तु सत्यमेव परं मम व्यथा त्वत्तोऽपि अधिका। त्वं प्रवहन्ती जीविता तु असि परं निरन्तरं कर्तनेन वयं तु समूलाः एव नष्टाः भवामः।

(नदीवृक्षयोः एतादृशं विषादं श्रुत्वा उभौ परस्परम् आलपतः)

प्रत्यूषः : नदीवृक्षादयः प्रकृतेः उपहाराः। किन्तु अस्माभिः एते कीदृशीं दशां प्रापिताः।

प्रणवः : आम्, पश्य! तटे वर्तुलाकारेण स्थितेयं वृक्षावलिः। मनसि एतावतीं व्यथां वहन्नपि वृक्षाः समागतेभ्यः फलानि अर्पयन्ति।

प्रत्यूषः : निदाघेऽस्मिन् एषा नदी अपि स्वशीतलेन जलेन अस्मान् आनन्दयति।

प्रणवः : अहं अनुभवामि यत् येन केन प्रकारेण वृक्षकर्तनं जलप्रदूषणञ्च अवरोधनीये। अयमेव अस्माकं सङ्कल्पः स्यात्।

प्रत्यूषः : साधु! मिलित्वा एतदर्थं जनजागरणाय यत्नं करिष्यावः।

शब्दार्थाः

विद्युदभावे – विद्युत् + अभावे = बिजली के अभाव में

प्रचण्डोष्मणा – प्रचण्ड + ऊष्मणा = तेज (गर्मी) से

आतपकालः – ग्रीष्म ऋतु

स्वेदबिन्दवः – पसीने की बूँदें

प्रस्रवन्ति – फूट रही हैं, निकल रही हैं

आयाति – आता/आती है, आ रहा/रही है

घर्मोष्मणा – धूप के ताप से

निमीलितानि – बन्द

निमज्जतः – डुबकी लगाते हैं/स्नान करते हैं।

वयस्य – मित्र

समीरेण – हवा से

प्लवन्ते – तैरते हैं

संमर्दात् – दबने से

विषादमयः – दुःखभरी

निरूप्य – देखकर

उच्चस्थ – ऊपर स्थित

प्रवहन्ती – बहती हुई

यापयसि – बिताती हो

कर्तनेन – काटने से

प्रापिताः – पहुँचा दी गई हैं

वर्तुलाकारेण – गोलाकार

वृक्षावलिः – पेड़ों की पंक्ति

व्यथा – कष्ट, पीड़ा

निदाघे – भीषण गर्मी में

अवकरैः – कूड़े-कचरे से

संत्रस्ताः – परेशान (दुःखी)

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –
   (क) प्रणवः केन पीडितः?
   (ख) कस्मात् भीताः कूर्माः सरः प्रविशन्ति?
   (ग) कानि पुष्पाणि चन्द्रोदयं अपेक्षन्ते?
   (घ) के समूलाः नष्टाः भवन्ति?

लिखितः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –
   (क) प्रत्यूषस्य मनः कथं प्रसीदति?
   (ख) जनाः नद्याः जलं कथं दूषयन्ति?
   (ग) वृक्षाः समागतेभ्यः किं यच्छन्ति?
   (घ) प्रणवप्रत्यूषयोः कः सङ्कल्पः आसीत्?

3. अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति?

	कः	कम् प्रति
(क) वयस्य! घर्मोष्मणा व्याकुलोऽहम्।	....	....
(ख) नद्याः स्वरः इव प्रतीयते।	....	....
(ग) मम व्यथा तु त्वत्तोऽपि अधिका।	....	....
(घ) प्रकृतेः उपहाराः अस्माभिः अद्य कीदृशीं दशां प्रापिताः?	....	....

4. मञ्जूषातः विशेषणपदानि विचित्य विशेष्यपदानां प्राक् लिखत –

	विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि
(क)	....	जले
(ख)	....	कूर्माः
(ग)	....	रोदनध्वनिः
(घ)	....	वृक्षावलिः
(ङ)	....	व्यथाम्

भीताः, विषादमयः, कीदृशीम्, शीतले, वर्तुलाकारा

अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यरचनां कुरुत –

(क) इतस्ततः ....

(ख) शरीरात् ....

(ग) ऊष्मणः ....

(घ) एकतः ....

(ङ) अन्यतः ....

(च) सम्मर्दात् ....

(छ) त्वत्तोऽपि ....

भाव-विस्तार

सत्पुरुषों का जीवन परोपकार के लिए होता है। नदियाँ दूसरों के लिए बहती हैं तथा वृक्ष भी दूसरों के लिए फल एवं छाया प्रदान करते हैं –

परोपकाराय वहन्ति नद्यः
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।

वैज्ञानिक सुविधाओं को प्राप्त कर हम प्राकृतिक सुविधाओं को भूलते जा रहे हैं। इस तरह हम वैज्ञानिक सुविधाओं के आश्रित बन गए हैं। यदि हम प्राकृतिक सुविधाओं का उपयोग करें तो विज्ञान पर आश्रित रहने की हमारी प्रवृत्ति में सुधार होगा और प्रकृति से होने वाले उपकार का हम लाभ भी उठा सकेंगे।

वृक्षों के उन्मूलन से औषधि, वनस्पति आदि प्राकृतिक सम्पदा का नाश हो रहा है। अतः हमें इनको बचाने का उपाय करना चाहिए तथा वृक्षारोपण भी करना चाहिए जिससे उन्मूलन से होने वाली हानि को पूरा किया जा सके।

भाषा-विस्तार

जो शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों का प्रयोग पाठ में हुआ है – सर्व, उभ्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, किम्। इन सर्वनामों में केवल 'अस्मद्' एवं 'युष्मद्' के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। **यथा** –

प्रणवः – अहम् अधुना विद्यालयं गच्छामि। (पुल्लिङ्ग)

नदी – अहम् अधुना प्रदूषिता जाता। (स्त्रीलिङ्ग)

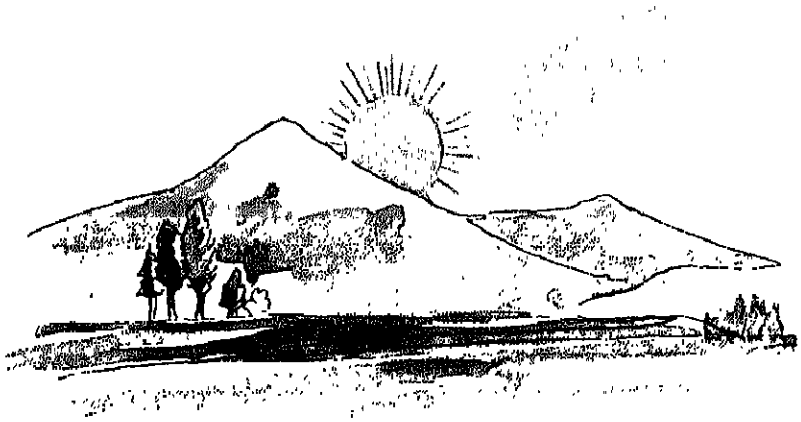
शेष सर्वनाम शब्दों के तीनों लिङ्गों में भिन्न रूप होते हैं। सर्वनाम शब्दों के सम्बोधन नहीं होते हैं।

द्वादशः पाठः

सूर्यस्य शक्तिः

[प्रस्तुत पाठ सूर्य की शक्तियों को आधार मानकर विकसित किया गया एक लघु निबन्ध है। भगवान् सूर्य की शक्ति से समस्त ब्रह्माण्ड प्रकाशमान है। इसे सभी शक्तियों का मूल-स्रोत माना जाता है। सूर्य के कतिपय गुणों की चर्चा करते हुए बताया गया है कि काल, ऋतुओं तथा दिन और रात के नियामक भगवान सूर्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के नियन्ता हैं। आधुनिक विज्ञानवेत्ता भी सूर्य की अपारशक्तियों को स्वीकार करते हैं तथा इस संदर्भ में निरन्तर नए-नए शोध कर रहे हैं।]

(अव्यय, सन्धि)



अस्मिन् ब्रह्माण्डे बहूनि ग्रहनक्षत्राणि सन्ति। आकाशे दृश्यमानेषु मंगल बुध-गुरु आदिषु ग्रहनक्षत्रेषु सूर्योऽपि एकं नक्षत्रमस्ति। अस्य प्रकाशेनैव पृथ्वीचन्द्रादयः प्रकाशन्ते। नक्षत्रमेतत् ऊर्जसः महास्रोतः अस्ति। अनेनैव जगदिदं गतिशीलमस्ति। वैज्ञानिकाः अस्योर्जसं प्रति विशेषेण उन्मुखाः सन्ति। सूर्यः संसारस्य प्रकाशकः। अयम् न केवलं तम एव नाशयति

अपितु कालस्यनियामकत्वात् मासानाम् ऋतूनां च जनकोऽप्यस्ति। अस्योष्मणः आधिक्येन वसन्त-ग्रीष्म-वर्षाः, अनाधिक्येन च शरद्धेमन्तशिशिराश्च ऋतवः भवन्ति।

आधुनिके युगे यन्त्रादीनां संचालनाय, पाककर्मणि च सूर्योर्जसः उपयोगः क्रियते। ग्रामेषु यत्र विद्युत्साधनानि अल्पीयानि सन्ति तत्र दिने यन्त्रमाध्यमैः एकत्रितं सूर्योर्जः विद्युदिव प्रयुज्यते। इदानीं कृषिकर्मस्वपि अस्योपयोगः क्रियते। कूपजलैः क्षेत्राणां सेचनार्थं नूतनानि यन्त्राणि सूर्यशक्त्या संचालितानि सन्ति।

जीवानां स्वास्थ्याय अपि सूर्यस्य महती भूमिकास्ति। कतिपयाः योगक्रियाः अस्यातपे एव क्रियन्ते। अस्य रश्मीनां प्रभावेण अनेके त्वचः रोगाः नश्यन्ति। ऋषेः अथर्वणः मते उदीयमानस्य सूर्यस्य रश्मिभिः अर्धशिरोवेदना दूरीकर्तुं शक्यते। अतः चिकित्साक्षेत्रेऽपि प्राकृतिकचिकित्सारूपेण सूर्यः अस्माकम् उपकारकः। शारीरिकशास्त्रे सूर्यस्य रश्मिसेवनं 'सूर्यस्नानम्' इति रूपेण प्रसिद्धम्। अनया क्रियया सूर्योर्जसः 'विटामिन डी' इति प्राप्यते या स्वास्थ्यस्य संपोषिका स्वीक्रियते।

एवमेव पर्यावरणरक्षणे अपि सूर्यस्य अवदानम् अविस्मरणीयमस्ति। यतो हि अस्य रश्मयः जले शैत्यं पावनत्वञ्च सम्पादयन्ति। पादपानां वनस्पतीनां च विकासोऽपि सूर्यस्योष्माणं विना न सम्भवति। अस्य रश्मीनामभावे एषा वनसम्पदा विनष्टा एव स्यात्। अतः भूतले सर्वेषां जीवनं सूर्याधारितमेव। अनेन प्रकारेण सूर्यः अस्मभ्यं जीवनम् ऊर्जश्च दत्वा महदुपकरोति। एभिरेव गुणैः जनाः एतम् उपासन्ते।

शब्दार्थाः

ऊर्जसः	-	ऊर्जा का (शक्ति का)
प्रकाशकः	-	प्रकाश करने वाला
जनयिता	-	उत्पन्न करने वाला
जनकः	-	पिता
ऊष्मणः	-	गर्मी का
पाककर्मणि	-	खाना बनाने के कार्य में
सेचनार्थम्	-	सिंचाई के लिए
कतिपयाः	-	कुछ

आतपे	–	धूप में
रश्मीनां	–	किरणों के
त्वचः	–	त्वचा के
उदीयमानस्य	–	उगते हुए का

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) सूर्यः कस्य महास्रोतः अस्ति?
   (ख) दिनरात्र्योः जनयिता कः?
   (ग) सूर्यस्य रश्मीनां प्रभावेण के रोगाः नश्यन्ति?
   (घ) सूर्योर्जसः किं नाम विटामिन प्राप्यते?
   (ङ) पर्यावरणरक्षणे कस्य अवदानम् अविस्मरणीय?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) आधुनिके युगे सूर्योर्जसः उपयोगः कुत्र क्रियते?
   (ख) सूर्यस्योष्मणः आधिक्येन के ऋतवः भवन्ति?
   (ग) सूर्यस्य रश्मयः जले किं सम्पादयन्ति?
   (घ) सूर्यः अस्मभ्यं किं दत्त्वा महदुपकरोति?
   (ङ) कस्य ऋषेः मते सूर्यस्य रश्मिसेवनेन अर्धशिरोवेदनां दूरीकर्तुं शक्यते?
3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) क्षेत्राणां सेचनार्थं नूतनानि यन्त्राणि **सूर्यशक्त्या** संचालितानि सन्ति।
   (ख) **सूर्यस्य** प्रकाशेनैव पृथ्वीचन्द्रादयश्च प्रकाशन्ते।
   (ग) **पादपानां** विकासः सूर्योष्माणं विना न सम्भवति।
   (घ) जीवानां **स्वास्थ्यायापि** सूर्यस्य महती भूमिका अस्ति।
   (ङ) सूर्यस्य रश्मीनामभावे **वनसम्पदा** विनष्टा स्यात्।
4. **कोष्ठकात् उचितं पदं विचित्य रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत –**
   (क) सूर्येणैव इदं .... गतिशीलमस्ति। (विद्युत्/मरुत्/जगत्)

(ख) कृषिकर्मसु .... उपयोगः क्रियते। (सूर्योर्जसः/चन्द्रोर्जसः/विद्युत्-ऊर्जसः)

(ग) कालस्य नियामकत्वात् सूर्यः .... जनकोऽप्यस्ति।
(नगराणाम्/मासानाम्/ग्रामाणाम्)

(घ) .... योगक्रियाः सूर्यस्यातपे क्रियन्ते।(सर्वाः/कतिपयाः/नगण्याः)

(ङ) चिकित्साक्षेत्रेऽपि .... रूपेण सूर्यः अस्माकम् उपकारकः।
(प्राकृतिकचिकित्सा/शल्यचिकित्सा/ होम्योपैथिक चिकित्सा)

सूर्यस्य महत्त्वं प्रतिपादयन् पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदम् एकं लिखत।

सन्धि/संधिछेदं वा कुरुत –

चन्द्रोदयः = ... + ...

अनेन + एव = ...

अस्य + ऊर्जसः = ...

भूमिकास्ति = ... + ...

अनाधिक्येन = ... + ...

सूर्य + आधारितम् = ...

[illegible]

भाव-विस्तार

अधोलिखित सूर्यविषयक मन्त्र पढ़कर सूर्य की स्तुति की जाती है।

गायत्रीमंत्र – क. **ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

ख. **ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव।**

ग. **आदिदेव! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।**
दिवाकर! नमस्तुभ्यं, प्रभाकर! नमोऽस्तुते।।
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतरत्नप्रभं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

भाषा-विस्तार

पाठान्तर्गत निम्नलिखित व्याकरण बिन्दुओं को देखें तथा समझें।

क. विपरीतार्थकाः शब्दाः

प्रकाशः – तमः

आधिक्येन – अनाधिक्येन

दिनम् – रात्रिः

आधुनिके - पुरातने
उपकारकः - अपकारकः
उपयोगः - अनुपयोगः
गुणैः - अवगुणैः

ख. पर्यायवाचिनः शब्दाः

रश्मयः - किरणः
आकाशे - गगने
सूर्यः - रविः
भूमिः - पृथ्वी
जगत् - संसारः
तमः - अन्धकारः
पवित्रं - पावनं
वृक्षाणाम् - पादपानाम्

ग. नपुंसकलिङ्ग शब्दाः

विशेषण - विशेष्य
बहूनि - नक्षत्राणि
नूतनानि - यन्त्राणि
गतिशीलं - जगत्
एकत्रितं - सूर्योर्जः
चञ्चलं - विद्युत्

घ. निम्नलिखित वाक्यों के स्थूल पदों में अव्ययपदों की आवृत्ति का अभ्यास करें-

1. सूर्यः **अपि** एकं नक्षत्रम् अस्ति।
2. वैज्ञानिकाः अस्य ऊर्जसं **प्रति** उन्मुखाः सन्ति।
3. सूर्यः **केवलं** तमः **एव न** नाशयति **अपितु** मासानां ऋतूनां जनकोऽप्यस्ति।
4. ग्रामेषु **यत्र** विद्युत्साधनानि न सन्ति **तत्र** दिने एकत्रितं सूर्योर्जः प्रयुज्यते।
5. अतः चिकित्साक्षेत्रेऽपि सूर्यः अस्माकम् उपकारकः।
6. सूर्योर्जः 'विटामिन डी' इति प्राप्यते।
7. पादपानां वनस्पतीनां **च** विकासः सूर्यं विना न सम्भवति।

त्रयोदशः पाठः

वीरवरस्य स्वामिभक्तिः

[प्रस्तुत पाठ 'वेतालपञ्चविंशतिका' नामक कथा ग्रंथ से संपादित कर लिया गया है। इसमें राजा शूद्रक की सेवा में प्रथमवार नियुक्त किसी वीरवर नामक कर्तव्यनिष्ठ राजपुत्र की विशेषताओं का वर्णन है। वह राजा एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों को देने के लिए भी तैयार हो जाता है। उसकी स्वामिभक्ति एवं राष्ट्र के प्रति संपूर्ण समर्पण की भावना देशभक्तों के लिए अनुकरणीय है।]

ल्यप्, याच्, स्म

पुरा 'शोभावती' इति नगर्यां शूद्रको नाम शूरः प्रजावत्सलः च राजा अभूत्। एकदा तस्य राजसभायां कश्चन वीरवरो नाम राजपुत्रः सेवार्थम् आगतः। सः राजानं स्ववृत्तये प्रतिदिनं दीनारशतपञ्चकम् अयाचत्। अमात्यैः सह विचारविमर्शं कृत्वा राजा तावतीं वृत्तिं स्वीकृतवान्।

वीरवरः नित्यं प्रातः राज्ञः दर्शनं विधाय धृतायुधः सिंहद्वारे स्थित्वा सिंहद्वारं रक्षति स्म मध्याह्ने च निजावासं गच्छति स्म। ततश्च स्ववृत्तिलब्धानां दीनाराणां शतं भोजनार्थं, शतं च अङ्गरागताम्बूलादिक्रयणे, शतं विष्णोः शिवस्य च पूजार्थं व्ययं करोति स्म। विप्रेभ्यश्च दीनेभ्यश्च स शतद्वयं दानरूपेण ददाति स्म। एवञ्च पञ्चापि शतानि नित्यमसौ विभजति स्म। पुनश्च निशि करे करवालं धृत्वा सिंहद्वारं रक्षति स्म। राजापि स्वानुचरैः तस्य एतादृशीं दैनन्दिनीं ज्ञात्वा हृदये महान्तं सन्तोषम् अन्वभवत्।

अथैकदा कृष्णचतुर्दश्यां गहनान्धकारे रात्रौ स राजा कस्या अपि क्रन्दनध्वनिम् अशृणोत्। शूद्रकः तस्या ध्वनेः निरूपणाय वीरवरम् आदिशत्। वीरवरः ध्वनिमनुसरन् अगच्छत्। अयमेकाकी एव मया सूचिभेद्ये तमसि प्रेषितः। नैतदुचितं कृतम् इति चिन्तयित्वा राजापि खड्गम् आदाय वीरवरं गुप्तरूपेण अन्वसरत्। नगर्याः बहिः वीरवरेण सरःमध्ये रुदती

काचित् स्त्री दृष्टा पृष्टा च-"का त्वम्? किमर्थं रोदिषि?" सा स्त्री उवाच - अहमस्य देशस्य राज्ञः राजलक्ष्मीः। अद्यतः तृतीयेऽहनि राज्ञो मरणं ध्रुवमिति परिज्ञाय खेदादनुशोचामि।



वीरवरोऽवदत्- यत्रापायः संभवति तत्रोपायोऽपि अस्ति। ततः केन उपायेन स प्रभुः रक्षणीयः लक्ष्मीरुवाच- यदि त्वमात्मानं भगवत्यै सर्वमङ्गलायै उपहारीकरोषि तदा राजापि चिरं जीविष्यति, अहमपि चात्र चिरं स्थास्यामि।" एतच्छ्रुत्वा वीरवरः सर्वमङ्गलां सम्पूज्य यदैव खड्गमादाय शिरश्छेदनाय उद्यतोऽभवत् तदैव भगवती सर्वमङ्गला आशीर्वचोभिः वीरवरम् उवाच – "पुत्र! अनेन ते सत्त्वोत्कर्षेण स्वामिभक्त्या च संतुष्टाऽस्मि। 'तव राजा चिरं जीवतु' इत्युक्त्वा सा अदृश्याभवत्। राजापि तेनालक्षितः राजभवनं प्रत्यागच्छत्।

वीरवरोऽपि शीघ्रमेव प्रत्यागत्य पूर्ववद् सिंहद्वारमसेवत्। भूपतिना पृष्टः सः 'देव! सा रुदती स्त्री मामवलोक्यादर्शनं गता। अतः न काऽपि वार्ता अभवत्' इति सादरं विज्ञापयामास। तद्वचनमाकर्ण्य राजा अचिन्यत् – कथमयं श्लाघ्यः महासत्त्वः। ततः सः राजा प्रातः राजसभाम् आहूय रात्रिवृतान्तं सर्वेभ्यः विज्ञाप्य तस्मै वीरवराय कर्नाटकराज्यमयच्छत्।

शब्दार्थाः

अभूत्	–	हुआ
द्विजः	–	ब्राह्मण
सेवार्थम्	–	नौकरी के लिए
स्ववृत्तये	–	अपने वेतन के लिए
दीनारशतपञ्चकम्	–	पाँच सौ दीनार
अमात्यैः	–	मन्त्रियों के साथ
तावतीम्	–	उतनी
राज्ञः	–	राजा का
धृतायुधः	–	हथियार पकड़कर
अङ्गरागताम्बूलादिक्रयणे	–	प्रसाधन सामग्री व पान आदि के खरीदने में
करे	–	हाथ में
करवालम्	–	तलवार
स्वानुचरैः	–	अपने दूतों से
दैनन्दिनीम्	–	प्रतिदिन का कार्य
कृष्णचतुर्दश्याम्	–	कृष्णपक्ष की चौदहवीं तिथि को
क्रन्दनध्वनिम्	–	रोने की आवाज को
अन्वसरत्	–	अनुसरण किया
सूचिभेद्ये	–	सूई से भेदन योग्य, बहुत घना
तमसि	–	अंधकार में
सरःमध्ये	–	तालाब के बीच में
अहनि	–	दिन में
खेदात्	–	कष्ट से
अपायः	–	अनिष्ट, विघ्नबाधा
स्थास्यामि	–	रहूँगा/रहूँगी
चिरम्	–	बहुत दिनों तक
एतच्छ्रुत्वा	–	यह सुनकर
श्लाघ्यः	–	प्रशंसनीय
निस्तारः	–	(वेतन की) अदायगी, चुकौती
सत्वोत्कर्षेण	–	साहस की प्रमुखता से

विज्ञापयामास	–	बताया (विज्ञापित किया)
महासत्वः	–	महापुरुष

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) वीरवरो नाम राजपुत्रः किमर्थम् आगतः?
   (ख) राजा कैः सह विचारविमर्शं कृत्वा वीरवरस्य वृत्तिं स्वीकृतवान्?
   (ग) सूचिभेद्ये तमसि राज्ञा कः प्रेषितः?
   (घ) राजा वीरवरेण अलक्षितः कुत्र प्रत्यागच्छत्?
   (ङ) शूद्रकः वीरवराय किं नाम राज्यम् अयच्छत्?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) वीरवरस्य वर्त्तनं किमासीत्?
   (ख) राजा रात्रौ गहनान्धकारे किम् अशृणोत्?
   (ग) वीरवरं प्रेषणानन्तरम् राज्ञा किं चिन्तितम्?
   (घ) सर्वमङ्गला आशीर्वचोभिः वीरवरं किम् उवाच?
3. **स्थूलपदान्यवलम्ब्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) राजापि तेनालक्षितः **राजभवनं** प्रत्यागच्छत्।
   (ख) वीरवरः करे करवालं धृत्वा **सिंहद्वारं** रक्षति स्म।
   (ग) सा रुदती स्त्री **शूद्रकस्य** राजलक्ष्मीः आसीत्।
   (घ) **भूपतिना** पृष्टः वीरवरः अकथयत्।
4. **अधोलिखितानि वाक्यानि कः/का कं/कां च प्रति कथयति इति उदाहरणनुसृत्य लिखत–**

यथा –	कः/का	कं/कां प्रति
का त्वम्, किमर्थं रोदिषि?	वीरवरः	लक्ष्मीं प्रति
(क) त्वमात्मानं भगवत्यै सर्वमङ्गलायै उपहारीकरोषि	....	....

(ख) स्वगृहं गच्छ तव राजा चिरं जीवतु। ....

(ग) यत्रापायः संभवति तत्रोपायः अपि अस्ति। ....

5. **अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण लिखत –**

(क) रात्रौ कस्याः अपि क्रन्दनध्वनिं श्रुत्वा राजा वीरवरं प्रेषितवान्।

(ख) राजा वीरवराय कर्नाटकं राज्यमयच्छत्।

(ग) वीरवरेणालक्षितः राजा राजभवनं प्रत्यागच्छत्।

(घ) शूद्रकस्य सभायां वीरवरः सेवार्थमागच्छत्।

(ङ) वीरवरः स्ववृत्तये दीनारशतपञ्चकं राजानमयाचत्।

(ञ) वीरवरः स्वशिरश्छेदनाय उद्यतोऽभवत्।

(च) प्रतिदिनं वीरवरः करे करवालं धृत्वा सिंहद्वारं रक्षति स्म।

(छ) वीरवराय आशीर्वचांसि दत्त्वा सा अदृश्या अभवत्।

6. **(अ) संधिविच्छेदं/संधिं वा कुरुत –**

(क) सेवा + ... = सेवार्थम्

(ख) .... + आयुधः = धृतायुधः

(ग) पूजा + अर्थम् = ...

(घ) .... + ... = यत्रापायः

(घ) गहन + ... = गहनान्धकारे

(ङ) अथ + एकदा = ...

(ञ) .... + ... = ममोपयोगः

(ब) शूद्रकस्य वीरवरस्य च विशेषणानि मञ्जूषातः चित्वा पृथक्-पृथक् लिखत –

प्रजावत्सलः, धृतायुधः, एकाकी, जगद्रक्षामणिः, शूरः, राजपुत्रः, वीरवरेणालक्षितः, भूपतिना पृष्टः,

शूद्रकः	वीरवरः
....	....
....	....
....	....
....	....

ग्रन्थ-परिचय – राजा त्रिविक्रमसेन को किसी भिक्षुक द्वारा एक रत्नयुक्त फल प्राप्त होता है। भिक्षुक की सहायता के लिए प्रतिबद्ध त्रिविक्रमसेन उसके कहने से वेताल से युक्त एक शव को लाने के लिए श्मशान जाता है। निर्देशानुसार उस शव को मौन रहते हुए ही लाना है। शव को कन्धे पर लादकर राजा वहाँ से चल पड़ता है। चलते हुए राजा के विनोदार्थ वेताल राजा को एक कथा सुनाता है। कथा के अन्त में वह राजा से एक प्रश्न पूछता है। राजा उसके प्रश्न का सही उत्तर देता है। मौन रहने की शर्त के टूटने से वेताल उसी श्मशान पर वापस उड़ जाता है। उसको लाने के लिए राजा फिर से श्मशान जाता है और अपने कन्धे पर उसे लाद कर लाने का उपक्रम करता है। वेताल पुनरपि राजा को एक कथा सुनाता है और अन्त में कहानी से सम्बद्ध राजा से प्रश्न पूछता है जिसका राजा द्वारा सही उत्तर दिया जाता है। मौन रहने की शर्त के टूटने के कारण वेताल पुनरपि उसी श्मशान में चला जाता है। इस प्रकार 25 कहानियों के सुनाने तक यही क्रम चलता रहता है।

भाव-विस्तार

1. **यश्च राज्ञि भवेद् भक्तः सोऽमात्यः पृथिवीपतेः।**
2. **राज्ञो वल्लभतामेति, कुलं भावयते स्वकम्।**
   यस्तु राष्ट्रहितार्थाय प्राणांस्त्यजति दुस्त्यजान्॥

भाषा-विस्तार

इस पाठ में दीर्घ, गुण, यण् एवं वृद्धि इन चारों सन्धियों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। इन सन्धियों को पुनरपि देखें –

दीर्घ

तेनालक्षितः	– तेन	+	अलक्षित	(अ + अ = आ)
धृतायुधः	– धृत	+	आयुधः	(अ + आ = आ)

इसी प्रकार नदीशः, साधूक्तम् इत्यादि दीर्घसन्धि के उदाहरण हैं।

गुण

तत्रोपायः	– तत्र	+	उपाय	(अ + उ = 'ओ')
सत्त्वोत्कर्षेण	– सत्व	+	उत्कर्षेण	(अ + उ = 'ओ')
ममोपयोगः	– मम	+	उपयोगः	(अ + उ = 'ओ')

वृद्धि

तदैव	– तदा	+	एव	(आ + ए = ऐ)

महौषधम्	- महा	+	औषधम्	(अ + औ = औ)
देवैश्वर्यम्	- देव	+	ऐश्वर्यम्	(अ + ऐ = ऐ)

यण्

इत्युक्त्वा	- इति	+	उक्त्वा	(इ = य्)
प्रत्यागच्छत्	- प्रति	+	आगच्छत्	(इ = य्)
स्वागतम्	- सु	+	आगतम्	(उ = व्)

इसी प्रकार मध्वरिः, धात्रंशः, लाकृतिः आदि यण् सन्धि के उदाहरण हैं।

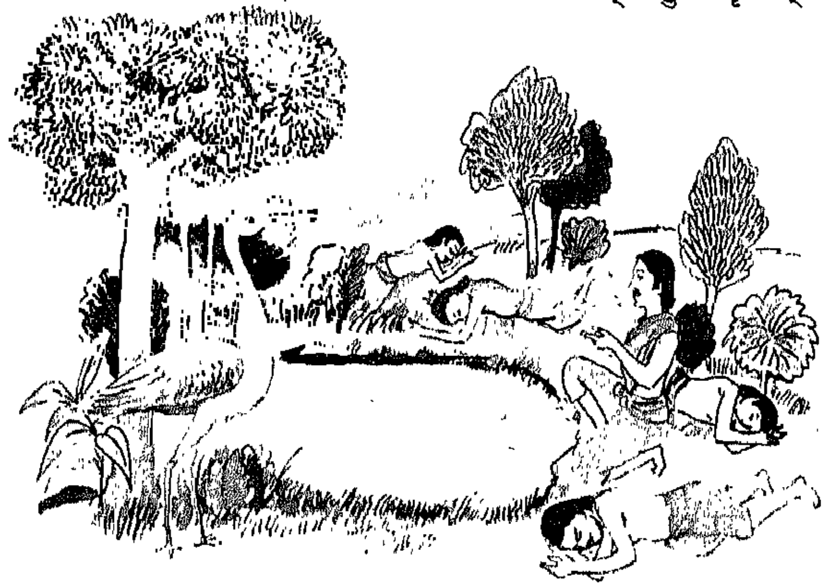
चतुर्दशः पाठः

यक्षयुधिष्ठिर-संवादः

[प्रस्तुत पाठ महाभारत के वन पर्व से लिया गया है। इसमें यक्ष और युधिष्ठिर के वार्तालाप का वर्णन है। वन में प्यासे पाण्डव युधिष्ठिर की आज्ञा से पानी की तलाश में एक तालाब के किनारे गये। वहाँ बकरूपधारी किसी यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए बिना पानी पीने की चेष्टा की। परिणामतः वे वहाँ अचेत हो गये। जब चारों भाइयों में से कोई नहीं लौटे, तब युधिष्ठिर स्वयं वहाँ गये। उन्होंने यक्ष के प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर दिया। इस प्रकार अपने ज्ञान एवं बुद्धिकौशल से यक्ष को प्रसन्न कर उन्होंने अपने अनुजों को पुनर्जीवित करा लिया।]

(किंस्वित्)

यक्ष उवाच - किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्॥



युधिष्ठिर उवाच – माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्॥

यक्ष उवाच – किंस्वित्प्रवसतोमित्रं किंस्विन्मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः॥

युधिष्ठिर उवाच – सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषङ्मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः॥

यक्ष उवाच – भो राजन्! त्वं भ्रातृणां यम् एकम् इच्छसि स जीवतु।

युधिष्ठिर उवाच – 'नकुलो जीवेत्' इति ममाभीष्टम्।

यक्ष उवाच – प्रियस्ते भीमसेनोऽयमर्जुनो वः परायणम्।
स कस्मान्नकुलं राजन् सापत्नं जीवमिच्छसि॥

युधिष्ठिर उवाच – यथा कुन्ती तथा माद्री विशेषो नास्ति मे तयोः।
मातृभ्यां सममिच्छामि नकुलो यक्ष जीवतु॥

यक्ष उवाच – प्रसन्नोऽस्मि राजन् तवोत्तरैः । साम्प्रतं ते सर्वेऽपि भ्रातरो जीवन्तु।

शब्दार्थाः

किंस्विद् – क्या
उच्चतरम् – अधिक ऊँचा
खात् – आकाश से
शीघ्रतरम् – अधिक गतिशील, तेज
वातात् – वायु से
बहुतरम् – बहुत फैलने वाली/ बहुत हल्की
तृणात् – तिनके से
प्रवसतः – विदेश में रहने वाले का
गृहे सतः – घर में रहने पर
आतुरस्य – बीमार का
मरिष्यतः – मरने वाले का
सार्थः – धन (अर्थसहित)
भिषङ् – दवा

वः - तुम सब का
परायणम् - तल्लीन
सापत्नम् - सौतेले भाई (नकुल) को
साम्प्रतम् - इस समय

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत-**
   (क) भूमेः गुरुतरं किम्?
   (ख) नकुलः कस्याः पुत्रः आसीत्?
   (ग) युधिष्ठिरस्य मातुः नाम किम् आसीत्?
   (घ) प्रवसतः मित्रं कः भवति?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**
   (क) यक्ष-युधिष्ठिर-संवादः इति पाठे प्रश्नकर्त्ता कः? उत्तरदाता च कः?
   (ख) एकं भ्रातरं जीवयितुं उद्यतं यक्षं युधिष्ठिरः सर्वप्रथमं किं अकथयत्?
   (ग) युधिष्ठिरः किमर्थं नकुलस्य एव जीवनम् इच्छति स्म?
   (घ) प्रसन्नो भूत्वा यक्षः किम् अकरोत्?
3. **कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-**
   (क) रामदत्तः मम .... अस्ति। (मित्र)
   (ख) चिन्ता .... बहुतरी भवति। (तृण)
   (ग) .... भिषङ् मित्रम्। (आतुर)
   (घ) .... मे भ्राता नकुलः जीवतु। (यक्ष)
   (ङ) किंस्वित् शीघ्रतरं .... । (वायु)
4. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां पदानां कृते समानार्थकपदानि लिखत-**

	पदानि	समानार्थकपदानि
यथा-	आकाशात्	खात्
(क)	वातः	....

(ख) इच्छितम् ....

(ग) औषधिः ....

(घ) रुग्णस्य ....

(ङ) पत्नी ....

5. **उदाहरणमनुसृत्य स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

यथा - उत्तर - **पिता** खात् उच्चतरः ।

प्रश्न - कः खात् उच्चतरः?

(क) वातात् शीघ्रतरं **मनः** ।

(ख) **युधिष्ठिरस्य** भीमसेनः प्रियः ।

(ग) **नकुलः** जीवतु ।

(घ) अर्जुनः **कुन्त्याः** पुत्रः आसीत् ।

6. **(अ) श्लोकांशान् योजयित्वा लिखत-**

(क) माता गुरुतरा - भार्या

(ख) वातात् शीघ्रतरं - चिन्ता

(ग) गृहे मित्रम् - भूमेः

(घ) तृणात् बहुतरी - मनः

(ङ) मरिष्यतः मित्रं - सार्थः

(च) प्रवसतो मित्रं - दानम्

(ब) अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यरचनां कुरुत-

(क) जीवेत् ....

(ख) इच्छसि ....

(ग) खात् ....

(घ) तृणात् ....

(ङ) भूमेः ....

(च) वातात् ....

(छ) कस्मात् ....

योग्यता विस्तार

महाभारत वेदव्यास की प्रसिद्ध रचना है। इसके 18 पर्वों में कौरवों और पाण्डवों के जीवन पर आधारित अनेक घटनाओं का वर्णन है।

भाव-विस्तार

यक्षः – मृतः कथं नरो वा स्यात् कथं राष्ट्रं मृतं भवेत्।
श्राद्धं मृतं कथं वा स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत्।।

युधिष्ठिरः – मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं राष्ट्रमराजकम्।

भाषा-विस्तार

संख्यावाचकविशेषणानि

(एकम्)

पुं.	स्त्री.	नपुं.
एकः	एका	एकम्
एकम्	एकाम्	एकम्
एकेन	एकया	शेष पुल्लिङ्गवत्
एकस्मै	एकस्यै	
एकस्मात्	एकस्याः	
एकस्य	एकस्याः	
एकस्मिन्	एकस्याम्	

(द्वि)

पुं.	स्त्री.	नपुं.
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	शेष पुल्लिङ्गवत्
"	"	
"	"	
द्वयोः	द्वयोः	
द्वयोः	"	

(त्रि)

पुं.	स्त्री.	नपुं.
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि

त्रिभि:	तिसृभि:	शेष पुल्लिङ्गवत्
त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	
त्रिभ्य:	"	
त्रयाणाम्	तिसृणाम्	
त्रिषु	तिसृषु	

(चतुर्)

पुं.	स्त्री.	नपुं.
चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि
चतुर:	"	"
चतुर्भि:	चतसृभि:	शेष पुल्लिङ्गवत्
चतुर्भ्य:	चतसृभ्य:	
"	"	
चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
चतुर्षु	चतसृषु	

पञ्चदशः पाठः

[प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास-विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामक नाटक के सातवें अङ्क से उद्धृत है। इस पाठ में शकुन्तला और दुष्यन्त के पुत्र सर्वदमन भरत की बालसुलभ चेष्टाओं का वर्णन है। बालक का निश्छल स्वभाव अत्यन्त मनोहर लगता है। उसकी शैशवकालीन निर्भीकता और साहस का यहाँ पर सफल चित्रण हुआ है।]

विभक्ति-प्रयोगः

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टकर्मा तपस्विनीभ्यां सह बालः)

बालः - जृम्भस्व सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये।

प्रथमा - आविनीत! किं नः अपत्यसदृशानि सत्त्वानि विप्रकरोषि। हन्त! वर्धते तव संरम्भः!



द्वितीया – एषा खलु केसरिणी त्वां लङ्घयिष्यति, यदि तस्याः पुत्रकं न मुञ्चसि।
बालः – (*सस्मितम्*) अहो बलीयः, भीतोऽस्मि (इत्यधरं दर्शयति)
प्रथमा – वत्स! एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च। अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।
बालः – कुत्र? देहि तत्। (*हस्तं प्रसारयति*)
राजा – (बालस्य हस्तमवलोक्य) कथं चक्रवर्तिलक्षणमप्यनेन धार्यते।
द्वितीया – सुव्रते, न शक्यः एष वाचा मात्रेण विरमयितुम्। गच्छ त्वम् । मदीये उटजे मृत्तिकामयूरस्तिष्ठिति, तम् अत्र आनय अस्मै च उपहर ।
प्रथमा – तथा। (*इति निष्क्रान्ता*)
बालः – अनेनैव तावत् क्रीडिष्यामि (*इति तापसीं विलोक्य हसति*)
राजा – स्पृहयामि खलु अस्मै बालकाय।
द्वितीया – (*पार्श्वमवलोकयति*) भवतु। न मामयं गणयति। (*राजानमवलोक्य*) भद्रमुख! एहि तावत्। मोचयानेन बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम्।
राजा – (*उपगम्य, सस्मितम्*) अयि भो महर्षिपुत्र!
द्वितीया – भद्रमुख! न खल्वयम् ऋषिकुमारः।
राजा – आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति।
द्वितीया – (*उभौ निर्वर्ण्य*) आश्चर्यमाश्चर्यम्।
राजा – आर्ये! किमिव।
द्वितीया – अस्य बालकस्य तेऽपि समानाकृतिरिति।
राजा – (*बालकमुपलालयन्*) न चेन्मुनिकुमारकोऽयम्, अथ कोऽस्य व्यपदेशः?
द्वितीया – पुरुवंशः।
(*तावत् प्रविशति मयूरहस्ता तापसी*)
प्रथमा – सर्वदमन ! शकुन्तलावण्यं पश्य।
बालः – (*सदृष्टिक्षेपम्*) कुत्र वा मम माता?
राजा – किं वा शकुन्तलेत्यस्यमातुराख्या।
उभे – नामसादृश्येन वञ्चितो मातृवत्सलः।
द्वितीया – वत्स! अस्य मृत्तिकामयूरस्य रम्यत्वं पश्येति भणितोऽसि।
बालः – मातः, रोचते मे एष भद्रमयूरः।
(*इति क्रीडनकमादत्ते*)

प्रथमा – (*विलोक्य सोद्वेगम्*) अहो रक्षाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते।

राजा – ननु इदमस्य सिंहशावविमर्दात् परिभ्रष्टम्।
(*इति आदातुमिच्छति*)

उभे – मा खलु मा खलु। (*राजा तत् गृह्णाति*) कथं गृहीतमनेन?

राजा – (*आश्चर्येण*) किमर्थं प्रतिषिद्धाः स्मः?

प्रथमा – एषा अपराजिता नाम औषधिः। एतां माता-पितरौ आत्मानं च वर्जयित्वा अपरो भूमिपतितां न गृह्णाति।

राजा – अथ गृह्णाति?

प्रथमा – ततस्तं सर्पो भूत्वा दशति।

राजा – भवतीभ्यां कदाचिदस्याः प्रत्यक्षीकृता विक्रिया?

उभे – अनेकशः।

राजा – (*सहर्षम् आत्मगतम्*) कथमिव सम्पूर्णमपि मे मनोरथं नाभिनन्दामि।
(*इति बालं परिष्वजते*)

शब्दार्थाः

यथानिर्दिष्टकर्मा – निर्देशानुसार कार्य करती हुई
जृम्भस्व – मुँह खोलो
गणयिष्ये – गिनूँगा
अपत्यसदृशानि – सन्तान के समान
सत्वानि – जीवों को, प्राणियों को
विप्रकरोषि – नाराज (तंग) करते हो
अविनीत – उद्दण्ड, उच्छृंखल
हन्त – अफसोस है
संरम्भः – हठ (आग्रह)
केसरिणी – शेरनी, सिंहनी
लङ्घयिष्यति – आक्रमण करेगी
सस्मितम् – मुस्कुराहट के साथ
बलीयः – बहुत, अधिक बलवान

क्रीडनकम्	–	खिलौना
चक्रवर्तिलक्षणम्	–	सम्राट होने के चिह्न
धार्यते	–	धारण किया है
वाचामात्रेण	–	कथन मात्र से
मृत्तिकामयूरः	–	मिट्टी का मोर
उपहर	–	दो
स्पृहयामि	–	आकर्षित हो रहा हूँ, चाह रहा हूँ
चेष्टितम्	–	कार्य, यत्न
निर्वर्ण्य	–	देखकर
समानाकृतिः	–	मिलता–जुलता चेहरा
उपलालयन्	–	स्नेह करता हुआ
व्यपदेशः	–	कुल, वंश
रम्यत्वम्	–	सुन्दरता
भणितोऽसि	–	भणितः+असि, कहे गये हो
आख्या	–	नाम
सोद्वेगम्	–	स+उद्वेगम्, घबड़ाहट के साथ
मणिबन्धे	–	कलाई में
सिंहशावविमर्दात्	–	शेर के बच्चे के घर्षण (रगड़) से
दशति	–	डसता है, काटता है
विक्रिया	–	विकृत रूप, परिवर्तन

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) बालः केन सह क्रीडति?
   (ख) भरतस्य पिता कः आसीत्?
   (ग) तापसी भरताय किं यच्छति?
   (घ) बालस्य मणिबन्धे किम् आसीत्?
   (ङ) औषधेः नाम किम् आसीत्?

अभ्यासः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) बालः सिहं किमर्थं जृम्भितुं कथयति?
   (ख) राजा बालस्य हस्ते किं लक्षणं पश्यति?
   (ग) तापसी किमर्थम् आश्चर्यमनुभवति?
   (घ) भूमिपतिताम् अपराजिता औषधिं यदि अन्यः कश्चिद् गृह्णाति तर्हि किं भवति?

3. **अधोलिखितानि कथनानि कः कम् प्रति च कथयति इति लिखत –**

वाक्यानि	**कः/का**	**कम्/काम्**
(क) अहो! बलीयः भीतोऽस्मि	....	....
(ख) भद्रमुख, न खल्वयं ऋषिकुमारः	....	....
(ग) आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति	....	....
(घ) ततस्तं सर्पो भूत्वा दशति	....	....
(ङ) शकुन्तलावण्यं पश्य	....	....

4. **उपसर्ग + धातु + प्रत्ययान् संयोज्य पदरचनां कुरुत –**

उपसर्ग	+	**धातु**	+	**प्रत्यय**	=	**पदानि**
वि	+	रम्	+	तुमुन्	=	
सम्	+	पूज्	+	तुमुन्	=	
वि	+	लोक्	+	ल्यप्	=	
आ	+	दा	+	ल्यप्	=	
उप	+	गम्	+	ल्यप्	=	

5. **अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यरचनां कुरुत –**
   (क) गणयिष्ये ....
   (ख) अस्मै ....
   (ग) सिंहशावविमर्दात् ....
   (घ) वाचामात्रेण ....
   (ङ) विप्रकरोषि ....

6. **अधोलिखितेषु सन्धिं कुरुत –**

यथा - अपि + अनेन = अप्यनेन
अस्य + उपकर = ...
मोचय + अनेन = ...

खलु	+	अयम्	=	....
ते	+	अपि	=	....
स	+	उद्वेगम्	=	....

भाव विस्तार

कवि-ग्रन्थ-परिचय -- संस्कृत कवियों में कालिदास सर्वमान्य कवि हैं। परवर्ती कवियों ने इन्हें कविकुलगुरु की उपाधि दी है। इनका काल प्रथम शताब्दी ई.पू. माना जाता है। इनकी कृतियों में वाल्मीकि की शैली का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इनकी 7 रचनाएं हैं –

महाकाव्य – 1. कुमारसम्भव 2. रघुवंश

खण्डकाव्य – 1. ऋतुसंहार 2. मेघदूत

नाटक – 1. विक्रमोर्वशीय 2. मालविकाग्निमित्र 3. अभिज्ञानशाकुन्तल।

अभिज्ञानशाकुन्तल

प्रस्तुत नाटक कालिदास की उत्कृष्ट कृति है जिसने विश्व के प्राय: सभी कवियों को आकर्षित किया है। इसमें सात अङ्क हैं जिसमें हस्तिनापुर नरेश दुष्यन्त तथा महर्षि कण्व की पालिता कन्या शकुन्तला की कथा है। दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण दोनों एक-दूसरे से बिछुड़ जाते हैं जिनके मिलन में उनका पुत्र भरत सहायक होता है।

साहस के कतिपय अन्य श्लोक निम्नलिखित हैं –

1. **एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्तं महीतलम्।**
   क्रियते भास्करेणैव स्फारस्फुरिततेजसा॥
2. **उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।**
   षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥

भाषा-विस्तार

उपपद विभक्ति

स्पृह् (इच्छा करना) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसे –

अहं स्पृहयामि खलु **अस्मै**।

सः **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति।

त्वं **फलेभ्यः** स्पृहयसि।

षोडशः पाठः

[प्रस्तुत पाठ महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित 'कादम्बरी' नामक गद्यकाव्य से सम्पादित कर लिया गया है। इस पाठ में स्नान के लिए जाते हुए ऋषिकुमार हारीत द्वारा मार्ग में मरणासन्न अवस्था में वृक्ष के नीचे पड़े एक शुकशावक की प्राणरक्षा का वर्णन है।]

(अव्यय, क्त्वा, तुमुन्, विभक्ति प्रयोगः)

आसीत् पुरा हारीतो नाम कश्चन ऋषिकुमारः। एकदा अन्यैः ऋषिकुमारकैः सह स्नातुं गच्छन् सः एकं शुकशिशुम् अपश्यत्। शुकशिशुः मूर्च्छितः आसीत्। समुपजातकरुणः सः समीपवर्तिनम् ऋषिकुमारम् अवदत् –



"अयं शुकशिशुः तरुशिखरात् पतितः श्येनमुखात् वा परिभ्रष्टः प्रतिभाति। यतो हि – अल्पशेषजीवितोऽयं मुहुर्मुहुः मुखेन पतति, मुहुर्मुहुः दीर्घं श्वसिति, मुहुर्मुहः चञ्चुपुटं च विवृणोति। तदेहि – एनं गृहाण। यावदेव अयम् असुभिर्न विमुच्यते तावदेव एनं सरसः समीपं नय।" ऋषिकुमारः तं तत्र नीतवान्। हारीतः स्वयमेव तं कतिचित् सलिलबिन्दून् अपाययत्।

उपजातनवीनप्राणं तं नवनलिनीदलस्य छायायां निधाय समुचितं स्नानविधिम् अकरोत्। अभिषेकावसाने च भगवते सवित्रे अर्घ्यं दत्त्वा सरोवरात् बहिरागत्य धौतवल्कलं परिधृतवान्। अनन्तरं सः शुकं गृहीत्वा मुनिकुमारकैः सह शनैः शनैः तपोवनाभिमुखम् अगच्छत्। सत्यमेव उक्तम् – "सतां चेतांसि प्रायेण अकारणमित्राणि करुणापराणि च भवन्ति।"

शब्दार्थाः

समुपजातकरुणः	–	दया भाव उत्पन्न होने पर
श्येनमुखात्	–	बाज के मुख से
परिभ्रष्टः	–	गिरा हुआ
अल्पशेषजीवितोऽयम्	–	जिसका थोड़ा जीवन शेष है
विवृणोति	–	खोलता है
ग्रीवाम्	–	गर्दन को
असुभिः	–	प्राणों से
सलिलबिन्दून्	–	जल की बूँदों को
अपाययत्	–	पिलाया
उपजातनवीनप्राणम्	–	नये प्राण आ जाने पर
नवनलिनीदलस्य	–	नये कमलिनी के पत्ते की
नीतवान्	–	ले गया
अभिषेकावसाने	–	नहाने के बाद
सवित्रे	–	सूर्य के लिए
धौतवल्कलम्	–	धुले हुए वल्कल (वृक्ष की छाल) को
तपोवनाभिमुखम्	–	तपोवन की ओर
चेतांसि	–	चित्त, हृदय
अकारणमित्राणि	–	स्वाभाविक मित्रता
करुणापराणि	–	करुणायुक्त, दया से भरे हुए

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) अभिषेकावसाने हारीतः कस्मै अर्घ्यं दत्तवान्?
   (ख) शुकशिशुः कुतः पतितः?
   (ग) कः ग्रीवां धारयितुं न शक्नोति?
   (घ) हारीतः कं सलिलबिन्दून् अपाययत्?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) अल्पशेषजीवितः शुकः किं किं करोति?
   (ख) ऋषिकुमारकैः सह हारीतः शुकशिशुं गृहीत्वा कुत्र अगच्छत्?
   (ग) हारीतः शुकशिशुं सलिलसमीपं नीत्वा किम् अकरोत्?
   (घ) अकारणमित्राणि करुणापराणि च कानि भवन्ति?
3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) **शुकशिशुः** तरुशिखरात् पतितः।
   (ख) मुनिकुमारकैः सह हारीतः **तपोवनाभिमुखम्** अगच्छत्?
   (ग) शुकशिशुः **ग्रीवां** धारयितुं न शक्नोति।
   (घ) हारीतः शुकं **सलिलबिन्दून्** अपाययत्।
   (ङ) **हारीतः** शुकशिशुं छायायाम् अस्थापयत्।
4. **उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत –**

(अ)	**उदा. –ग्रह्**	+	**क्त्वा**	=	**गृहीत्वा**			
	(क)	दृश्	+	....	=	दृष्ट्वा		
	(ख)	गम्	+	क्त्वा	=	....		
	(ग)	....	+	क्त्वा	=	स्थित्वा		
(ब)	**उदा. –अव**	+	**लुक्**	+	**ल्यप्**	=	**अवलोक्य**	
	(क)	....	+	गम्	+	ल्यप्	=	आगत्य
	(ख)	उत्	+	स्था	+	ल्यप्	=	....

(स) उदा. स्ना + तुमुन् = स्नातुम्
(क) दृश् + ... = द्रष्टुम्
(ख) .... + तुमुन् = क्रेतुम्
(ग) नी + तुमुन् = ...

रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनश्च शब्दांशान् योजयित्वा लिखत –

(क) .... + विश् + ल्यप् =
(ख) आ + गम् + ... =
(ग) आ + ... + तुमुन् =
(घ) .... + त्वा =

(अ) स्तम्भे दत्तानां पदानां समक्षं (ब) स्तम्भात् विलोमपदानि चित्वा लिखत –

(अ)		(ब)	
आदाय	आनेतुम्	आग्रहीतुम्	निर्गन्तुम्
उत्थाय	दातुम्	अवतीर्य	आगत्य
गृहीत्वा	आरुह्य	प्रदाय	दत्त्वा
गत्वा	प्रवेष्टुम्	उपविश्य	नेतुम्

भाव-विस्तार

कविपरिचय तथा ग्रन्थ परिचय – बाणभट्ट संस्कृत वाङ्मय के गद्यशिरोमणि हैं। बाणभट्ट का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त उच्छृंखल था। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् युवावस्था में सज्जनों की संगति में रहकर ये महाकवि बने। ये राजा हर्षवर्धन के आश्रित कवि थे। इनका समय सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

कादम्बरी – कवि कल्पित कथानक पर आधारित उपन्यास है जो बाणभट्ट की काव्यकला का उत्कृष्ट नमूना है। कादम्बरी की कथा तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है। आरम्भ में विदिशा के राजा शूद्रक का वर्णन है। एक कन्या मेधावी वैशम्पायन नामक तोते को लेकर राज्यसभा में आती है। वहाँ वह अपने जन्म से लेकर राजसभा में आने तक की कथा सुनाता है।

भाषा-विस्तार

अव्ययपदों की आवृत्ति

खलु, च, यतः, कथम्, अपि, वा, यतोहि, मुहुर्मुहुः, न, यावत्, एव, तावत्, इति, स्वयम्, बहिः अनन्तरम्, शनैः, सह

सप्तदशः पाठः

[प्रस्तुत पाठ्यांश भारत के गौरव का पद्यमय गीत है। इसमें देश की खाद्यान्न सम्पन्नता, कलानुराग, प्राविधिक प्रवीणता, वन एवं सामरिक शक्ति का गुणगान किया गया है। प्राचीन परम्परा, संस्कृति, आधुनिक मिसाइल क्षमता एवं परमाणु शक्ति सम्पन्नता के गीत द्वारा कवि ने देश की सामर्थ्यशक्ति का वर्णन किया है। छात्र संस्कृत के इन श्लोकों का सस्वर गायन करें तथा देश के गौरव को महसूस करे, इसी उद्देश्य से इन्हें यहाँ संकलित किया गया है।]

सुपूर्णं सदैवास्ति खाद्यान्नभाण्डं
नदीनां जलं यत्र पीयूषतुल्यम्।
इयं स्वर्णवत्भातिशस्यैर्धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥1॥

त्रिशूलाग्निनागैः पृथिव्यास्त्रघोरैः
अणूनां महाशक्तिभिर्पूरितेयम्।
सदा राष्ट्ररक्षारतानां धरेयम्
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥2॥

इयं वीरभोग्या तथा कर्मसेव्या
जगद्वन्दनीया च भूः देवगेया।
सदा पर्वणामुत्सवानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥3॥

इयं ज्ञानिनां चैव वैज्ञानिकानां
विपश्चिज्जनानामियं संस्कृतानाम्।
बहूनां मतानां जनानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥4॥

इयं शिल्पिनां यन्त्रविद्याधराणां
भिषक्शास्त्रिणां भूः प्रबन्धे युतानाम्।
नटानां नटीनां कवीनां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥5॥

वने दिग्गजानां तथा केशरीणां
तटीनामियं वर्तते भूधराणाम्।
शिखीनां शुकानां पिकानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥6॥

शब्दार्थाः

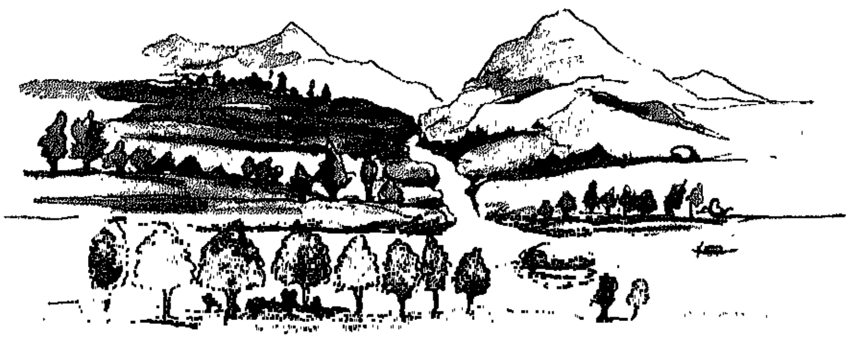
पीयूषतुल्यम्	–	अमृत समान
भाति	–	सुशोभित होती है
शस्यैः	–	फसलों से
धरेयम्	–	धरा + इयम् = यह पृथ्वी
क्षितौ	–	क्षिति (पृथ्वी) पर
त्रिशूलाग्निनागैःपृथिव्यास्त्रघोरैः	–	त्रिशूल, अग्नि, नाग, पृथ्वी तथा आकश– पाँच मिसाइलों (अस्त्रों) के नाम
मेदिनी	–	पृथ्वी
पर्वणामुत्सवानाम्	–	पर्व और उत्सवों की
विपश्चिज्जनानाम्	–	विद्वज्जनों की
यन्त्रविद्याधराणाम्	–	यन्त्रविद्या को जानने वालों की

भिषक्	–	वैद्य, चिकित्सक
प्रबन्धे युतानाम्	–	'प्रबन्धक' समुदाय प्रबन्ध कार्यों में लगे हुए
नट, नटी	–	अभिनेता, अभिनेत्री
केसरीणाम्	–	सिंहों की
तटीनां	–	नदियों की
भूधराणां	–	पर्वतों का
पिकानां	–	कोयलों का
शिखीनाम्	–	मोरों की

अभ्यासः

लिखिताः

1. (अ) **चित्रं दृष्ट्वा [पाठात्] उपयुक्तपदानि गृहीत्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत –**



(क) अस्मिन् चित्रे एका .... वहति।
(ख) नदी .... निःसरति।
(ग) नद्याः जलं .... भवति।
(घ) .... शस्यसेचनं भवति।
(ङ) भारतः .... भूमिः अस्ति।

(ब) चित्राणि दृष्ट्वा [मञ्जूषातः] उपयुक्तपदानि गृहीत्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत –



अस्त्राणाम्, भवति, अस्त्राणि, सैनिकाः, प्रयोगः उपग्रहाणां

(क) अस्मिन् चित्रे .... दृश्यन्ते।

(ख) एतेषां अस्त्राणां .... युद्धे भवति।

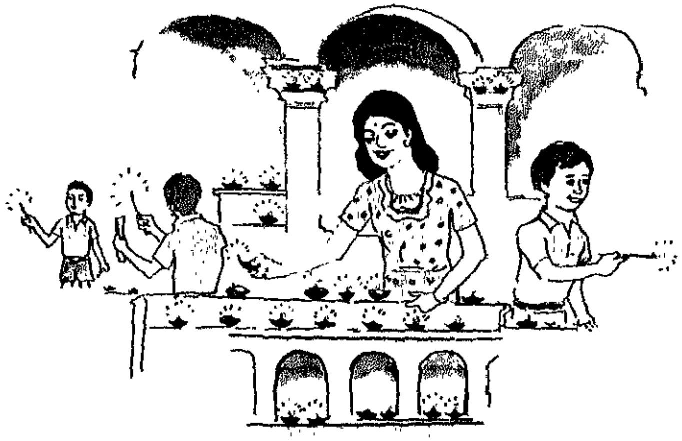
(ग) भारतः एतादृशाणां .... प्रयोगेण विकसितदेशः मन्यते।

(घ) अत्र परमाणुशक्तिप्रयोगः अपि .... ।

(ङ) आधुनिकैः अस्त्रैः .... अस्मान् शत्रुभ्यः रक्षन्ति।

(च) .... सहायतया बहूनि कार्याणि भवन्ति।

(अ) चित्रं दृष्टवा संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखत –



(क) ....

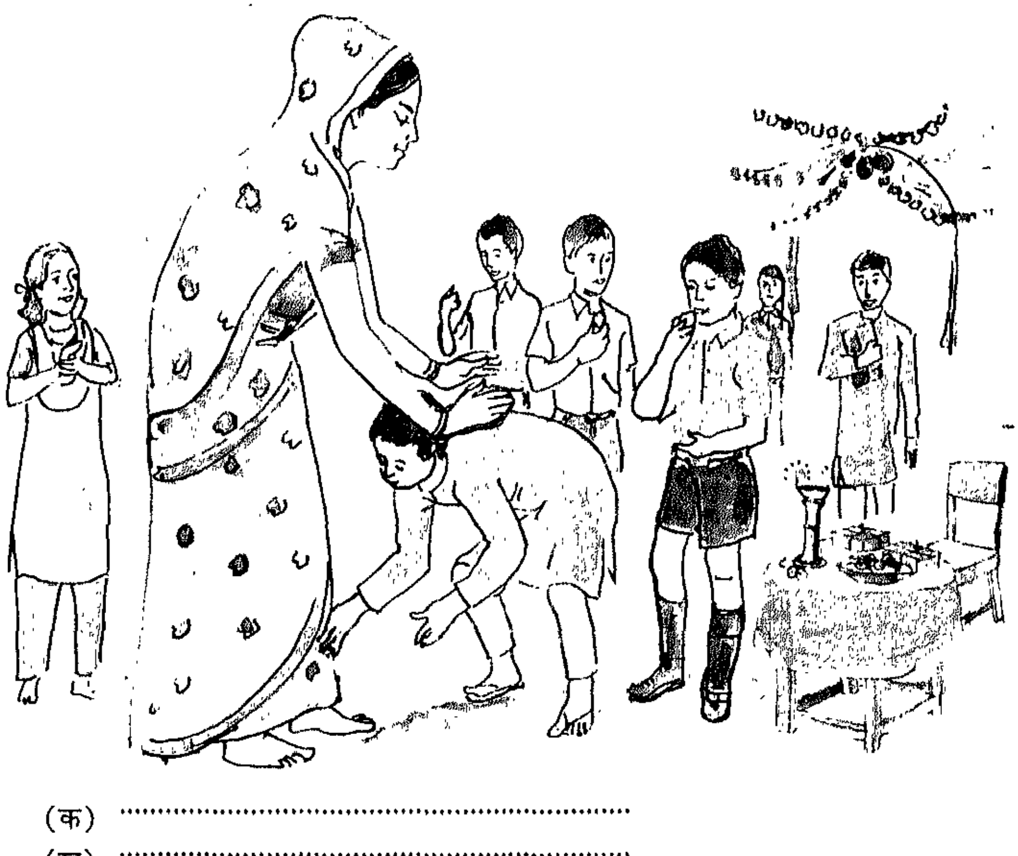
(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

(ब) चित्रं दृष्टवा संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखत –



(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

3. (अ) चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतभाषया पञ्चवाक्यानि लिखत –



(क) ....

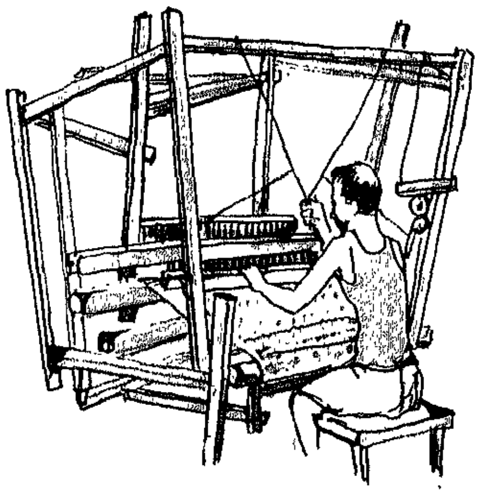
(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

4. चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतभाषया पञ्चवाक्यानि लिखत –





(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

5. अत्र चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतभाषया पञ्चवाक्येषु प्रकृतेः वर्णनं कुरुत –



योग्यता-विस्तार

प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, इसी भाव को ग्रहण कर कवि ने प्रस्तुत पाठ में भारतभूमि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि आज भी यह भूमि विश्व में स्वर्णभूमि बनकर ही सुशोभित हो रही है।

कवि कहते हैं कि आज हम विकसित देशों की परम्परा में अग्रगण्य होकर मिसाइलों का निर्माण कर रहे हैं, परमाणु शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। इसी के साथ ही साथ हम 'उत्सवप्रियाः खलु मानवाः' नामक उक्ति को चरितार्थ भी कर रहे हैं कि 'अनेकता में एकता है हिंद की विशेषता' इसी आधार पर कवि के उद्‌गार हैं कि बहुत मतावलम्बियों के भारत में होने पर भी यहाँ ज्ञानियों, वैज्ञानिकों और विद्वानों की कोई कमी नहीं है। इस धरा ने सम्पूर्ण विश्व को शिल्पकार, इंजीनियर, चिकित्सक, प्रबंधक, अभिनेता, अभिनेत्री और कवि प्रदान किए हैं। इसकी प्राकृतिक सुषमा अद्‌भुत है। इस तरह इन पद्यों में कवि ने भारत के सर्वाधिक महत्त्व को उजागर करने का प्रयास किया है।

पाठ में पर्वों और उत्सवों की चर्चा की गई है ये समानार्थक होते हुए भी भिन्न हैं। पर्व एक निश्चित तिथि पर ही मनाए जाते हैं; जैसे- होली, दीपावली, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस इत्यादि। परन्तु उत्सव व्यक्ति विशेष के उद्‌गार एवं आह्लाद के द्योतक हैं। किसी के घर संतानोत्पत्ति उत्सव का रूप ग्रहण कर लेती है तो किसी को सेवाकार्य में प्रोन्नति प्राप्त कर लेना, यहाँ तक कि बिछुड़े हुए बंधु-बांधवों से अचानक मिलना भी किसी उत्सव से कम नहीं होता है।

अष्टादशः पाठः

[प्रस्तुत पाठ भारत के ग्रामीण जीवन को आधार मानकर विकसित किया गया एक लघु निबन्ध है। इसमें भारतीय गाँवों की झलक प्रस्तुत करते हुए कहा गया है - भारत कृषि प्रधान देश है। इसके 80 प्रतिशत से भी अधिक लोग परिश्रम से खेती करते हुए गाँवों में ही रहते हैं। उन्हीं की मेहनत के कारण आज यह देश खाद्यान्न से सम्पन्न हो सका है। भारतीय गाँव देश की संस्कृति का वास्तविक रूप प्रकट करते हैं। इनको देखे और समझे बिना भारत की संस्कृति को समग्र रूप से जानना संभव नहीं है।]

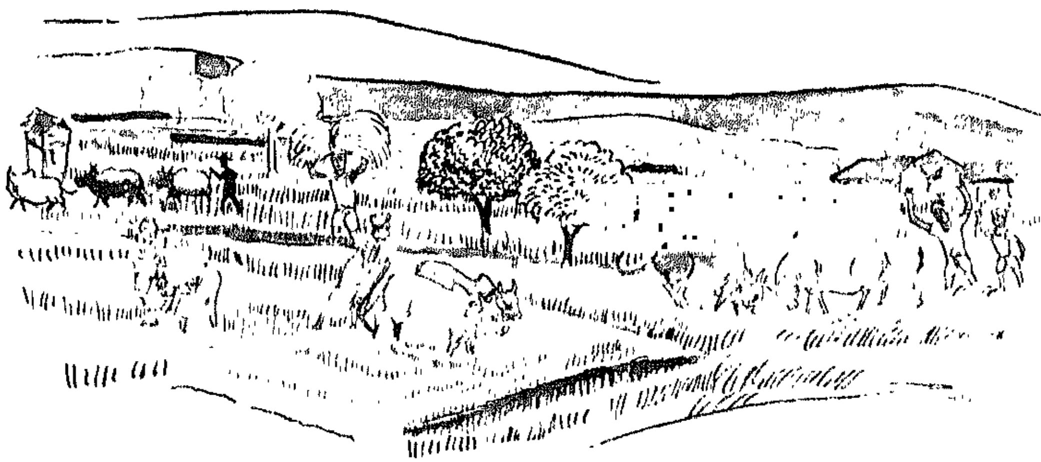
विभक्ति-प्रयोगः

कृषिप्रधानोऽयम् अस्माकं भारतदेशः। अत्रत्याः अशीतोऽप्यधिकं प्रतिशतं जनाः ग्रामेषु वसन्ति। ग्रामवासिनः प्रायेण कृषकाः भवन्ति। ते प्रातःकालादारभ्य सायं यावत् महता परिश्रमेण क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति। स्वक्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति। साम्प्रतिके काले क्षेत्रकर्षणाय ते 'ट्रैक्टर' इत्याख्यस्य यन्त्रस्य प्रयोगं कुर्वन्ति। समये-समये कुल्याजलेन, नलकूपजलेन च क्षेत्राणि सिञ्चन्ति। क्षेत्रकर्मसु व्यग्राः कृषकाः प्रायेण दिनस्य भोजनं क्षेत्रेष्वेव कुर्वन्ति। एवं प्रकारेण ते महता परिश्रमेण प्रभूतमात्रायां धान्यानि उत्पादयन्ति।

ग्रामीणाः जनाः परिश्रमशीलाः भवन्ति। ते ग्रीष्मवर्षाशीतादिऋतुषु सर्वदा कठिनं परिश्रमं कुर्वन्ति। एतदर्थं ते स्वशरीरं बलवन्तं विधातुं पुष्कलमात्रायां दुग्धं घृतं-दधि, च खादन्ति। एतत्कृते ते स्व-स्वगृहेषु गाम् अजां महिषीं च पालयन्ति। भोजनेषु हरितानि शाकानि प्रयुज्यन्ते यानि ते स्वक्षेत्रेभ्यः एव प्राप्नुवन्ति। केचन गृहाणि परितः अपि शाकानि रोपयन्ति। वृद्धाः कथयन्ति यत् बालानां शरीरस्य बुद्धेश्च विकासाय गोदुग्धं बहुलाभकरं

भवति इति मत्वा प्रतिदिनं प्रातराशेन सह रात्रौ भोजनान्ते च पयः पिबन्ति। समये-समये भोजनान्ते तक्रमपि पिबन्ति।

मयापि दृष्टः मानपुरम् इत्याख्यो ग्रामः। तस्मिन् ग्रामे एकैव रथ्या। रथ्यामुभयतः क्वचिद्गृहाणि क्वचिच्च केदाराः शोभन्ते। एका नदी अपि तत्र प्रवहति। कदाचिदियं ग्रामीणान् धान्यैः सम्पन्नं कदाचिच्च जलप्लावनैः विपन्नमपि करोति। ग्रामं सर्वतः गोचारणभूमिः अपि विद्यते। तत्र धेनवः, वत्साः, वृषभाः, अजाः महिष्यश्च सुखेन तृणानि चरन्ति। कदाचिद् शक्तिमतोः वृषभयोः मध्ये संघर्षः भवति यं दृष्ट्वा पशुचारकाणां विनोदो भवति। सायंकालात् प्रागेव ते स्वान् पशून् स्वस्वगृहेषु आनयन्ति।



ग्रामे भोजनाय प्रभूतम् अन्नम्, दुग्धं, फलानि, इक्षुरसांसि च मिलन्ति। तत्र जलं वायुः च प्रदूषिते न स्तः। भ्रमणाय कुल्यातटं, नद्याः तटम्, उपवनानि च सन्ति। जनाः सामाजिकानि, राष्ट्रियाणि, धार्मिकाणि च पर्वाणि मिलित्वा सोत्साहेन परस्परं सौहार्देन च सम्पादयन्ति। सुखे-दुःखे च अन्योन्यस्य साहाय्यं कुर्वन्तः आनन्दमयं जीवनं यापयन्ति। सत्यमेवोक्तम्-यः कोऽपि भारतं सम्यक् ज्ञातुमिच्छति तेन, भारतीयाः ग्रामाः दृष्टव्याः यतोऽहि **भारतं नैसर्गिकरूपेण ग्रामेष्वेव दृश्यते।**

शनैः शनैः ग्रामोऽयम् आधुनिकसाधनैः सम्पन्नो भवति। यत्र सर्वेऽपि ग्रामवासिनः सुखेन वसन्ति। यदि देशस्य अन्येऽपि ग्रामाः आधुनिकसाधनसम्पन्नाः स्युः तर्हि ग्राम्यजीवनं सुखकरम् आदर्शभूतं च स्यात् इत्यत्र नास्ति कोऽपि संदेहः।

शब्दार्थाः

अत्रत्याः	–	यहाँ के (यहाँ रहने वाले)
आरभ्य	–	शुरू करके
वपन्ति	–	बोते हैं
कर्षन्ति	–	जोतते हैं
कुल्या	–	नहर
व्यग्राः	–	व्यस्तता के कारण व्याकुल
सस्यरक्षणम्	–	फसल की रक्षा
प्रभूतमात्रायाम्	–	अत्यधिक मात्रा में
धान्यानि	–	अन्नों को
उत्पादयन्ति	–	उत्पन्न करते हैं
विधातुम्	–	बनाने के लिए
पुष्कलमात्रायाम्	–	पर्याप्त मात्रा में
अजाम्	–	बकरी को
महिषीम्	–	भैंस को
शाकानि	–	सब्जियों को
प्रयुज्जन्ते	–	प्रयोग की जाती हैं
रोपयन्ति	–	लगाते हैं
प्रातराशेन	–	नाश्ते के साथ
तक्रमपि	–	छाछ को भी
मातुलः	–	मामा
रथ्या	–	मार्ग
केदाराः	–	खेत

विपन्नमपि - दरिद्र भी (रहित भी)
इक्षुरसांसि - गन्ने का रस
नैसर्गिकरूपेण - स्वाभाविक रूप से

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) महता परिश्रमेण कृषकाः कुत्र कर्म कुर्वन्ति?
   (ख) गृहाणि परितः केचन जनाः किं रोपयन्ति?
   (ग) ग्रामीणाम् जनान् नदी केन प्रकारेण विपन्नं करोति?
   (घ) बालानां शरीरस्य बुद्धेश्च विकासाय किं बहुलाभकरं भवति?
   (ङ) वृषभयोः संघर्षं दृष्ट्वा केषां मनोविनोदो भवति?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) मानपुरनाम्निग्रामे किं किं शोभते?
   (ख) ग्रामे भोजनाय किं किं मिलति?
   (ग) ग्रामेषु जनाः पर्वाणि कथं सम्पादयन्ति?
   (घ) ग्राम्यजीवनं कथं सुखकरम् आदर्शभूतं च स्यात्?
3. **समानार्थकशब्दान् चित्वा लिखत –**

(क) साम्प्रतिके काले	कर्तुम्
(ख) व्यग्राः	प्राकृतिकरूपेण
(ग) विधातुम्	वर्तमानकाले
(घ) पयः	उत्सवाः
(ङ) प्रभूतम्	व्यस्ततायाः व्याकुलाः
(च) पर्वाणि	दुग्धम्
(छ) नैसर्गिकरूपेण	अत्यधिकम्

4. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) अस्माकं भारतदेशः **कृषिप्रधानः**।

(ख) कृषकाः स्वक्षेत्राणि **हलेन** कर्षन्ति।
(ग) ग्रामीणाः भोजनान्ते **पयः** पिबन्ति।
(घ) **ग्रामं** सर्वतः गोचारणभूमिः अपि विद्यते।
(ङ) **ग्रामे** जलं वायुः च प्रदूषिते न स्तः।

5. **कोष्ठके प्रदत्तनिर्देशेन वाक्यपरिवर्तनं कुरुत –**

यथा– कृषकाः धान्यानि उत्पादयन्ति। (कर्मपरिवर्तनेन)
कृषकाः शाकानि उत्पादयन्ति।

(क) ग्रामे एका रथ्या अस्ति। (रथ्या इत्यस्य शब्दस्य परिवर्तनेन)
(ख) नदी ग्रामं धान्यैः सम्पन्नं करोति। (सम्पन्नम् इत्यस्य शब्दस्य परिवर्तनेन)
(ग) कृषकाः भोजनान्ते प्रायः पयः पिबन्ति। (कर्मपरिवर्तनेन)
(घ) ग्रामे धेनवः तृणानि चरन्ति। (कर्तृपदस्य परिवर्तनेन)
(ङ) ग्रामम् उभयतः नदी वहति (कर्मपरिवर्तनेन, कर्मानुसारेण क्रियापरिवर्तनेन च)

6. **उचितविभक्तिप्रयोगेण अधोलिखितवाक्यानि संशोध्य लिखत –**

(क) ग्रामीणाः गृहाणां परितः शाकानि रोपयन्ति।
(ख) केचन जना प्रातराशस्य सह दुग्धं पिबन्ति।
(ग) ग्रामस्य सर्वतः गोचारणभूमिः अस्ति।
(घ) शनैः शनैः ग्रामोऽयं आधुनिकसाधनानां सम्पन्नः भवति।
(ङ) रथ्यायाः उभयतः गृहाणि, केदाराः च शोभन्ते।
(च) सायंकालं प्रागेव ते गृहम् आगच्छन्ति।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

भारत एक महान देश है। यह हिमालय पर्वत से दक्षिण तथा हिंद महासागर से उत्तर में फैला हुआ है। यहाँ लेखक ने भारतीय ग्रामों का एक सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। लेखक कहता है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसके 80 प्रतिशत से भी अधिक लोग गाँवों में रहते हैं। ग्रामीण लोगों का व्यवसाय अधिकांशतः कृषि ही है अतः यहाँ के किसान अनेक प्रकार के अन्न-सब्जियाँ तथा फल प्रभूतमात्रा में उत्पन्न करते हैं। कुछ किसान कपास की खेती करते हैं, कुछ फूलों की भी खेती करते हैं तथा कुछ केवल भेड़ और बकरियाँ ही पालते हैं। किसानों की मेहनत के कारण ही भारत के भण्डार खाद्यान्न से भरे हैं। गाँवों में समय-समय पर मेले-त्यौहार एवं अन्य उत्सवों का आयोजन बड़ी धूमधाम से तथा आपसी सहयोग एवं तालमेल से किया जाता है। भारतीय गाँव भारत की संस्कृति के वाहक हैं।

भाषा-विस्तार

उपपदविभक्ति प्रयोग –

द्वितीयाविभक्तिः

अभितः, उभयतः, परितः, सर्वतः इत्यादि शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा –

कृषकाः **गृहाणि** परितः शाकानि रोपयन्ति।

उपवनं सर्वतः वृक्षाः सन्ति।

नदीम् उभयतः नौकाः सन्ति।

यहाँ उपवन, गृह एवं नदी शब्दों में द्वितीया विभवित का प्रयोग हुआ है।

पञ्चमी विभक्तिः

(क) 'आ + रम्' धातु के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा – सः प्रातःकालादारभ्य सायं यावत् कर्म करोति।

हिमालयात् आरभ्य प्रयागं यावत् यमुना प्रवहति।

यहाँ हिमालय शब्द में पञ्चमी विभवित का प्रयोग हुआ है।

(ख) 'प्राक्' शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा – सायंकालात् प्राक् सः गृहमागच्छत्।

मम आगमनात् प्राक् एव सः गृहमागच्छत्।

यहाँ सायंकाल तथा आगमन शब्दों में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

सप्तमी विभक्तिः

'आधारोऽधिकरणम्' अधिकरणे सप्तमी इस नियम के अनुसार 'आधार' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा –

(क) कृषकाः क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति।

किसानों के कर्म का आधार क्षेत्र है अतः क्षेत्र में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

(ख) कृषकाः स्वगृहेषु गाम् अजां च पालयन्ति।

बालाः पशून् स्वगृहेषु आनयन्ति

एकोनविंशः पाठः

भोजस्य शल्यचिकित्सा

[प्रस्तुत पाठ श्रीबल्लालकवि द्वारा विरचित भोजप्रबन्ध नामक कथा ग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इसमें धारानरेश भोज की असह्य शिरोवेदना को दूर करने में राज्य के सभी वैद्यों के असमर्थ हो जाने पर राजा का धन्वन्तरि शास्त्र अर्थात् आयुर्वेद से विश्वास हट जाता है। तब अश्विनीकुमारों द्वारा भोज की शिरोवेदना को उनके सिर की शल्यचिकित्सा करके दूर किया जाता है। जिससे भोज को आरोग्य प्राप्त होता है। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में भी आधुनिक युग की भाँति शल्यचिकित्सा का प्रचलन था।]

(उपसर्ग)

अथ कदाचिद् राजा भोजः नगराद् बहिः एकस्मिन् तडागे कपालशोधनम् अकरोत्। तन्मूलेन कश्चन शफरः तस्य कपालं प्रविष्टः। तदारभ्य राज्ञः कपाले वेदना जाता। सा तत्रत्यैः भिषग्वरैः सम्यक् विचिकित्सता अपि न शान्ता। संवत्सरेऽपि काले न केनाऽपि निवारितः तस्य रोगः।

ततः दुःखितमनाः राजा मन्त्रिणं बुद्धिसागरं कथितवान् – "बुद्धिसागर! इतःपरम् अस्मद्राज्ये न कस्मैचिदपि भिषग्वराय वसतिः देया। यतोहि वैद्यशास्त्रं प्रति मम आस्था समाप्ता। साम्प्रतं मम अन्तसमयः समागतः। तच्छ्रुत्वा सर्वेऽपि पौरजनाः अश्रुपूर्णनेत्राः अभवन्।

अथ कदाचिद् देवसभायां इन्द्रः मुनिवरं नारदम् अपृच्छत् – "इदानीं भूलोके किं-किं प्रचलति? नारद आह – "सुरनाथ! न किमपि आश्चर्यम्। किन्तु धारानगर्याः राजा भोजराजः नितराम् अस्वस्थः वर्तते। तस्य रोगः केनापि वैद्येन न निवारितः। तदनेन भोजराजेन सर्वे वैद्यवराः अपि स्वनगर्याः निष्कासिताः। एतदाकर्ण्य इन्द्रः समीपस्थौ अश्विनीकुमारौ इदमाह—

भो! स्ववैद्यौ! किं धन्वन्तरीयं शास्त्रम् असत्यम् इति? तौ उक्तवन्तौ – नेदं शास्त्रम् असत्यं भवितुम् अर्हति। परं येन रोगेण राजा पीडितः अस्ति तस्य मूलम् एव वैद्यैः न ज्ञातम्। इन्द्र उवाच – "यदि शास्त्रमिदं नासत्यं तर्हि युवाभ्यां भूलोकं गन्तव्यं येन स राजा सम्यक् चिकित्सितो भवेत्।

अश्विनीकुमारौ विप्रवेशं धृत्वा धारानगरं प्राप्य द्वारपालं उक्तवन्तौ – भो द्वारपाल! भोजराजाय निवेदय-राजाऽनृतमिति अङ्गीकृतं वैद्यशास्त्रम् इति श्रुत्वा तत् प्रतिष्ठापनाय तद्रोगनिवारणाय च आवां काशीदेशात् आगतौ।

द्वारपाल उवाच – राजशासनेन कोऽपि वैद्यः प्रवेशं नार्हति। परं तस्मिन्नेव क्षणे कार्यवशात् बहिर्निर्गतः बुद्धिसागरः तयोः वार्तां श्रुत्वा तौ राज्ञः समीपं नीतवान्। राजा तयोः अलौकिकीं मुखश्रियं दृष्ट्वा तौ सम्मानितवान्। तौ अवदताम् – राजन्! कुत्रचित् त्वया एकान्ते भवितव्यम्। राज्ञा तथा कृतम्। तौ राजानं मोहयित्वा, मस्तके विद्यमानं शफरं शल्यचिकित्सया निष्कास्य कस्मिंश्चिद् भाजने निक्षिप्तवन्तौ। ततः सन्धानकरण्या कपालं यथावद् कृत्वा सञ्जीविन्या च तं संज्ञां प्रापयित्वा राजानं तत् शफरम् अदर्शयताम्। विस्मितः राजा अपृच्छत् किमेतत्?



राजन्! त्वया अपरिचिते सरोवरे कपालशोधनं कृतम् ततः एव सम्प्राप्तमिदम्। राजा पुनः अपृच्छत्-किमस्माकं पथ्यम्? तौ अवदताम् –

अशीतेनाम्भसा स्नानं कवोष्णक्षीरसेवनम्।
एतद् वो मानुषाः पथ्यं स्निग्धमुष्णं च भोजनम्॥

एतद् उक्त्वा अश्विनीकुमारौ अन्तर्हितौ अभवताम्। राजाऽपि चिकित्साशास्त्रं प्रति जातविश्वासः सर्वान् वैद्यान् पुनः आमन्त्रयामास। अतएवोच्यते –

अन्विष्यन्ते हि रत्नानि सागरस्थानि नाविकैः।
अल्पज्ञानां मते किन्तु शब्दो रत्नाकरो वृथा॥

शब्दार्थाः

तन्मूलेन	–	उसके (तालाब के) तल से
शफरः	–	छोटी मछली, सहरी
वेदना	–	दर्द
भिषग्वरैः	–	बड़े-बड़े वैद्यों से
विचिकित्सिता	–	उपचार किए जाने पर
तत्रत्यैः	–	वहाँ के (वहाँ स्थित लोगों के)
निवारितः	–	दूर किया गया
वसतिः	–	वास
पौरजनाः	–	नगरनिवासी
सुरनाथ	–	देवताओं के राजा, इन्द्र
नितराम	–	अत्यन्त
आकर्ण्य	–	सुनकर
आह	–	कहा
स्ववैद्यौ	–	स्वर्ग के दो वैद्य
धन्वन्तरीयम्	–	धन्वन्तरि नामक एक वैद्य, उनका वैद्यक शास्त्र
सम्यक्	–	अच्छी तरह से
विप्रवेशं धृत्वा	–	ब्राह्मण का वेश धारण कर
द्वारपालम्	–	द्वारपाल को
अनृतम्	–	असत्य
मुखश्रियम्	–	मुख की कान्ति को
मोहयित्वा	–	बेहोश करके
भाजने	–	बर्तन में

सन्धानकरण्या	–	सीने वाली सुई से
सञ्जीविन्या	–	सञ्जीवनी से (जिलाने वाली एक प्रकार की दवा से)
संज्ञा प्रापयित्वा	–	होश में लाकर
अशीतेन अम्भसा	–	गरम जल से
कवोष्णम्	–	कुछ-कुछ गरम, गुनगुना
क्षीर	–	पानी/दूध
स्निग्धम्	–	चिकनी, तैलीय
उष्णाम्	–	गर्म
अन्तर्हितौ	–	गायब हो गए, अन्तर्ध्यान हो गए
जातविश्वासः	–	जिसका विश्वास उत्पन्न हो गया हो
उच्यते	–	कहा जाता है
सागरस्थानि	–	समुद्र में विद्यमान
अन्विष्यन्ते	–	ढूँढ़ा जाता है
रत्नाकर	–	रत्नों का घर, समुद्र
अल्पज्ञ	–	कम जानने वाला
वृथा	–	व्यर्थ

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि वदत –**
   (क) राजा भोजः तडागे किम् अकरोत्?
   (ख) कश्चन् शफरः कुत्र प्रविष्टः?
   (ग) कम् प्रति राज्ञः आस्था समाप्ता?
   (घ) इन्द्रः राज्ञः उपचारार्थं कौ प्रेषितवान्?
   (ङ) अश्विनीकुमारौ कस्यवेशं धृत्वा धारानगरं प्राप्तवन्तौ?

लिखितः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –**
   (क) राज्ञः कपालवेदनायाः किं कारणम् आसीत्?

(ख) भोजराजेन स्वनगर्याः के निष्कासिताः?

(ग) अश्विनीकुमारौ धारानगरं प्राप्य द्वारपालं किम् उक्तवन्तौ ?

(घ) अश्विनीकुमारौ राज्ञः मस्तके विद्यमानं शफरं कथं निष्कासितवन्तौ?

(ङ) पाठेऽस्मिन् मानुषेभ्यः किं पथ्यं कथितम्?

3. **I 'अवदत्' इति शब्दस्य अनेके पर्यायाः अधः लिखिताः सन्ति। एतेषु यः शब्दः पर्यायः नास्ति, तम् चिनुत –**

(क) कथितवान् (ख) उक्तवान् (ग) प्राप्तवान् (घ) आह (ङ) उवाच

II अधोलिखितेषु शब्देषु यः द्विवचनानन्तः नास्ति, तम् चित्वा लिखत –

(क) उक्तवन्तौ (ख) आगतौ (ग) अवदताम् (घ) निक्षिप्तवन्तौ (ङ) आमन्त्रयामास

III अधोलिखितेषु पदेषु धन्वन्तरीयं शास्त्रम् इत्यस्य किं पदं पर्यायं नास्ति –

(क) वैद्यशास्त्रम् (ख) भिषग्शास्त्रम् (ग) भौतिकशास्त्रम् (घ) चिकित्साशास्त्रम्

4. **अधोलिखितानां पदानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत –**

(क) प्रविष्टः (ख) स्वर्लोकः

(ग) स्वस्थः (घ) सत्यम्

(ङ) अपमानितवान् (च) मोहयित्वा

(छ) समर्थः (ज) अशीतेन

5. **अधोलिखितपदानां वाक्यप्रयोगं एवं कुरुत येन अर्थः स्पष्टः स्यात् –**

(क) नाविकः (ख) रत्नाकरः (ग) वेदना (घ) वैद्यः (ङ) भोजनम्

6. **मञ्जूषातः अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत –**

पुनः, कश्चन, सम्यक्, नितराम्, कुत्रचित्

(क) तन्मूलेन .... शफरः कपालं प्रविष्टः।

(ख) राजा भोजराजः .... अस्वस्थः अस्ति।

(ग) येन स राजा .... चिकित्सितो भवेत्।

(घ) .... एकान्ते त्वया भवितव्यम्।

(ङ) राजा सर्वान् वैद्यान् .... आमन्त्रयामास।

योग्यता-विस्तार

चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में भारत में बड़े-बड़े आचार्य हुए जिन्होंने अमूल्य ग्रन्थ लिखे हैं जो आज भी उपादेय माने जाते हैं। इनमें प्रमुख हैं –

(क) **महर्षि चरक** – इन्होंने चरकसंहिता नामक पुस्तक लिखी है। इनका स्थितिकाल 500 ई.पू. से 200 ई. पू. माना जाता है।

(ख) **महर्षि सुश्रुत** – इन्होंने सुश्रुतसंहिता नामक ग्रन्थ की रचना की है। ये भी 500 ई.पू. के माने जाते हैं।

इनके अतिरिक्त **वाग्भट** नामक आयुर्वेदज्ञ विद्वान् का नाम भी चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में आदर सहित लिया जाता है जिन्होंने अष्टाङ्गहृदय नामक ग्रन्थ की रचना की है।

भोजस्य शल्यचिकित्सा

कोई वैद्य चाहे कितना भी योग्य क्यों न हो, अगर रोग की जड़ तक नहीं पहुँचता तो रोग का निदान नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त यदि रोग का निरूपण समय रहते हो जाए तो असाध्य रोगों को भी नियंत्रित किया जा सकता है। राजा भोज के रोग की पहचान जब तक नहीं हो पायी तब तक वे असह्य शिरोवेदना से पीड़ित ही रहे। अत्यन्त योग्य एवं कुशल अश्विनीकुमारों ने रोग की पहचान की और तत्क्षण ही शल्य-क्रिया द्वारा भोज को भयानक पीडा से मुक्त कराया।

समान्तर सूक्तियाँ-

(क) रात्रौ दधि न भुञ्जीत। (चरकसंहिता)

(ख) श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामदुपजायते। (सुश्रुतसंहिता)

(ग) व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते।। (सुश्रुतसंहिता)

भाषा-विस्तार

व्याकरण – भूतकालिक क्रियाओं को व्यक्त करने के लिए लङ्लकार के स्थान पर क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त 'स्म' लगाकर भी क्रिया को भूतकाल में परिवर्तित किया जा सकता है; यथा –

अपठत्	–	पठितवान् (पठ् + क्तवतु) - पठति स्म।
अपृच्छत्	–	पृष्टवान् (पृच्छ + क्तवतु) - पृच्छति स्म।
अगच्छत्	–	गतवान् (गम् + क्तवतु) - गच्छति स्म।
अकरोत्	–	कृतवान् (कृ + क्तवतु) - करोति स्म।

विंशः पाठः

सूक्तयः

[प्रस्तुत पाठ संस्कृत साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध अनेक विषयों से सम्बद्ध सूक्तियों का संकलन है। इनमें मानव जीवन के लिए उपयोगी एवं व्यावहारिक लोकसत्य समाया हुआ है। ये सूक्तियाँ समाज में शाश्वत तथ्य के रूप में प्रचलित हैं। अत्यन्त छोटी होने पर भी इन्हें प्रमाण के रूप में मान्यता प्राप्त है। किसी अवसर विशेष पर कही गई सूक्ति के अनन्तर अन्य कुछ भी कहना अपेक्षित नहीं माना जाता है।]

1. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
2. अनभ्यासे विषं विद्या।
3. अति सर्वत्र वर्जयेत्।
4. संशयात्मा विनश्यति।
5. कः परः प्रियवादिनाम्।
6. उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
7. स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते।
8. अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।
9. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

शब्दार्थाः

आद्यम् – प्रथम, पहला
अनभ्यासे – अभ्यास न करने पर
संशयात्मा – (निरन्तर) सन्देह करने वाला
परः – पराया, शत्रु
उदारचरितानाम् – उदार हृदय व्यक्तियों के, श्रेष्ठ जनों के

वसुधैव	–	वसुधा + एव – धरती ही
कुटुम्बकम्	–	परिवार
मूर्ध्नि	–	सबसे ऊपर, शिर पर
पथ्यस्य	–	कल्याणकारी का
प्रतिकूलानि	–	विपरीत
परेषाम्	–	दूसरों के लिए
परवशम्	–	दूसरे के अधीन
आत्मवशम्	–	अपने अधीन

अभ्यासः

मौखिकः

1. पाठगतसूक्तिषु पञ्चसूक्तीः कण्ठस्थीकृत्य कक्षायां श्रावयत।

लिखितः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –
   (क) आद्यं धर्मसाधनं किम् अस्ति?
   (ख) कः विनश्यति?
   (ग) कस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः?
   (घ) किं दुःखम्?
   (ङ) परेषां किं न समाचरेत्?
3. सन्धिं संयोगं वा कुरुत –
   (क) शरीरम् + आद्यम्
   (ख) संशय + आत्मा
   (ग) वसुधा + एव
   (घ) सर्वम् + आत्मवशम्
   (ङ) सम् + आचरेत्
4. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत –
   (क) अमृतम्
   (ख) कटुवादिनः
   (ग) अनुदारचरितानाम्
   (घ) सुलभः

(ङ) अनुकूलानि
(च) दुःखम्
(छ) अभ्यासः

5. **संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत –**
(क) विद्या (ख) वसुधा (ग) समाचरेत् (घ) परवशं (ङ) स्वभावः

6. **यथायोग्यं संयोजयत –**

(क) अति सर्वत्र	सर्वमात्मवशं सुखम्।
(ख) कः परः	वसुधैवकुटुम्बकम्।
(ग) सर्वं परवशं दुःखं	परेषां न समाचरेत्।
(घ) संशयात्मा	वर्जयेत्।
(ङ) उदारचरितानां तु	खलु धर्मसाधनम्।
(च) आत्मनः प्रतिकूलानि	विनश्यति।
(छ) शरीमाद्यं	प्रियवादिनाम्।

योग्यता-विस्तार

भाव-विस्तार

सूक्तियाँ संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं के अन्तर्गत आए हुए श्लोकों का ही अंश हैं; यथा– अधोलिखित श्लोक महाकवि कालिदास के कुमारसम्भव से उद्धृत है –

(क) **अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं, जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते।**
अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे, शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्॥
इस श्लोक का चुर्तथ चरण "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" सूक्ति है।

इसी प्रकार निम्नलिखित श्लोक [जो पंचतन्त्र से संकलित है]

(ख) **कोऽतिभारः समर्थानाम् किं दूरं व्यवसायिनाम्।**
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥
के चारों चरण सूक्तियाँ हैं।

(ग) **अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्॥
इस श्लोक की दूसरी पंक्ति सूक्ति है।

'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सूक्ति 'चाणक्यनीति' से उद्धृत है। जो इस प्रकार है –

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।
अतिदानात् बलिर्बद्धो अति सर्वत्र वर्जयेत्॥
चाणक्यनीति 3/12

शब्दकोश:

अकूर्दत् – (कूर्द् धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) कूद गया।
अचिरादेव – जल्दी ही।
अधिगतवान् – (अधि उप. + गम् धातु, क्तवतु प्रत्यय) प्राप्त किया/जान गया
अधीतवान् – (अधि उप., इण् धातु + क्तवतु प्रत्यय, पुं., प्र.एकव.) अध्ययन किया।
अनुमंस्यसे – (अनु उप. + मन् धातु, लृट् लकार, म.पु. एकव.) अनुमति दोगी।
अनुव्रता – आज्ञाकारिणी।
अनुकर्तुम् – अनुसरण करने के लिए।
अनृतम् – झूठ।
अन्तःपुरम् – जहाँ रानियों का निवास होता है।
अन्तरात्मनि – (अन्तः + आत्मन्, हलन्त शब्द) अन्तरात्मा में।
अन्तर्हितौ – गायब हो गए।
अपायः – विघ्न, बाधा।
अभूः – हुए हो।
अम्भसा – (अम्भस्, तृतीया एकवचन) जल से।
अलङ्कृतः – (अलम् + कृ धातु + क्त प्रत्यय) सुशोभित, सजा हुआ।
अवकरैः – कूड़े कचरों द्वारा।
अवदानम् – योगदान।
अवलोकयन् – (अव उप०, लुक् धातु, शतृ प्रत्यय) देखता हुआ।
अविचार्य – (न विचार्य इति, नञ् तत्पुरुष समास) विचार न करके / बिना विचारे।
अन्वसरत् – (अनु उप० + सृ धातु, लङ् लकार, प्र०पु०, एकवचन) अनुसरण किया।
अपाययत् – (पा धातु, णिच् प्र०, लङ् लकार, प्र० पु०, एकवचन) पिलाया।
अमात्यः – मंत्री, सचिव।
अवध्याः – (न वध्याः इति, नञ् तत्पुरुष समास) वध के अयोग्य।

अन्विष्यन्ते – ढूंढा जाता है।

अशिक्षिताः – (न शिक्षिता इति, नञ् तत्पुरुष समास) जिन्होंने शिक्षा प्राप्त नहीं की।

अस्मिन्नन्तरे – (अस्मिन्+अन्तरे) इसी बीच।

असु – प्राण।

अहर्निशम् – (अहः + निशम्) दिन-रात।

आकर्ण्य – (आ उपसर्ग + कर्ण् धातु, ल्यप् प्रत्यय) सुनकर।

आकारयत् – बुलाया।

आक्रोशत् – चिल्लाया।

आगत्य – (आ उपसर्ग + गम् धातु + ल्यप् प्रत्यय) आकर।

आद्यम् – सर्वप्रथम।

आदातुम् – (आ उपसर्ग + दा धातु + तुमुन् प्रत्यय) लेने के लिए।

आदीप्य – (आ उपसर्ग + दिप् धातु + ल्यप् प्रत्यय) जलाकर।

आनीतः – (आ उपसर्ग + नी धातु + क्त प्रत्यय) लाया गया।

आपन्नः – (आ + पद् धातु + क्त प्रत्यय) युक्त।

आरुह्य – (आ + रुह् धातु + ल्यप् प्रत्यय) चढ़कर।

आह – कहा।

आहूतः – (आ उपसर्ग + ह्वे धातु + क्त प्रत्यय) बुलाया गया।

उक्त्वा – (वच् धातु क्त्वा प्रत्यय) कहकर।

उत्थाय – (उत उपसर्ग + स्था धातु, ल्यप् प्रत्यय) उठकर।

उन्मीलितम् – खोल दिया गया।

उपगता – (उप उपसर्ग + गम् धातु + क्त प्रत्यय, स्त्री०) प्राप्त किया।

उपगम्य – (उप उपसर्ग + गम् धातु + ल्यप् प्रत्यय) पास जाकर।

उपजातनवीनप्राणाम् – जिसमें जीवनसंचार हो चुका है, उसको।

उपदिष्टवान् – (उप उपसर्ग, दिश् धातु, क्तवतु प्रत्यय, पुं०, प्र०एकव.) उपदेश दिया।

उपहासभूमिः – मजाक का पात्र।

उपेहि – (उप + इण्, लोट् लकार, म०पु०, एकव.) पास जाओ।

ऊर्जसः – (ऊर्जस् हलन्त शब्द, षष्ठी एकव.) ऊर्जा का।

करम् – कैसे।

करवालं – तलवार को।

कवोष्णम् – कुछ-कुछ गरम।

कश्चित् – (कः + चित् प्रत्यय) कोई।

क्षयिणी	–	लगातार कम होती जाने वाली।
कांक्षिणा	–	इच्छुक द्वारा, चाहने वाले के द्वारा।
काननम्	–	वन, जंगल।
कार्यते	–	(कृ धातु, णिच् प्रत्यय लट् लकार, प्र०पु० एकव.) करवाया जाता है।
किंप्रभुः	–	बुरा स्वामी।
किंस्वित्	–	(अव्यय शब्द) क्या।
किंसुहृत्	–	बुरा मित्र।
क्रियते	–	(कृ धातु, कर्मवाच्य प्रयोग, लट् लकार, प्र०पु०, एकव.) किया जाता है।
कृतवान्	–	(कृ धातु, क्तवतु प्रत्यय, पुं०, प्रथमा एकव.) किया।
केदाराः	–	खेत।
केशरीणाम्	–	सिंहों का।
कोपेन-क्रोधेण	–	गुस्से से।
खात्	–	आकाश से।
गृहीतः	–	(ग्रह् धातु, क्त प्रत्यय) पकड़ा हुआ।
ग्राह्या	–	(ग्रह् धातु + यत् प्रत्यय स्त्री०) ग्रहण करनी चाहिए।
गुर्वी	–	(गुरु शब्द का स्त्रीलिंग रूप) बड़ी।
घर्मोष्मणा	–	तेज धूप की गर्मी से।
चक्षु	–	नेत्र।
चीत्कारेण	–	चिल्लाने से।
चेतसि	–	(चेतस्, हलन्त नपुं० शब्द) मन में।
जनयिता	–	(जनयितृ शब्द, ऋकारान्त, प्रथमा एकवचन) उत्पन्न करने वाला।
जागरयसि	–	(जागृ (जागलृ) धातु + णिच् प्र०, लट्, म०पु०, एकव.) जगाते हो।
ज्ञातिम्	–	जाति।
तक्रम्	–	छाछ या मट्ठा।
तत्रत्यैः	–	वहाँ के लोगों द्वारा।
तत्रभवान्	–	आदर के लिए प्रयोग किया जाता है जो व्यक्ति हमारे समीप उपस्थित है उसे अत्रभवान् और जो समीप उपस्थित नहीं है उसे तत्रभवान्।
त्वचः	–	(त्वच् शब्द, षष्ठी एकव.) त्वचा के
ताडयित्वा	–	(ताड् धातु, क्त्वा प्रत्यय) पिटाई करके।
ताडितः	–	(ताड् धातु, क्त प्रत्यय) पीटा गया।
तासाम्	–	(तत् शब्द (स्त्री.), षष्ठी बहुवचन) उनकी।

तोयम् – जलम्।
दग्धाः – (दह् धातु + क्त प्रत्यय, प्रथमा बहुव.) जल गए।
दिदृक्षया – (द्रष्टुम् इच्छया) देखने की इच्छा से।
दिनस्य परार्द्धः – दिन में दोपहर से शाम तक का समय।
दिनस्य पूर्वार्द्धः – दिन में दोपहर तक का समय।
दूरीकृत्य – दूर करके।
द्रव्याणि – धन सम्पत्ति को।
दोग्धुम् – दुह् धातु + तुमुन् प्रत्यय दोहने के लिए।
धत्ते – धारण करता है।
धर्षितः – बलपूर्वक पकड़ा गया या पराजित।
धान्यानि – अन्नों को।
नक्रेण – मगरमच्छ के द्वारा।
नामाभिधत्ते – नाम से पुकार रहे हो।
नितराम् – अत्यन्त।
निद्राभङ्गकोपात् – नीद में विघ्न पड़ने के क्रोध से।
निन्दितः – (निन्द् धातु, क्त प्र०) जिसकी निन्दा की गई हो।
निमज्जतः – (नि उपसर्ग, मज्ज् धातु, लट् लकार, प्र०पु०, द्विव.) (दो) डुबकी लगाते हैं।
नियोगस्य – (नियोग पुं० प्र० वि०ए०व०) कर्त्तव्य की।
निरगच्छत् – (निर् उपसर्ग + गम् धातु, लङ् लकार, प्र०पु०, एकव.) निकल गया।
निरूप्य – ध्यान से देखकर।
निर्गत्य – (निर् उपसर्ग, गम् धातु, ल्यप् प्रत्यय) निकल कर।
निवारितः – दूर किया गया।
निष्क्रम्य – (निः उपसर्ग, क्रम् धातु, ल्यप् प्रत्यय) निकलकर।
निष्कृतिः – (निः + कृ + क्तिन्) निस्तार।
निःसरति – निकलता है।
निहन्यते – (नि उप०, हन् धातु, कर्मवाच्य, लट् ल०,प्र०पु०, एकव.) मारा जाता है।
नृणाम् – (नृ शब्द, षष्ठी बहुवचन, नराणाम् इत्यर्थे) मनुष्यों की।
पञ्चोपचारैः – पूजा की पांच सामग्री (गंध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य) द्वारा।
पथ्यस्य – लाभदायक।
पराजेष्यते – (परा उप०+जि धातु(कर्मवाच्य), लट् ल०, प्र०पु०,एकव.) पराजित करेगा।

– वापस लौटा।

– अच्छी तरह से जानकर।

– (परि उपसर्ग, तुष् धातु + घञ् प्रत्यय) सन्तुष्टि।

ते – (परि+त्यज्+लट्, प्र०पु०, बहुवचन) छोड़ देते हैं, छोड़ते हैं।

न् – (परि उपसर्ग, धृ धातु, क्तवतु प्रत्यय, प्र०, पु०, एकव.) धारण किया।

[– (परि उप०, भ्रश् धातु+क्त प्रत्यय) गिर गया/छूट गया।

: – (परि उप०+ हृ धातु + तव्यत् प्र०) त्याग कर देना चाहिए।

– (परि उप० + अट् धातु + शतृ प्र०, पुं, प्रथमा एकव.) भ्रमण करता हुआ।

नि – विपरीत।

– (प्रति उप० + ज्ञा धातु + ल्यप् प्रत्यय) प्रतिज्ञा करके।

नः – (प्रतिवेशिन्, हलन्त पुं०, षष्ठी एकव.) पड़ोसी के।

[: – (प्रति उप० + सिध् धातु +क्त प्र०) जिसको रोका गया हो।

– (प्र उप० + बुध् धातु + क्त प्र०) जागा हुआ।

ानाः – प्रताड़ित किये जाते हुए।

– बहुत अधिक।

यम् – (प्र उप० + यत् धातु + तव्यत् प्रत्यय) प्रयत्न करना चाहिए।

– (प्र + युज्, आत्मनेपद, लट् + प्र०पु०ब०ब.) प्रयोग की जाती है।

– (प्र उप० + लुभ् धातु + णिच् प्रत्यय + ल्यप् प्रत्यय) लुभाकर।

– (प्र उप० + वस् धातु + शतृ प्र०, पुं०, षष्ठी एकव.) विदेश में रहने वाले का।

– (प्र उप० + वह् धातु शतृ प्र०, स्त्रीलिंग) बहती हुई।

– (प्र उप० + विश् धातु + क्त प्रत्यय) प्रवेश किया।

मे – (प्र उप०+विश् धातु+णिच् प्र०, लट् ल०, उ०पु०, एकव.) प्रवेश करवाऊँगा।

भ्याम् – पिछले पैरों से।

[– पापी।

– (पा धातु+प्रेरणार्थक णिच् प्र०, लट् ल०, प्र०पु०,एकव.) पिलाता है/ पिलाती है।

– (प्राक् + एक) पहले ही।

– (प्राज्ञ + इतरैः) बुद्धिमानों के विपरीत लोगों से।

– (प्र उपसर्ग+आप् धातु+णिच् प्र०+क्त प्र०, प्र० बहुव.) पहुँचा दिये गये।

– (प्र० + आप्, आ० प० लृट्, उ० पु०, एकव.) प्राप्त करूंगा।

प्रारभ्यते	–	(प्र उप०+आ उप०+रभ् धातु, कर्मवाच्य प्रयोग,लट् ल०, प्र०पु०, एकव.) प्रारंभ किया जाता है।
पाठयसि	–	(पठ् धातु + णिच् प्र०, लट् लकार, म०पु०, एकव.) पढ़ाती हो।
पात्रहस्तः	–	(पात्रम् हस्ते यस्य सः (बहुब्रीहि समास) जिसके हाथ में पात्र है।
पुरा	–	(अव्यय) प्राचीन काल में।
पौरजनाः	–	नगर के निवासी।
बर्बर	–	कठोर हृदय, दुष्ट।
भागिनेयः	–	बहिन का पुत्र, भानजा।
भणितः	–	(भण् धातु, क्त प्रत्यय) कहा गया है।
भाजने	–	वर्तन में।
भिषक्	–	वैद्य।
भुवि	–	पृथ्वी पर।
मन्दादरः	–	मन्दः आदरे यः सः (बहुब्रीहि समास) कम आदर करने वाला।
मुक्ता	–	मोती।
मूर्ध्नि	–	(मूर्धन्, सप्तमी एकव.) सिर पर।
मोहयित्वा	–	(मुह् + णिच् + क्त्वा) बेहोश करके।
यथेष्टम्	–	(यथा + इष्टम्) इच्छानुसार।
यन्त्रविद्याधराणाम्	–	(यन्त्रविद्यां धारयन्ति ये तेषां) यन्त्रविद्या जानने वाले (इंजीनियर)।
योजयितुम्	–	(युज् धातु + णिच् प्र० + तुमुन् प्रत्यय) नियुक्त करने के लिए।
रजकः	–	(रजक + पुं०, प्र०वि०ए०व०) धोबी।
लगुडेन	–	डंडे से।
लङ्घयिष्यति	–	आक्रमण करेगी।
लघ्वी	–	(लघु शब्द का स्त्रीलिंग प्रयोग) छोटी।
लम्बसरः	–	जिसकी ग्रीवा के बाल लम्बे हों।
लाङ्गूलम्	–	पूँछ।
वयसि	–	(वयस् (नपुं०) सप्तमी एकव.) उम्र में।
वर्तुलाकार	–	गोलाकार।
वर्षशतैरपि	–	(वर्षशतैः + अपि) सैकड़ों वर्षों तक भी।
वसतिः	–	निवास या ग्राम।
वसत्याम्	–	(वसति इकारान्त स्त्री० शब्द, सप्तमी एकव.) बस्ती में।
व्याकुलयसि	–	व्याकुल कर रही हो।

व्यापार: – कार्य।
विक्रिया – परिवर्तन, विकृत रूप।
विक्रीय – (वि उपसर्ग + क्री धातु + ल्यप् प्रत्यय) बेचकर।
विचिकित्सिता – उपचार किये जाने पर।
विधातुम् – वि + धा + तुमुन्।
विनिपात्यते – (वि उप० + नि उप० + पत् धातु + णिच् प्र०, (कर्मवाच्य प्रयोग), लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकव.) गिराया जाता है।
विपन्नम् – (वि + पत् + क्त) दु:खी।
विपश्चिज्जनानामृ – विद्वान् लोगों का/की।
विभाव्यते – जानी जाती है, महसूस की जाती है।
विरक्त: – वि उपसर्ग + रञ्ज् धातु + क्त प्रत्यय – वैराग्य प्राप्त हो गया है जिसको।
विरमन्ति – (वि+रम्+लट्, प्र०पु०, बहुव.) रुक जाते हैं।
विवृणोति – खोलता है।
विषाणयो: – दोनों सींगों में।
विषीदति – दु:खी होता है।
विसृज्यताम् – छोड़ दीजिए।
विहाय – (वि उपसर्ग + हा धातु + ल्यप्) छोड़ कर।
वीक्ष्य – (वि उपसर्ग + ईक्ष् + ल्यप् प्रत्यय) देखकर।
वृक्षावलि: – वृक्षों की पंक्ति।
वृत्ति: – आजीविका।
वृद्धिमती – क्रम से बढ़ोतरी को प्राप्त करती हुई।
शफर: – मछली।
शिखीनां – मोरों का।
श्रेष्ठिन: – (श्रेष्ठिन् शब्द, षष्ठी, एकवचन) सेठ के।
श्लाघ्य: – प्रशंसा के योग्य।
श्लाघा – गर्व।
सञ्जातम् – (सम् उपसर्ग, जन् धातु, क्त प्रत्यय) हो गया।
संत्रस्ता: – (सम् उपसर्ग + त्रस् धातु : क्त प्रत्यय, प्रथमा बहुव.) परेशान (दु:खी)।
सत्त्वरम् – (अव्यय) शीघ्र।
सन्नपि – (सन् + अपि) होते हुए भी।
सपदि – शीघ्र ही।

समर्पय – सम् उपसर्ग, अर्प धातु, लोट् लकार, म०पु०, एक० – समर्पित कर दो।
समासेन – (समास + तृ + एकव.) संक्षिप्त रूप से।
सम्भाषयेत् – (सम् उप. + भाष् धातु, णिच् प्रत्यय, विधिलिंग, प्र०पु०, एकव.) कहलवाए।
समुत्पन्नः – (सम् उपसर्ग + उत् उपसर्ग + पद् धातु + क्त प्रत्यय) उत्पन्न हुआ।
संपत्स्यते – (कर्मवाच्य प्रयोग, सम् उपसर्ग + पद् धातु, कर्मवाच्य, लट् लकार, प्र०पु०, एकव.) सम्पन्न किया जायेगा।
सम्पादितवान् – (सम् उपसर्ग + पद् धातु + णिच् प्र०, क्तवतु प्र०, पुं०, प्रथमा, एकव.) पूरा किया।
सम्पूज्य – (सम् उपसर्ग + पूज् धातु + ल्यप् प्रत्यय) पूजा करके।
सम्भवे – उत्पत्ति में।
समाचरेत् – (सम् उपसर्ग + आ उपसर्ग + चर् धातु, विधिलिंग, प्र.पु., एकव.) आचरण करे।
समाप्यते – (सम् उपसर्ग + आप् धातु, कर्मवाच्य प्रयोग, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकव.) पूरा हो जाता है, समाप्त हो जाता है।
सम्यक् – भली प्रकार से।
सवित्रे – सूर्य के लिए।
सहेते – (सह् (आत्मनेपद) धातु, लट् लकार, प्र०पु०, द्विव0) (दो) सहन करते हैं।
स्थास्यति – (स्था धातु, लृट् लकार, प्र०पु०, एकव.) रहेगी/रहेगा।
स्ववैद्यौ – स्वर्ग के दो वैद्य अश्विनीकुमार।
स्वेदधाराः – पसीने की धाराएं।
स्वेदविन्दवः – पसीने की बूँदें।
सायकैः – बाणों द्वारा।
सूचिभेद्ये – घने।
हर्तुम् – (हृ धातु, तुमुन् प्रत्यय) हरने के लिए, चुराने के लिए।
हलाहलम् – विष।
होराद्वयम् – दो घण्टा (समय)।